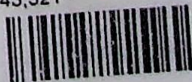
दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

There were 88 patients with verified gastric cancer including 12 cases of gastric cancer. 265 patients with gastric or prepyloric ulcer. 149 pa-
s with gastritis including 84 cases of atrofic gastritis, and 410 patients
no gastric lesions (146 previously operated).





गारफ़ील्ड

अर्थात्

जेम्स एबरम् गारफ़ील्ड
का
जीवन-चरित

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, प्रयाग
१९१७

द्वितीय बार]



Printed and published by Apurva Krishna Bose,
at the Indian Press, Allahabad.

भूमिका

ईश्वर ने संसार भर के मनुष्यों को प्रायः समान बुद्धि, बल आदि सद्गुण दिये हैं। उन्हीं सद्गुणों का जो मनुष्य सुगमता से व्यवहार करता है वही अन्त में विजयी होकर प्रतिष्ठा लाभ करता है। जो उन गुणों को काहिली और बेपरवाही से खोता है वही अन्त में गली गली ठोकर खाता है। ऐसे ठोकर खाने वाले प्रायः अपने भाग्य और अपनी अवस्था को दोष देकर अपने को बचाते हैं, परन्तु मैं समझता हूँ कि बेपरवाही और काहिली ही उनके कष्ट का मूल कारण है। यदि ये लोग अपने भविष्य के विषय में दिन में एक बार भी सोचते और अपने कर्त्तव्यों को पूरी तौर से पालन करते रहते तो कदाचित् उनका जीवन ऐसा दुःखमय न होता जैसा ऊपर लिखा गया है। बहुत से आदमी प्रायः ऐसा कहते हैं कि ग़रीब के घर जन्म लेने के कारण हमारा लिखना-पढ़ना नहीं हुआ। ऐसा कहना भी मानो अपनी दुर्बलता का परिचय देना है। इस बात की पुष्टि करने के लिए जेम्स गारफ़ील्ड की जीवनी आपके सामने रक्खी जाती है।

जेम्स गारफ़ील्ड का जन्म एक बहुत ही निर्धन किसान के घर हुआ था, परन्तु उसने अपने परिश्रम, अध्यवसाय और

दृढ़ संकल्प के कारण संसार में वह काम कर दिखाया, जिसका वर्णन इतिहास के पन्नों में चिरकाल तक बना रहेगा। अति दरिद्र के घर जन्म लेकर, धीरे धीरे उन्नति करते करते अन्त में युनाइटेड स्टेट्स का प्रेसीडेंट (जिसका पद दुनिया भर के बड़े बड़े महाराजाओं से किसी प्रकार कम नहीं है) बन जाना जेम्स गारफ़ील्ड के लिए कुछ कम सौभाग्य की बात न थी।

उन्नति करने वाले के लिए एक बात को याद रखना अति आवश्यक है। वह यह कि जब उसमें भला बुरा समझने की शक्ति आ जावे तब वह अच्छी तरह सोच विचार कर इस बात को सिद्ध कर ले कि उसके जीवन का मुख्य उद्देश क्या है ? वह हमेशा उस उद्देश को सिद्ध करने में लगा रहे और जब तक वह सिद्ध न हो जाय तब तक मानों उसको "शरीर-पतन वा मन्त्र ही साधन" का व्रत धारण किये रहना चाहिए। तब उसका संकल्प सिद्ध हो सकता है, और तभी वह उन्नति कर सकता है। जेम्स गारफ़ील्ड ने ग्रेजुएट (Graduate) बनने का संकल्प किया था। उस संकल्प को सिद्ध करने के लिए उन्होंने कितना कष्ट सहा था—यह इस पुस्तक के पाठ करने से मालूम होजायगा।

इस स्थान पर इस बात का उल्लेख करना कदाचित् अनुचित न होगा कि यह पुस्तक मिस्टर विलियम एम० थेयर

(William M. Thayer) की "From Log Cabin to White House" नामक पुस्तक के आशय पर लिखी गई है।

भारत के भावी कर्मवीर नवयुवकों को पढ़ने के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। यदि इस पुस्तक से हमारे देश के बालकों का कुछ भी उपकार हुआ तो हम इतने से ही अपना श्रम सफल समझेंगे।

यदि लिखने में कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से निवेदन है कि वे उसे क्षमाप्रदानपूर्वक सुधार कर पढ़ने की कृपा करें।

प्रकाशक



गारफ़ील्ड

पहला परिच्छेद

देखने में आता है कि इस संसार में सब लोग उन्नति करने ही में लगे हैं। कोई तो किसी विषय में उन्नति करता है और कोई किसी में। छोटे छोटे पेड़, पौधे, कीट, पतङ्ग से लेकर मनुष्य तक को देखिए तो यही मालूम होगा कि मानों ईश्वर ने इन सबको उन्नति करने ही के लिए पैदा किया है। पेड़ को देखिए। वह आरम्भ-अवस्था में बीजरूप ही रहता है। फिर मिट्टी, धूप और पानी का संसर्ग पाने से धीरे धीरे वह बढ़ने लगता है। बढ़ते बढ़ते उसकी यह दशा हो जाती है कि वह फल-फूल देने लगता है। उसके फूलों की सुगंध से समस्त संसार सुवासित हो जाता है और उसके फल खा कर जीव प्रसन्न होते हैं। फिर उसी पेड़ की शाखा-प्रशाखायें जो निकलती रहती हैं वे गर्मी के दिनों में सूर्य्य के प्रचण्ड उत्ताप को

अपनी ही सुविस्तृत छाती पर रोक लेती हैं और थके मांदे पथिकों को अपनी शीतल छाया तले (विश्राम लेने के लिए) आश्रय देती हैं। ध्यान देने का विषय है कि इन बुद्धिहीन जड़ पदार्थों में परोपकार और सहानुभूति की कैसी अनोखी चाह है।

फिर कीट-पतङ्ग आदि जन्तुओं की ओर ध्यान दीजिए तो यही देखने में आता है कि वे भी किसी न किसी प्रकार से संसार को लाभ पहुँचाने ही में लगे हैं। कोई तो हल जोतने में उपयोगी हैं, कोई दूध देने में, कोई सवारी खींचने में और कोई अपनी मीठी आवाज़ ही सुना कर दूसरों के चित्त को प्रसन्न करते हैं।

निदान इससे यही सिद्ध होता है कि ये लोग सर्वदा संसार को फ़ायदा पहुँचाने ही में तत्पर हैं। और, संसार को फ़ायदा पहुँचाना ही,—संसार को सुखी रखना ही—मानों उन्नति का मुख्य उद्देश है।

यह तो बुद्धिहीन जीवों की बात हुई। अब यदि मनुष्य, जो बुद्धिमान्, विचारवान्, और सब जीवों में श्रेष्ठ गिना जाता है, उन्नति करे तो आश्चर्य ही क्या। परन्तु उन्नति करने के पहले यह जानना चाहिए कि उन्नति करने के लिए किन किन गुणों के होने की आवश्यकता है। उन्नति करने वाले में असीम उत्साह, प्रचण्ड साहस और दृढ़ संकल्प आदि गुणों का रहना अति आवश्यक है। यदि मनुष्य में ये गुण वर्तमान हों तो वह अति दीन दरिद्र अवस्था से भी बड़ी उच्च पदवी को प्राप्त कर सकता

है । यदि संसार के बड़े बड़े इतिहास ध्यान से पढ़े जायँ तो देखने में आवेगा कि सहस्रों मनुष्य इन्हीं उत्साह, साहस और संकल्प के कारण इतने बड़े हो गये हैं कि यद्यपि उनको मरे सैकड़ों हज़ारों वर्ष बीत चुके तथापि उनकी कीर्ति और उनका नाम अभी तक वर्तमान् है और जब लों संसार रहेगा तब लों उनकी अक्षय कीर्ति का इतिहास अटल बना रहेगा । अब मैं पाठकों के सामने एक महापुरुष की जीवनी उपस्थित करता हूँ जिसके पढ़ने से लोगों को मालूम हो जायगा कि उद्यमशील पुरुष इस संसार में क्या नहीं कर सकता ।

अमरीका का नाम तो तुमने सुना ही होगा । यह एक देश है जो कि शान्त महासागर के पूरब की ओर बड़ी दूर है । चार सौ वर्ष पहले कोई इसका नाम तक नहीं जानता था—कोई नहीं जानता था कि भूमण्डल पर ऐसा महा देश कोई है या नहीं । सन् १४९२ ईसवी में जिनोआ नगर का निवासी कोलम्बस नामक एक साहसी पुरुष एटलाण्टिक महासागर होकर भारतवर्ष का मार्ग ढूँढ़ता ढूँढ़ता एक द्वीप के पास आ पहुँचा । इस द्वीप के समीप आने पर उसको मालूम हुआ कि इस द्वीप के निकट अवश्य कोई देश होगा—यह सोचकर उसने जहाज़ के कप्तान को और भी पश्चिम की ओर जाने की आज्ञा दी । जाते जाते उसने फूल-पत्तों और लताओं से मण्डित एक देश देखा । उसने भूगोल अथवा इतिहास में कभी उस देश का विवरण नहीं पढ़ा था, इसलिए उसको देखने का बड़ा कुतूहल हुआ ।

जहाँ तक हो सका उसने भलीभाँति देख-भाल की। अन्त में लौटकर उसने अपने देशवासियों तथा योरप-निवासियों को इसका पूरा हाल सुनाया। योरप वाले वहाँ गये और उस देश को उन्होंने बसाया और उसका नाम अमरीका रक्खा। इसी अमरीका के उत्तर प्रान्त के युक्त प्रदेश नामी देश में ओहियो नाम का एक खण्ड है। खेती के लिए यहाँ की ज़मीन और स्थानों से अच्छी समझी जाती है। जब अमरीका-निवासियों को मालूम हुआ कि ओहियो नामी खण्ड में खेती का काम अच्छी तरह हो सकता है तब दूर दूर के किसान वहाँ जाने और बसने लगे।

परन्तु जिस समय का हाल लिखा जाता है उस समय वहाँ की आबादी बहुत थोड़ी थी। जो थोड़े किसान वहाँ थे उनमें से एबरम गारफ़ील्ड भी एक था। उसके दो पुत्र और दो कन्यायें थीं। वह लिखा-पढ़ा तो बहुत न था परन्तु था बड़ा बुद्धिमान, साहसी और उद्यमशील। उसने अपनी बुद्धि और बल के कारण ओहियो से १७ मील दूर पर आरेंज नामी एक खण्ड में ६०—७० बीघा ज़मीन सस्ते दाम पर ख़रीदी थी और उसी में खेती-बारी किया करता था। आरेंज में आकर उसने लकड़ी और फूस का एक मकान रहने के लिए बना लिया था। जिस समय वह यहाँ आया उस समय उसके एक पुत्र और दो कन्यायें थीं। यही आरेंज में फूस की कुटी में इनका छोटा लड़का १९ नवम्बर सन् १८३१ ईसवी को पैदा हुआ। उस लड़के का नाम जेम्स गारफ़ील्ड था। यही जेम्स गारफ़ील्ड इस पुस्तक का

नायक है । इनकी माता एलीज़ा गारफ़ील्ड अपने धर्मशास्त्र में बड़ी पण्डिता थीं। इनके गुणों का हाल लिखने में प्रायः आधी पुस्तक भर जायगी, इस कारण केवल इतना ही कहना काफ़ी होगा कि यह सर्वगुण-सम्पन्ना नारी थीं और वास्तव में माता होने के योग्य थीं।

ये दम्पति अपने पुत्र-कन्याओं को लेकर ग़रीबी हालत में किसी प्रकार अपने दिन काटा करते थे। खेत में जो थोड़ा अनाज उपजता उसी में अपने को सन्तुष्ट रखते थे। इनको ज्यादा पाने की अभिलाषा ही न होती थी, क्योंकि उस जगह सभ्यता इतनी बढ़ी-चढ़ी न थी जैसी कि शहरों में थी। शहरी लोगों की अपेक्षा ये लोग किसी किसी विषय में अधिक सुखी थे। ऐसी सुख-दुःख की अवस्था में ये अपना जीवन व्यतीत करते रहे कि अकस्मात् एक दिन सुनने में आया कि लोग अपना अपना मकान छोड़ कर भाग रहे हैं क्योंकि जंगल में आग लग गई थी और बस्ती की ओर चली आती थी। एबरम गारफ़ील्ड के लिए अपने मकान और सामान को आग के मुँह में छोड़ कर भाग जाना बहुत कठिन काम था क्योंकि उन्होंने उस मकान और सामान को बड़े परिश्रम से इकट्ठा किया था। उनको यकायक छोड़ जाना बहुत दुःखदायक था। जब उन्होंने देखा कि आग अपने सामने की सारी चीज़ों को निगलतो हुई उन्हीं की झोपड़ी की ओर चली आरही है तब उन्होंने मनही मन निश्चय कर लिया कि जैसे बने इस प्रचण्ड शत्रु का नाश करना ही चाहिए। यह सोच कर वे अपनी स्त्री और पुत्र-कन्या को साथ

लेकर वहाँ गये। बड़ी कन्या की उम्र १३ वर्ष की और पुत्र की ११ वर्ष की थी। इन लोगों के वहाँ पहुँचते ही उस प्रचण्ड शत्रु से घोर युद्ध आरम्भ हो गया। बड़ी देर तक युद्ध होता रहा। अग्निदेव अपने संसार को नाश करने हारे फूत्कार से चारों ओर सब कुछ दग्ध कर रहे थे, और पवन देव भी इनकी सहायता करते रहे। दोनों प्रबल शक्तियों के संयोग से अग्नि-शिखायें ऐसा भयङ्कर रूप धारण कर रही थीं कि ऐसा प्रतीत होता था, मानो महाप्रलय उपस्थित हो गया है। ऐसा अनुमान होता था कि ये चारों प्राणी पल भर में राख हो जायँगे। ये लोग साहस पर कमर बाँधे और ईश्वर पर अटल विश्वास किये हुए उस आग को बुझाने का यत्न कर रहे थे और पृथ्वी को दूर तक खोदने, वृत्तादिकों को काटने और आग का बढ़ना रोकने में लगे थे। वे भगवान् से प्रार्थना करते रहे कि किसी प्रकार इस विपत्ति से रक्षा करें। यह बात सदा से सत्य मानी गई है और चिरकाल तक मानी जायगी कि यदि कोई मनुष्य अन्तःकरण से ईश्वर की प्रार्थना करे तो उसकी प्रार्थना सुनीही जाती है। भगवान् की क्या ही विचित्र लीला है। बड़े बड़े ऋषि-मुनि भी इस लीला के गूढ़ तत्त्व को नहीं समझ सके। देखते ही देखते उस मेघशून्य आकाश में कहाँ से काले बादलों ने आकर सूर्य को ढक लिया; अँधियारी छा गई और पानी बरसने लगा। पानी के बरसने से आग बुझ गई, धरती शान्त हुई और ये लोग घर लौट आये।

जुलाई के महीने में सूर्य और आग के सामने बहुत देर तक कठिन परिश्रम करने के कारण एबरम गारफ़ील्ड अत्यन्त थक गये थे। मारे पसीने के उनका सारा शरीर भीग गया था। आँख, कान, नाक, मुँह से आग की चिनगारियाँ छूट रही थीं। इस कारण उन्होंने बाहर खुले मैदान में एक चारपाई डाल दी और कपड़े उतार कर वे पसीने में डूबे हुए उसी पर लेट गये। बाहर मैदान में मृदु, मन्द पवन बह रहा था। उस वक़्त उनको वह हवा बहुत ही प्यारी मालूम हुई, परन्तु उनको यह न सूझी कि सर्दी गर्मी का असर शरीर पर बैठ जाने से बहुत अनिष्ट होना सम्भव है इस कारण वे वहीं लेट गये। रात को उन्हें मालूम हुआ कि उनके साँस लेने की नाली बन्द हो गई है और उनसे बात नहीं करते बनता। आरेंज के कई मील इधर उधर कोई डाक्टर नहीं रहता था, परन्तु एक पड़ोसी, जो थोड़ा बहुत चिकित्सा का काम किया करता था, बुलवाया गया। उसके आते ही रोगी उसके हाथ सौंप दिया गया। उसने रोगी को पहले ही एक ऐसा पलस्तर दिया कि उसके देते ही उसकी पीड़ा बहुत बढ़ गई और जीने की आशा धीरे धीरे जाती रही। एलीज़ा गारफ़ील्ड ने अपने स्वामी की बड़ी सेवा की, परन्तु उसका सब श्रम व्यर्थ गया। देखते ही देखते प्राण-वायु उस शरीर से निकल गया और घर में रोना-पीटना मच गया। घर के छोटे बड़े सब लोग हृदय-विदारक विलाप से भूमण्डल को कँपा रहे थे, परन्तु १८ महीने का शिशु जेम्स गारफ़ील्ड के

चेहरे पर शोक का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था, क्योंकि शोक अथवा सुख के समझने या प्रकाश करने की उसमें शक्ति ही न थी। वह अपने स्वाभाविक रूप से हँसता खेलता था।

दूसरे दिन सुबह को आस पास के जो थोड़े बहुत पड़ोसी थे वे विधवा एलीज़ा और उसके बच्चों को शान्ति देने के लिए आये और उनकी सहायता से मृतदेह गेहूँ के खेत के एक किनारे गाड़ दिया गया। एबरम गारफ़ील्ड के मर जाने पर यद्यपि उनके परिवार के लोगों को बड़ा ही शोक हुआ परन्तु संसार के नियम के अनुसार ज्यों ज्यों समय बीतता गया त्यों त्यों वह शोक घटने लगा।

इस दुःखदायी घटना के बाद, ५० वर्ष के बीतने पर भी, जब उनकी स्त्री बुढ़िया हो गई थीं तब भी, उस शोक का चिह्न इनके चेहरे से साफ़ झलकता था।

उन जङ्गलों में शीत ऋतु बड़ा ही भयंकर होता है और विशेषतः उस अवस्था में जब कि वह मनुष्य जिस पर भरण-पोषण निर्भर है मृत्यु से अलग कर दिया गया हो तो वह कठोर शीत इतना दुःसह हो जाता है कि वह समझने ही के लायक़ है; वर्णन के नहीं। एक तो भयंकर शीत, दूसरे तन पर कपड़ों का न होना, तिस पर बिना किसी आश्रय के जीवन व्यतीत करना और फिर भूखे बच्चों को आहार देने का सामर्थ्य न होना—ये सब दुखड़े मिल कर बड़े बड़े साहसी पुरुषों के छक्के छुड़ा देते हैं। बेचारी एलीज़ा गारफ़ील्ड तो एक अबला नारी ही थी। उसकी

मानसिक अवस्था कैसी भयानक और शोचनीय थी—यह वर्णनातीत है ।

वह क्या ही भयंकर शीत था । घनी बर्फ़ से सब धरती ढक गई थी । यहाँ तक कि गेहूँ के खेत वाली क़ब्र भी इन बर्फ़ों के तले गड़ गई थी, और तेज़ हवा जो सनसनाती हुई बह रही थी उससे ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वह भी उस मुर्दे के लिए शोक कर रही थी । चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । रात को सिवा हिंसक जन्तुओं की चिल्लाहट के और कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था । इनकी आवाज़ सन्नाटे से मिल कर और भी सन्नाटा पैदा करती थी । लोग यह सोचने लगे थे कि वसन्त ऋतु अब न आवेगा और वह उनसे सदा के लिए बिदा ले गया है । परन्तु बहुत दिनों तक शीत का कष्ट भोग करने के बाद वसन्त-ऋतु फिर आया । फिर बर्फ़ को उसने पिघला दिया । फिर नदी नाले अपने मधुर मधुर गीत गाते गाते बहने लगे और फिर जङ्गल और खेतों के पेड़-पौधे जीवित हो गये । सब जीवित हुए, परन्तु गेहूँ के खेत वाले मृत देह में जीवन-संचार होने की कोई आशा न दीख पड़ी । वह जैसा का तैसा उसी क़ब्र के नीचे ही गड़ा रह गया ।

—

दूसरा परिच्छेद



रफ़ील्ड की विधवा माता के पास रुपया कुछ भी न रह गया था। खेत पर कुछ कर्ज़ा भी हो गया था और गाँव में अनाज की भी बहुत कमी थी, सो ऐसी अवस्था में क्या करना चाहिए—यह सोच कर वह मिस्टर बाइंटन के पास राय लेने गई। मिस्टर बाइंटन इनके बड़े मित्र थे और गारफ़ील्ड से इनसे कुछ नातेदारी भी थी। एबरम के मरने के बाद उनकी विधवा पत्नी प्रायः इनके पास राय लेने जाया करती थी, क्योंकि मिस्टर बाइंटन को छोड़ दूसरा कोई इनकी सहानुभूति करने वाला न था। मि० बाइंटन ने पूरा हाल सुनने के बाद कहा कि आप अपने तमाम खेत को बेच डालिए और उस रुपये से कर्ज़ा चुका दीजिए और बच्चों को लेकर किसी दोस्त के मकान पर चली जाइए। गारफ़ील्ड की विधवा माता ने कहा—"क्या मैं अपने स्वामी को अकेला छोड़ किसी दोस्त के सर पर बोझा बढ़ाऊँगी? ऐसा नहीं हो सकता। मैं अपने स्वामी ही के पास रहूँगी और किसी तरह अपना जीवन व्यतीत करूँगी। जो अनाथों के नाथ, अनाश्रितों के आश्रय हैं

उनकी दृष्टि तो मेरे ऊपर है ही। उनकी आज्ञा बिना पेड़ से एक पत्ता तक नहीं गिर सकता, तो उन्हीं की आज्ञा बिना मैं अपने बच्चों को लेकर अनाहार अनिद्रा में दिन रात काटूँगी—यह भी असम्भव है। हमें विश्वास है कि वे ही हमारे लिए यहीं कोई रास्ता निकाल देंगे।" इसके बाद मि० बाइंटन ने कहा—"यदि समस्त खेत बेचने की तुम्हारी राय न हो तो उसका कुछ थोड़ा सा अंश बेच कर कर्ज़ा चुका दो।" इस बात पर वे सहमत हो गईं, और उस थोड़े अंश को बेचने का भार मि० बाइंटन ही पर रख दिया। मि० बाइंटन ने जब इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तब गारफ़ील्ड की माता उठीं और अपने घर की ओर चलीं। जाते समय रास्ते ही में गिर्जा-घर पड़ता था। उसी गिर्जे में गईं और एकाग्र चित्त से ईश्वर की प्रार्थना करने लगीं। प्रार्थना करते समय मानों उनको दैववाणी हुई कि "तुम किसी विषय की शङ्का न करो। मैं सर्वदा तुम्हारे साथ रहता हूँ। मैं तुम्हें सब विपत्तियों से बचाता रहूँगा"।

प्रार्थना समाप्त होने पर वह गद्‌गद होकर घर लौटीं और टामस को, जो बड़ा बेटा था, जिसकी उम्र प्रायः ११ वर्ष की थी, सारा हाल कह सुनाया। टामस ने सुनते ही बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया—"माता, मैं हल जोत सकता हूँ, बीज बो सकता हूँ, दूध दुह सकता हूँ और भी अनेकों काम कर सकता हूँ।"

इन बातों को सुनते ही माता का जी भर आया और बेटे को छाती से लगा कर उसका मुखचुम्बन करके कहा, "बेटा, तुम्हें

बहुत अधिक परिश्रम करने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल मेरी सहायता करने ही से सब काम अच्छी तरह हो जायगा।"

उस समय दूर दूर प्रान्तों से लोग ओहियो में वास करने के निमित्त आ रहे थे। इस कारण उनको ज़मीन की बड़ी आवश्यकता थी। उन आनेवालों में से एक को मि० बाइंटन के द्वारा पता लगा कि गारफ़ील्ड की माता अपनी कुछ ज़मीन बेचा चाहती हैं। उस आगन्तुक ने तुरन्तही बन्दोबस्त करके प्रायः ३० बीघा ज़मीन ख़रीद ली और उसका रुपया भी तुरन्त ही दे दिया। रुपया पाकर गारफ़ील्ड की माता ने तमाम कर्ज़ा चुका दिया। वसन्त-ऋतु के प्रारम्भ में ही ज़मीन बेची गई थी, अतएव खेत जोतने बोने का समय काफ़ी था। इस कारण टामस ने एक पड़ोसी से विनय-पूर्वक एक घोड़ा माँगा। पड़ोसी भी बड़ा दयालु था। उसने तुरन्त ही एक घोड़ा हल जोतने के लिए दे दिया। घोड़े को पाकर उस वीर बालक ने अपनी माता और बहन की सहायता से खेत को ख़ूब अच्छी तरह जोता बोया। यद्यपि वह ११ ही वर्ष का बालक था परन्तु उसने ऐसी दक्षता से इस काम को किया कि मालूम होता था, आगामि शरद ऋतु में बहुत अच्छी फ़सिल होगी।

आदमी के ऊपर जब कोई विपत्ति आती है तब एकही विपत्ति से उसका छुटकारा नहीं होता। एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी विपत्ति आती रहती है। गारफ़ील्ड की माता पर भी एक

और विपत्ति आही पड़ी। उन्होंने देखा कि घर में जो अनाज है वह दूसरी फ़सिल तक न चलेगा और न घर में कुछ रुपया ही है कि उससे कुछ अनाज ख़रीद लें। इस कारण उन्होंने हिसाब लगा कर देखा कि यदि स्वयं एक वक़्त का आहार त्याग कर दें तो कदाचित् उसी अनाज से छः महीने काम चल जायगा। इस लिए उन्होंने बिना किसी को बताये तीन वक़्त के खाने में से एक वक़्त का खाना बन्द कर दिया और केवल दो ही वक़्त के आहार से वे अपने को सन्तुष्ट रखने लगीं। कुछ दिन इसी अवस्था में चलने के बाद उन्होंने फिर हिसाब लगाकर देखा कि इस प्रकार ख़र्च करने से अनाज फ़सिल तक के लिए काफ़ी न होगा। इस कारण उन्होंने और एक वक़्त का खाना बन्द कर दिया और केवल एक ही वक़्त आहार करके अपना जीवन धारण करने लगीं।

शेष महीने इसी प्रकार बीत गये। फिर खेत काटने का दिन आया। टामस बड़ी मुस्तैदी और दृढ़ता से खेत काटने के काम में लग गया। वह खेत काटता था और अपने मन में आनन्दित होता था क्योंकि फ़सिल बहुत अच्छी हुई थी।

इसके कुछ दिन बाद एक आदमी आरेंज में आया और इन्हीं के पड़ोस में टिका। उसको सीने का काम करने के लिए एक स्त्री और हल जोतने के लिए एक बालक की आवश्यकता थी। इस कारण गारफ़ील्ड की विधवा माता और उनका वीर पुत्र टामस दोनों उन कामों में नियुक्त किये गये। इस नये काम के पाने से उनकी आमदनी कुछ अधिक बढ़ गई। पहले ही दिन जब

टामस अपनी मेहनत की कमाई घर लाया तब उसने अपनी मां से कहा, "माता, अब जेम्स के लिए एक जोड़ा जूता बनना चाहिए।" माता भी इस बात पर सहमत हो गई। तुरन्त एक मोची बुलाया गया और जेम्स के पैरों की नाप उसे दी गई। जूते की नाप दिये जाने पर जेम्स को बड़ा ही आनन्द हुआ।

आज-कल की तरह उस समय वहाँ मोचियों की कोई दुकान नहीं होती थी। जब कभी किसी को जूता बनवाने की आवश्यकता होती तब वह किसी मोची को बुलवाता और अपने ही मकान में उसे भोजन कराता और रहने के लिए एक स्थान देता। जेम्स का जूता बनाने के लिए भी एक मोची बुलवाया गया। वह गारफ़ील्ड ही के मकान में रहता और इन्हीं लोगों के साथ भोजन भी करता था। कई दिनों के बाद जूता तैयार हो गया। पहले पहल उस जूते को पहन कर जेम्स के मन में इतना अधिक आनन्द हुआ था कि उतना आनन्द उसको ३० वर्ष के बाद जातीय महासभा के सभापति बनाये जाने पर भी न हुआ होगा। जेम्स की उम्र उस समय साढ़े तीन वर्ष की थी। सच है, दरिद्रावस्था में पहले पहल अपनी अभीष्ट वस्तु पाने से अन्तरात्मा को बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती है।

तीसरा परिच्छेद



जिस गाँव में गारफ़ील्ड के परिवार के लोग रहा करते थे वहाँ वालों के चित्त में यह विचार उठा कि उस गाँव में उनके मकान से डेढ़ मील दूर एक पाठशाला खोली जाय। गारफ़ील्ड की माता इस बात को सुन कर बड़ी प्रसन्न हुई, क्योंकि वह चाहती थी कि उसके लड़के किसी पाठशाला में भेजे जायँ। टामस ने आकर माता से कहा, "माँ, गाँव में एक पाठशाला खुलने-वाली है। अतएव अब जेम्स और दोनों बहिनों को वहाँ भेजना चाहिए।" माता ने कहा, "सिर्फ़ वही लोग क्यों, बेटा, तुम भी न जाओगे?" टामस ने उत्तर दिया, "माता, मेरे भाई-बहिन लिखना-पढ़ना सीखेंगे और मैं खेती-बारी के काम में रह कर रोज़ी कमाने का काम-धंदा करूँगा।" माता ने इस बात का कुछ उत्तर न दिया। वह टामस ही की राय पर सहमत हो गई।

पाठशाला जाने की राय तो ठीक होगई, परन्तु साढ़े तीन वर्ष का बालक जेम्स डेढ़ मील जाय तो कैसे जाय—यही प्रश्न सबके मन में उठा। तब बड़ी बहन ने बड़े उत्साह से कहा,

"मैं जिमी को पीठ पर लाद कर ले जाऊँगी" । लोग इस बात को सुनकर हँसने लगे, पर उसने अपनी ही बात क़ायम रक्खी।

जब पाठशाला जाने का दिन आया तब तीनों भाई-बहन हँसते खेलते वहाँ गये । पहले ही दिन जेम्स ने अँगरेज़ी में एक अक्षर आर R पहिचाना था । जेम्स को उसकी माता ने घरही में बाइबिल अच्छी तरह पढ़ाई थी, इस कारण वह पाठ शाला में अपने शिक्षक से उसी विषय पर तरह तरह के प्रश्न पूछा करता था । इससे विद्यार्थियों को बड़ी ख़ुशी होती और शिक्षक भी प्रसन्न होते थे ।

बचपन ही से जेम्स का चित्त सब विषयों को अच्छी तरह समझने की ओर आकर्षित होता था । इसी कारण वह अपने शिक्षक से हमेशा तरह तरह के प्रश्न पूछा करता था । कोई प्रश्न तो निरा निरर्थक, कोई अर्थयुक्त और कोई जैसा तैसा हुआ करते थे । इतने छोटे बालक के मुँह से इतने प्रश्नों की बौछार निकलते देख कर सबको अनुमान हो गया था कि यह एक अद्भुत लड़का है और कदाचित् भविष्य में यह एक महापुरुष होवे ।

उसी स्कूल के किसी बड़े लड़के ने, जिसका नाम जेकब लैण्डर था, आकर एक दिन जेम्स से कहा—"जेम्स ! आज तुम शिक्षक बनो और इन लोगों (अपने दर्जे के लड़कों) से प्रश्न करो, और ये लोग उत्तर दें ।" जेम्स झट तैयार हो गया और शिक्षक की कुर्सी पर जा बैठा और कहा—लड़को ! अपनी अपनी

जगह पर बैठो । जब सब प्रसन्न होकर बैठगये तब जेम्स प्रश्न करने लगा और कई बड़े लड़के किनारे खड़े होकर सुनने लगे ।

प्र०—आर्क को किसने बनाया ?

कई विद्यार्थियों ने उत्तर दिया, "हज़रत नूह ने ।"

" किसने उनको आर्क बनाने के लिए हुक्म दिया था ?"

कई लड़कों ने कहा, "ईश्वर ने ।"

"ईश्वर ने क्यों चाहा कि नूह आर्क को बनायें ?"

कुछ काल तक सब लोग चुप हो रहे । किसी ने कुछ उत्तर न दिया । आख़िरकार उस बड़े लड़के ने कहा, यह प्रश्न बहुत कठिन है ऐसा प्रश्न तुम्हें न करना चाहिए था, क्योंकि गुरुजी ने नहीं बताया है । यह सुन कर जिमी खड़ा हुआ और बोला—

"जिससे कि नूह अपने को और अपने बाल-बच्चों को बचा ले ?"

जेकब ने पूछा, "किससे बचा ले ?"

जेम्स ने कहा, "बूड़ा और तूफ़ान से ।"

फिर जेम्स ने पूँछा, "सबसे बूढ़ा आदमी कौन था ?"

कई लड़कों ने कहा, "मेथ्युसालेह सबसे बूढ़ा था ।"

"उसकी क्या उम्र थी ?"

फिर किसी ने उत्तर न दिया, तब जेम्स ने स्वयं ही उत्तर दे दिया और फिर पूछा:—

"सबसे अधिक मुलायम प्रकृति का मनुष्य कौन था ?"

सबने तुरन्त कहा, "मोज़ेज़" ।

"किसके पास कई रङ्ग का एक कुर्ता था ?"

तुरन्त सबने कहा, "जोज़ेफ़ के पास।"

"रेडसी (एक समुद्र का नाम है) में कौन डूब गया था?"

किसी ने उत्तर न दिया, इसलिए उसने स्वयं ही दे दिया।

चार वर्ष से भी कम उम्र का बालक प्रायः दस पन्द्रह मिनट तक इसी प्रकार के प्रश्न करता रहा और दर्जे के सब लड़कों को अपनी ओर खींचे रहा। मास्टर खड़े खड़े इस दृश्य को देख रहे थे। दृश्य बड़ा ही मधुर, बड़ा ही गम्भीर और बड़ा ही मनोहर था। जेम्स की स्मरणशक्ति बचपन ही से बड़ी तीक्ष्ण और दृढ़ थी, क्योंकि जिस विषय को वह सुनता उसे बड़े ध्यान से सुना करता था। छोटी छोटी कहानी अथवा किसी का कोई व्याख्यान सुनते ही वह उसे कण्ठ कर लेता था। दुनिया की हर चीज़ की ओर उसकी दृष्टि आकर्षित होती थी। जैसे—भाषा, दूसरों से बर्ताव, कपड़े लत्ते आदि, काम-काज करने के नियम, दूसरों से बातचीत करना कोई ऐसा काम न था जिसको वह बड़े ध्यान से न देखता हो।

एक दिन बड़ी लड़की ने पाठशाला से लौट कर अपनी माँ से कहा, "माता, हम लोगों की पाठशाला दो तीन हफ़्ते के लिए जाड़े में बन्द रहेगी और फिर दिसम्बर के महीने में खुलेगी।"

माता ने कहा, "मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि तुम लोग उस समय पाठशाला जाओगी। तुम सब जाना, केवल जेम्स न जावेगा, क्योंकि उसे जाड़े में इतनी दूर जाने में बड़ा कष्ट होगा।"

लड़की ने पूंछा, "तो क्या टामस भी जायगा?" माता ने कहा, "मैं आशा करती हूँ कि वह भी जायगा।" इतने में टामस वहाँ आ पहुँचा, और उन लोगों की बातचीत सुनकर उसने कहा, "मुझे गायों को देखने से, लकड़ी काटने और घर के और और काम करने से छुट्टी तो मिलेहीगी नहीं, मैं पाठशाला कैसे जाऊँगा। मैं शाम को सब कामों से छुट्टी पाकर घर ही में पढूँगा और पाले के दिनों में भी पढ़ सकता हूँ। मुझे पाठशाला जाने की कुछ आवश्यकता नहीं है।" अन्त में यही सिद्ध हुआ कि जेम्स और टामस दोनों भाई घर पर रह कर अपनी माता की सहायता से पढ़ेंगे।

दोनों भाई अपनी माँ की सहायता से पढ़ने लगे। जेम्स ने जाड़े के दिनों में पढ़ने और शब्दों के हिज्जे करने में बड़ी उन्नति की। एक दिन एक पुस्तक से उसने किसी एक वाक्य के हिज्जे करके ज़ोर से सबको सुना कर पढ़ा और उसका अर्थ भी उसने समझ लिया।

उस दिन से जेम्स के चित्त में एक नई शक्ति का उदय हुआ, अर्थात् सोचने की शक्ति उत्पन्न हुई। पुस्तक के शब्दों को पाठ करने से उसके चित्त में विचार उत्पन्न होता था। वह उन शब्दों को सोचा करता था। उस समय से उसने पुस्तक-पाठ करने में अपना तन मन अर्पण कर दिया और पुस्तक में उसको जो मज़ा मिलता था वह और कहीं न मिलता था। "इँगलिश-रीडर" एक पुस्तक थी जिसको वह बहुत पसंद करता था।

दिन दिन भर उसी "इँगलिशरीडर" को वह अपना साथी बनाये रहता था। जेम्स अपने घर की ज़मीन पर चित लेट कर अथवा गर्मियों के दिनों में किसी पेड़ तले बैठकर उसी इँगलिश-रीडर को पढ़ा करता, उसकी युक्तियों को विचारा करता और उससे लाभदायक उपदेश लिया करता था। उसकी यह हालत पाँच ही वर्ष की अवस्था में होगई थी। छठे वर्ष के प्रारम्भ में उसने उस पुस्तक का बहुत सा हिस्सा कण्ठ कर लिया था। उसी अवस्था में वह उस पुस्तक के बाद और भी कई पुस्तकें पढ़ा करता था, किन्तु और पुस्तकों को छोड़ केवल इँगलिशरीडर ही का नाम लिखा गया है। इसका कारण यह है कि उसको औरों की अपेक्षा अधिक उस पुस्तक से प्रीति थी। जेम्स की विधवा माता अपने बालक की अवस्था देख मानो अपने मन ही मन आकाश-कुसुम की कल्पना करतीं और पुत्र के मङ्गलार्थ सदा भगवान् से प्रार्थना किया करती थीं।

चौथा परिच्छेद

इस विषय को जेम्स की विधवा माता बहुत काल से सोच रही थी उसी को सिद्ध करने के लिए एक दिन वह मिस्टर बाइंटन के मकान पर गईं। वहाँ जाकर उन्होंने कहा, "मिस्टर बाइंटन, यदि हमारे गाँव में एक छोटी मोटी पाठशाला खोलने का प्रयत्न किया जाय तो क्या हर्ज है ?" उन्होंने कहा, "हर्ज तो कुछ भी नहीं, परन्तु इसका होना कैसे सम्भव है ?" जेम्स की माता ने कहा, "यदि आठ या दस परिवार के लोग इस बात पर तैयार हो जायँ तो आश्चर्य ही क्या है। एकमत होकर यदि कोई काम किया जाय तो चाहे वह कितनाही कठिन क्यों न हो पर तो भी सफलता होती ही है; केवल हम लोगों में एकता होनी चाहिए। जिस देश के लोगों में, अथवा जिस गाँव के लोगों में, ऐक्य नहीं है, उस प्रान्त के लोग अकेले चाहे कितने ही शक्तिशाली और दिग्विजयी क्यों न हों, परन्तु उन्नतिशील संसार की दृष्टि में वे निर्जीव जड़पदार्थ के सिवा और कुछ भी नहीं हैं।" इन बातों को सुन कर मिस्टर बाइंटन ने बड़ी दृढ़ता से कहा, "मैं आपकी सहायता से इस पाठशाला को जारी करने का प्रबन्ध अवश्य ही

करूँगा ।" इस बात-चीत के समाप्त होने पर गारफ़ील्ड की विधवा माता अपने मकान को लौट गई । मिस्टर बाइंटन ने दूसरे पड़ोसियों से मिल कर इस विषय को पक्का कर लिया, और जाड़े के शुरू में ही उस गाँव में एक पाठशाला स्थापित हुई । गारफ़ील्ड की विधवा माता ने अपनी ज़मीन में से थोड़ी जगह मकान बनाने के लिए गाँव में दे दी । मतलब यह कि सभी लोगों की थोड़ी थोड़ी सहायता से उस गाँव में स्कूल बन गया । लड़के पढ़ने लगे । एक शिक्षक भी न्यू हैम्पशायर से बुलाया गया ।

जिस समय का हाल लिखा जाता है, उस समय शिक्षक-मण्डली प्रायः अपने विद्यार्थियों के मकान में उन्हीं के साथ पारी बाँध कर रहा करती थी, अर्थात् पाठशाला में जितने विद्यार्थी होते थे उनकी संख्या के अनुसार वर्ष दिन में किसके यहाँ कितने दिन रहना होगा इसका हिसाब लगाते और उसी हिसाब से चलते थे । मिस्टर फास्टर शिक्षक का नाम था । वे पहले पहल गारफ़ील्ड की विधवा माता ही के मकान पर रहे, क्योंकि ये उन्हीं के देशवासी थे । विधवा का जन्म इसी न्यू हैम्पशायर में हुआ था । शिक्षक महाशय देखने में तो बड़े भद्दे थे, परन्तु उन्होंने बिना किसी पाठशाला में पढ़े हुए भी कुछ विद्या सीख ली थी और लिखने पढ़ने के काम में बड़े चतुर थे । उनके आते ही जेम्स उनका बड़ा प्रिय शिष्य हो गया । उन्होंने एक दिन जेम्स से कहा, "यदि तुम अच्छी तरह लिखो पढ़ो तो कदाचित् तुम जनरल अर्थात् सेनापति हो सकते हो ।"

जेम्स को यह बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सेनापति कौन चीज़ है, परन्तु उसने अपने मन में सोचा कि सेनापति अवश्य ही कोई अच्छी चीज़ होगी, नहीं तो मास्टर साहब न कहते । वह दिन भर पाठशाला में इसी बात को सोचता रहा कि सेनापति क्या चीज़ है । जब ठीक ठीक न समझ सका तब उसने विचारा कि अपनी माँ से पूछूँगा । वे अवश्य ही बता देंगी ।

ज्योंही पाठशाला से छुट्टी हुई, वह तुरन्त ही दौड़ कर माँ के पास गया और उससे पूछने लगा—"माँ, सेनापति क्या चीज़ है । मास्टर साहब कहते हैं कि यदि तुम अच्छी तरह लिखो पढ़ो तो तुम सेनापति होगे । माँ, सेनापति क्या चीज़ है ?"

इन बातों को सुन कर माता ने जेम्स को गले से लगा लिया । उसका मुखचुम्बन किया और उस बालक का हृदय मातृस्नेह से भर दिया । जेम्स ने फिर पूँछा, "माता, बताओ, सेनापति किसको कहते हैं ?" तब माता ने बालक का कुतूहल शान्त करने के लिए अमरीका के राष्ट्र-विप्लव का पूरा हाल बयान किया और बताया कि कैसे उस महायुद्ध में इस देश के बड़े बड़े सेनापतियों ने शत्रुओं के सिर काटे थे, कैसी वीरता के साथ अपने देश की रक्षा करने के लिए वे लड़े थे और बहुत दिनों के घोर युद्ध के अनन्तर उन्होंने शत्रुओं पर कैसे विजय प्राप्त किया था इत्यादि उन सेनापतियों का नाम और काम सब बताया और कहा, "बेटा अब हमारा देश शान्ति में है और

यद्यपि अब शत्रुओं के सिर काटने की आवश्यकता नहीं है तथापि यदि तुम अच्छी तरह लिख पढ़ लो तो कदाचित् तुम्हारा नाम भी संसार में ऐसा प्रसिद्ध हो सकता है जैसा कि एक सेनापति का ।"

विधवा माता ने ऊपर की वक्तृता में यह भी कह दिया था कि इसी गारफ़ील्ड के पुरखा भी उस महा युद्ध में शरीक थे।

माता ने जेम्स का हाथ पकड़ कर और अपनी ओर उसे घसीट कर कहा, "बेटा, अब तो तुमने समझ लिया न, कि सेना-पति किसे कहते हैं। देखो, उस महायुद्ध के समाप्त होने पर तुम्हारे प्रपितामह सोलोमन गारफ़ील्ड न्यूयार्क की रियासत में चले गये। वहाँ उनको एक पुत्र हुआ जिसका नाम टामस था। टामस के बड़े होने पर उसका विवाह हुआ और उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम एबरम था, और यही एबरम तुम्हारे पिता थे। अब बेटा, तुम्हें अच्छी तरह स्मरण रहेगा कि सोलोमन गारफ़ील्ड जो कि अमरीका के राष्ट्र-विप्लव के समय एक सिपाही थे वे तुम्हारे प्रपितामह थे। न्यूयार्क के निवासी टामस गारफ़ील्ड तुम्हारे पितामह थे और ओहियो के रहने वाले एमरम गारफ़ील्ड तुम्हारे पिता थे। तुम्हारे पुरखों में से कोई सेनापति नहीं हुआ था परन्तु कोई कोई उनमें से प्रतिष्ठा में सेनापति ही के बराबर थे। यदि तुम कदाचित् सेनापति हो जाओ तो तुम इतने उन्नत होगे कि तुम्हारे पुरखे स्वर्ग लोक से तुम्हारे ऊपर पुष्प-वृष्टि करेंगे क्योंकि उनमें से कोई भी इस उच्च

पद को नहीं प्राप्त कर सका था। तुम अपने कुल का मुख उज्ज्वल करके अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाओगे और संसार भर में तुम्हारा नाम फैल जायगा।"

सारी वक्तृता को जेम्स ने बड़े आश्चर्य के साथ सुना। उसको आश्चर्य इस कारण हुआ कि संसार के और लोगों से भी उसका कुछ कुछ सम्बन्ध है, और उसी के पूर्व पुरुष इस देश को बसाने के मुखिया थे और किसी समय में उन्होंने बहुत बड़े बड़े काम भी किये थे। अब तक उसको इस बात का ज्ञान न था कि ओहियो के बाहर रहने वालों से उसका कोई सम्बन्ध है या नहीं। इस नई बात को सुनकर उसके चित्त में बड़े बड़े काम करने की इच्छा उत्पन्न हुई और उसके मस्तिष्क में इन बातों का दीप्तिमान् चित्र अंकित हो गया जो चिरकाल लों बना रहा, मिटा नहीं।

जेम्स और उसके शिक्षक में बड़ा सद्भाव था। दोनों में परस्पर विश्वास और सहानुभूति भी ख़ूब थी। एक दिन शिक्षक महाशय ने पाठशाला में एक कठोर नियम प्रचलित किया। वह नियम यह था कि कोई विद्यार्थी अपनी पुस्तक को छोड़ पाठशाला में इधर उधर न ताके। यह नियम पालन करना विद्यार्थियों के लिए कुछ कठिन था, और विशेष कर जेम्स ऐसे चञ्चल-चित्त वाले विद्यार्थी के लिए तो बड़ा ही कठिन था, क्योंकि उसके दोनों कान और आँखें उसके लिए पुस्तक का काम देती थीं। इसलिए उन आँखों और कानों को बन्द करके

बैठना उसके लिए बड़ा दुःखदायक था, परन्तु उसने मन ही मन इस बात को ठान लिया कि वह इस नियम को यथासाध्य पालन करेगा क्योंकि उसको विश्वास था कि ऐसा करने से वह सेनापति बनेगा।

इस नियम को पालन करने का वह यत्न तो बहुत करता था परन्तु ज्योंही कोई नई बात होती त्योंही तुरन्त उसके कान खड़े हो जाते और वह इधर उधर ताकने लगता। शिक्षक महाशय भी तुरन्त ही ठोकते और वह सिर झुका लेता। थोड़ी देर बाद फिर वह इधर उधर देखता और शिक्षक उसे डाटते और तब वह चुप बैठ जाता। तात्पर्य यह कि दो सप्ताह तक लगातार शिक्षक ने उसे ठीक करने का प्रयत्न किया, पर उनकी सब चेष्टा निष्फल हुई। दो सप्ताह के बाद शिक्षक को दूसरे विद्यार्थी के यहाँ जाने की बारी आई। तब उन्होंने उसकी विधवा माता से एक दिन कहा, "महाशया, आपका पुत्र बहुत अच्छा लड़का है, परन्तु—"

माता ने कहा, "आप 'परन्तु' कहके चुप क्यों होगये? संकोच क्यों करते हैं, कहिए जो कुछ कहना है।" शिक्षक ने कहा, "आपका लड़का अच्छा तो है सही, पर बड़ा चञ्चल है, एक मिनिट भी स्थिर नहीं बैठ सकता। माता ने ठंडी साँस भर कर कहा, "बेटा जेम्स, यह क्या बात है? जेम्स ने इन बातों को सुन कर माँ के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया और रोते रोते उत्तर दिया, "मैं अब स्थिर रहूँगा और अच्छा लड़का बनूँगा।"

कोई मनुष्य चाहे कितना ही विद्वान् और ज्ञानी क्यों न हो परन्तु वह साधारण माध्याकर्षण-शक्ति को किसी प्रकार नहीं दबा सकता। यहाँ शिक्षक महाशय भूल से इसी शक्ति के दबाने का प्रयत्न कर रहे थे तो इसका दबाना भला कैसे सम्भव था।

माता ने शिक्षक महाशय से कहा, "महाशय, हमें मालूम होता है कि कदाचित् वह चुप बैठ ही नहीं सकता, क्योंकि वह अपनी ज़िन्दगी भर में कभी चुप नहीं रहा।"

शिक्षक ने कुछ काल तक चिन्ता करने के अनन्तर कहा, "आप ठीक कहती हैं, मैं इस बात को नहीं समझ सका था। मैं देखता हूँ कि पहले की अपेक्षा उसमें कुछ दुबलापन आगया है। उसका कारण यह है कि अब वह अपनी आँखों और कानों को ठीक रखने में पहले से बहुत अधिक ध्यान रखता है। यदि उसकी आँखों और कानों को स्वाधीनता दी जाय तो कदाचित् लाभ ही होगा। मैंने अपनी भूल समझ ली है।"

लड़के को रोते देख शिक्षक का दिल पसीज गया। उन्होंने उसके सिर पर हाथ धर कर कहा, "बेटा जेम्स, रोओ मत, अब से हम दोनों एक दूसरे के मित्र बने रहेंगे। मैं तुम्हें फिर से पढ़ाऊँगा। उठो, हँसो, बोलो और आँसू पूँछो।"

शिक्षक ने अपनी भूल समझ ली थी, और उस बालक की माता ने उनकी आँखें खोल दी थीं। उन्होंने अपने मन में इस बात का विचार कर लिया था कि उस माध्याकर्षण-शक्ति को

अपने स्वाभाविक रूप ही में चलने देंगे और साथ ही साथ कोई दूसरा और उपाय सोचेंगे।

शिक्षक महाशय ने अपनी भूल का संशोधन करने के लिए जेम्स को उसकी इच्छा के अनुसार ही सब काम करने की आज्ञा देदी। कुछ दिन ऐसी स्वाधीनता की अवस्था में रहने के अनन्तर सभों ने देखा कि इसका परिणाम बहुत ही अच्छा हुआ। जेम्स अपनी आँखों और कानों को पूर्णरीति से प्रयोग करता और इस प्रकार से तरह तरह का ज्ञान लाभ करता था।

कुछ दिन में उसका नम्बर स्कूल के सब विद्यार्थियों से ऊँचा होगया। शिक्षक इस बात को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। उसकी माता के हर्ष को द्विगुणित करने के विचार से उन्होंने एक दिन उससे मिलकर कहा:—"आपका पुत्र बहुत अच्छा काम कर रहा है। सारे स्कूल में उसके समान तीव्र, बुद्धिमान् और साहसी दूसरा कोई विद्यार्थी नहीं है। उसके सद्गुणों का परिचय देने में हमें भी बड़ा गौरव जान पड़ता है।"

माता ने इन बातों को सुनकर शिक्षक को धन्यवाद दिया और भगवान के चरणों में पुत्र के मङ्गलार्थ प्रार्थना करके प्रणाम किया।

एक दिन शिक्षक ने पाठशाला में सब विद्यार्थियों के सामने हाथ में एक पुस्तक लेकर कहा:—"लड़को, देखो हमारे हाथ में एक पुस्तक है। इस पुस्तक का नाम न्यू टेस्टमेंट है। यह पुस्तक

मैं उस विद्यार्थी को इनाम दूँगा जिसका चाल-चलन, रीति-नीति, आचार-व्यवहार, लिखना-पढ़ना दूसरे विद्यार्थियों से अच्छा समझा जायगा। अतएव तुम सब लोग इसके पाने की कोशिश करो। देखें किसको मिलता है ?"

इनाम का नाम सुनते ही सब लड़के बड़े उत्साहित हुए और बड़ी मुस्तैदी के साथ परिश्रम करने लगे। परन्तु दो ही चार महीने के बाद मालूम होगया कि जेम्स को छोड़ दूसरा कोई उस इनाम के पाने का अधिकारी न होगा। अतएव वर्ष के अन्त में जब स्कूल बन्द होने को था तब शिक्षक ने जो एक दिन जेम्स को पास बुलाकर सब विद्यार्थियों के सामने वह पुस्तक इनाम में दी तब किसी को ईर्ष्या-द्वेष अथवा आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि सभों ने उसकी योग्यता स्वीकार कर ली थी।

जबसे जेम्स को अपने सारे काम-काज के करने में स्वाधीनता मिल गई तभी से मानो उसकी अवस्था दिन दिन उन्नत होती गई। पाठशाला के समस्त शिक्षक उसका बड़ा आदर करते थे, और उसकी असाधारण बुद्धि की प्रशंसा किया करते थे। पाठशाला के समस्त विद्यार्थी भी उसके गुणों को देखकर उसकी ओर चुम्बक पत्थर की नाईं आकर्षित होते थे। मतलब यह कि जो जो इसके संसर्ग में आते वे ही इसको जी से प्यार करते थे। ६ ही वर्ष की अवस्था में उसने गाँव भर में जितनी किताबें माँग मूँग कर पाईं सबको आद्योपान्त पढ़ डाला। इसके अतिरिक्त जब कभी उसे अवसर मिलता था वह खेती के काम

करने में अपने भाई टामस की सहायता किया करता था। जब पाठशाला खुली रहती तब वह पाठशाला जाता और केवल लिखने पढ़ने ही में अपना समय व्यतीत करता परन्तु जब पाठशाला बन्द रहा करती तब वह घर पर पाठ याद करता और अपने भाई की सहायता किया करता था। एक कहावत है कि "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" अर्थात् जो वृक्ष अच्छी तरह उपजने वाला होता है उसके पत्ते पहले ही से चिकने मालूम होते हैं। हमारे जेम्स महोदय में भी कई एक ऐसे ही सुलक्षण दिखाई पड़ने लगे। पहली बात तो यह है कि इसकी मानसिक भूख-प्यास कभी मिटती ही न थी, अर्थात् चाहे कितनी ही नई चीज़ें वह क्यों न जान ले पर तो भी और अधिक जानने की अभिलाषा चित्त में बनी ही रहती थी। नई चीज़ों के जानने से उसकी तृप्ति ही न होती थी।

जेम्स के ही परिश्रम से उस समय उस गाँव में गारफ़ील्ड और बाइंटन के लड़कों ने मिल कर एक समिति क़ायम की जिसमें दोनों परिवार के लड़के आते और शब्दों के उच्चारण तथा ठीक ठीक हिज्जे करने का अभ्यास किया करते थे। फल उसका यह हुआ कि वे लड़के स्कूल के और लड़कों से इस विषय में बहुत बढ़े-चढ़े हो गये।

पाँचवाँ परिच्छेद

आठ वर्ष की उम्र में जेम्स रोज़ अपने भाई के साथ खेत में काम किया करता था; और जब कभी टामस आया जाया करता तब जेम्स ही अकेला खेत का सारा काम-काज किया करता था। वह लकड़ी काटने, गाय दुहने, खेत काटने तथा और भी बहुत से कामों के करने में बड़ा कुशल था।

एक दिन उसकी माता ने कहा, "बेटा जेम्स, देखो, जब तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई थी तब टामस की उम्र ११ वर्ष की भी न थी। उसने उसी समय खेत का सारा भार अपने ऊपर ले लिया था।

अब तुम्हारी उम्र ८ वर्ष की है। तुम्हें भी उस काम के लिए प्रस्तुत होना चाहिए।"

जेम्स ने तुरन्त उत्तर दिया, "मैं कर सकता हूँ।"

माता ने पूछा, "क्या बिना सीखे ही तुम यह काम कर सकते हो ?

इस बात को सुनते ही उसने तुरन्त उत्तर दिया, "अगर

टामस इस काम को कर सका था तो मैं निश्चय जानता हूँ कि मैं भी कर सकूँगा ।"

"हाँ यह तो ठीक, पर कब ? जब तुम भी टामस की उम्र को पहुँच जाओगे ।"

"हाँ हाँ, ठीक है । मैं भी यही कहता था । ख़ैर, अब गायों को दुहने का समय आ गया है" यह कहता हुआ जेम्स वहाँ से चला गया और अपने काम में लग गया, क्योंकि उसमें एक बड़ा भारी गुण यह था कि अपने ज़रूरी काम को छोड़ कर कभी वह खेल-कूद में अपना समय न गँवाता था ।

एक और गुण उसमें यह भी था कि वह किसी काम के करने से मुँह नहीं मोड़ता था । कोई काम उससे कहा जावे, तुरन्त उसका उत्तर वह यही देता था, कि "मैं कर सकता हूँ ।" इसी "मैं कर सकता हूँ" के कारण एक बार उसकी बड़ी हँसी हुई थी । सुनिए:—

एक दिन वह अपने साथी के साथ, जिसका नाम एडविन मेप्स था, मुर्ग़ी का अण्डा ढूँढ़ने जाता था । उस समय उसकी उम्र आठ वर्ष की थी । एकाएक मेप्स को एक छोटी मुर्ग़ी का अंडा मिल गया और उसने उसे उठा कर कहा, "क्यों जेम्स, क्या यह बहुत छोटा नहीं है ?"

जेम्स ने तुरन्त ही उत्तर दिया, "मैं इसे निगल जा सकता हूँ ।"

"क्या सब का सब ?"

"हाँ, सबका सब ।"

"तुम नहीं निगल सकते ।"

"मैं उसे ज़रूर निगल सकता हूँ ।" इतना कहते ही जेम्स ने उसे अपने मुँह में डाल लिया और उसे निगलने की कोशिश की, परन्तु उसके गले के छेद से अंडा अधिक बड़ा था इस कारण वह उसे पहली बार न निगल सका। पहली बार काम-याब न होने के कारण उसने फिर से उसे निगलने की क़ोशिश की, परन्तु अंडा बड़ा था और गले का छेद छोटा—जाय तो कैसे जाय । अन्त में वह अंडा उसके मुँह में ही टूट गया और बदबू जो मालूम हुई तो उस टूटे अंडे को मुँह में लिये हुए वह घर की ओर भागा । घर पहुँच कर उसने तुरन्त एक टुकड़ा रोटी लेकर उसी अंडे की सहायता से उसे चबाने लगा। थोड़ी देर चबाने के वाद वह किसी तरह नाक मुँह बन्द करके तुरन्त उसे निगल गया ।

मेप्स जो इनके साथ साथ दौड़ता हुआ आया था उसने तमाम क़िस्सा जेम्स की माँ, बहन और भाई से कह दिया और सब लोगों ने इनकी ख़ूब हँसी उड़ाई और इन्हें बेवक़ूफ़ बनाया परन्तु माता ने केवल यही कहा, "अरे बेवक़ूफ़ लड़के !"

इसी "अरे बेवक़ूफ़ लड़के" के भीतर एक ऐसी बात छिपी हुई थी जिसको माता ने कदाचित् कभी अनुभव ही न किया होगा । अक्सर ऐसा देखने में आया है कि ऐसे बेवक़ूफ़ लड़के संसार में ऐसे बड़े बड़े काम कर जाते हैं कि जिनको देख कर

लोग दाँतों तले उँगली दबाते हैं और अपना नाम चिरस्मरणीय कर जाते हैं । इस बेवकूफ़ी का नाम बेवकूफ़ी नहीं है, वरन् इसे आत्म-निर्भरता कहते हैं ।

इस प्रकार की बेवकूफ़ी का एक क़िस्सा मुझे याद पड़ता है । उसे भी मैं लिखता हूँ । वह यह है :—विलियम कैरे एक बहुत बड़े प्रसिद्ध पादरी थे । ये भारतवर्ष में भेजे गये थे । इन्होंने बहुत बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी । लड़कपन में जब इनकी उम्र केवल आठ वर्ष की थी तब खेलते खेलते वे एक दिन पेड़ पर से गिर पड़े और इनका एक पैर टूट गया । पैर टूट जाने से कई हफ़्ते तक इन्हें बिछौने पर पड़ा रहना पड़ा । परन्तु जब अच्छे हुए तब पहला काम जो इन्होंने किया वह यह था कि वे उसी पेड़ की फुनगी पर चढ़े और बड़ी देर वहीं बैठे रहे । लोग उसको भी बेवकूफ़ी कह सकते हैं, परन्तु यह बेवकूफ़ा न थी, बल्कि उन्होंने इस बात का प्रमाण कर दिखाया कि पेड़ पर चढ़ना उनके लिए असम्भव न था ।

जेम्स घमण्डी न था । वह हर काम को करने की हामी भरता था परन्तु उसमें घमण्ड का कोई चिह्न दिखाई न पड़ता था, बल्कि उसके कामों को देख कर इसी बात का परिचय मिलता था कि सब काम करने की योग्यता उसमें थी और हर काम को वह बड़ी सुघराई के साथ कर सकता था ।

———

छठा परिच्छेद



क दिन गारफ़ील्ड की विधवा माता ने अपने बच्चों से कहा,—"हम अगुआओं * के लिए सैबेथ † का मानना ज़रूरी है, जब कि हम लोग और और विषयों को पूरी तौर से मानते हैं। बड़े बड़े शहरों में लोग इसी सैबेथ के दिन कितनी तैयारियाँ किया करते हैं, फूल-पत्तों से गिर्जों को सजाते हैं, घन्टे बजाते हैं और तरह तरह के आनन्दमङ्गल मनाते हैं। अबसे हम लोग भी सैबेथ मनावेंगे।"

जेम्स ने पूछा:—"माता, वे लोग घंटा क्यों बजाते हैं।"

"घंटा इसलिए बजाते हैं कि लोग ठीक समय पर गिर्जे में उपस्थित हो सकें। हम जंगलियों के लिए घंटों की कुछ अधिक आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम लोग एक दूसरे से बहुत दूर दूर रहा करते हैं।"

---

* गारफ़ील्ड और बाइंटन आदि परिवार के लोग पहल पहल ओहिओ में बसे थे इस कारण इनको अगुआ कहा करते थे।

† ईसा-मसी के मत के मानने वाले इतवार को सैबेथ अर्थात् छुट्टी का दिन कहते हैं क्योंकि उस दिन वे सिवा ईश्वर के भजन-पूजन के और दूसरा कोई काम नहीं करते।

जेम्स ने पूछा:—"लेकिन क्या घंटों का बजना इन जङ्गलों में बहुत मधुर न मालूम होगा ?"

माता ने कहा:—"घंटों की आवाज़ न केवल मधुर, गम्भीर ही मालूम होगी बरन् इनके बजने से सुनसान जङ्गल भी हरा भरा मालूम होगा।"

उस दिन से गारफ़ील्ड के बच्चे सैबेथ को मानने लगे, और चाहे कोई सभा हो चाहे न हो, परन्तु भगवान् का भजन उस दिन होता ही था और सब काम-काज बन्द रहा करता था। जेम्स की विधवा माता ने ऐसा नियम बना रक्खा था कि बाइबिल के चार परिच्छेद प्रति दिन गिर्जे में पढ़े जायँगे और चार से अधिक परिच्छेद सैबेथ के दिन पढ़े जायँगे।

जब बाइबिल पढ़ा जाता था तब सब बालक तरह तरह के प्रश्न पूछा करते थे। बाइबिल के क़िस्से जेम्स को इतने प्यारे लगते थे कि जब उसने लिखना-पढ़ना सीख लिया तब उसने इस पुस्तक को कई बार पढ़ा और उसके तमाम क़िस्से उसे याद हो गये थे। यहाँ तक कि कौन सा क़िस्सा किस पन्ने में है यह भी वह कह सकता था।

उसकी माता बाइबिल को ईश्वर की किताब कहा करती थी। इस कारण एक दिन उसने माता से कहा:—"माता तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह ईश्वर की किताब है ?"

माता ने कहा:—"क्योंकि मनुष्यों ने जितनी किताबें लिखी हैं कोई भी इसके तुल्य नहीं है।"

"लेकिन तुमने एक दिन कहा था कि मूसा, ऐशा, डेभिड, मैथ्यू, पाल इन सभों ने इसको लिखा है।"

"हाँ ठीक है, उन्हीं लोगों ने इसको लिखा, परन्तु जैसा जैसा ईश्वर ने उनको आदेश किया वैसा ही वैसा उन्होंने लिखा है। कुछ अपने मन से नहीं लिखा। वे इसको बिना सहायता के नहीं लिख सकते थे।"

जेम्स ने पूछा, तो "क्या तुम इसे इसी लिए ईश्वर की किताब कहती हो?"

"हाँ ठीक है। वे ही इसके लेखक हैं। यह दूसरी बात है कि उन्होंने इसको मनुष्यों के द्वारा ही लिखवाया।"

"क्या इसकी सब कहानियाँ सच्ची हैं?"

"हाँ सब सच्ची हैं।"

"क्या यह भी सच है कि जोजेफ़ के पास एक कुर्ता कई रङ्ग का था?"

"हाँ, मैं समझती हूँ कि यही बात है।"

"उसके पास एक रङ्ग का कुर्ता क्यों न था। क्या इसका बनाना सहल न था?"

"उसका बाप उसे और बच्चों से अधिक प्यार करता था। इस कारण उसने उसके लिए एक ऐसा कुर्ता बनवा दिया था।"

"तो क्या एक लड़के को अधिक प्यार करना बाप के लिए उचित था?"

" नहीं, उचित तो न था।"

"क्या उसका बाप नेक आदमी था ?"

"हाँ, नेक आदमी तो था, परन्तु कोई कोई नेक आदमी भी किसी किसी समय भूल कर जाते हैं ।"

"अगर नेक आदमी भूल करें तो तुम उन्हें बुरे आदमियों से कैसे पहचान सकते हो ?"

"वे इतने अधिक ख़राब काम नहीं करते जितना बुरे मनुष्य करते हैं ।"

"क्या अच्छे आदमी बुरा काम करना छोड़ नहीं सकते ?"

"हाँ, ईश्वर की सहायता से छोड़ सकते हैं ।"

"क्या, ईश्वर सर्वदा उन्हें सहायता नहीं देते ?"

"नहीं ।"

"क्यों नहीं ?"

"शायद वे सहायता पाने के योग्य नहीं हैं ।"

"क्या मनुष्य उनकी सहायता बिना अच्छे नहीं हो सकते ?"

"नहीं । वे अच्छे नहीं हो सकते, और न कभी होंगे ।"

"क्यों न होंगे ?"

"क्योंकि ये बड़े दुष्ट हैं ।"

"तो फिर वे अच्छे कैसे हो सकते हैं ?"

इस कथोपकथन से जेम्स की चित्तवृत्ति और ज्ञान-लाभ करने की इच्छा का परिचय भली भाँति मिलता है । कभी कभी ऐसा होता था कि इसके लड़कपन के प्रश्नों का उत्तर देने में माता के दांत खट्टे हो जाते थे । परन्तु इस बात को अवश्य ही

मानना पड़ेगा कि माता के उपदेश जेम्स के लिए इतने उपकारी थे कि चालीस वर्ष की अवस्था में जब वे किसी सभा में व्याख्यान देते थे तब उनकी बचपन की उपदेशपूर्ण वक्तृतायें इतनी मधुर और मनोहारिणी होती थीं कि लोग उनको कान लगा कर सुना करते थे और उनका असर उनके दिलों पर बहुत दिनों तक बना रहता था।

जब जेम्स की उम्र आठ वर्ष की थी उस समय मद्यादि दोषों के निवारण करने के लिए एक समिति बहुत प्रयत्न कर रही थी इसका असर चारों ओर फैल गया था। ओहियो में भी जब तब इसकी चर्चा हुआ करती थी। एक दिन जेम्स की विधवा माता ने अपने पुत्र से कहा:—"मदिरा पान करना बहुत बड़ा पाप है। मैं इस बात से बड़ी प्रसन्न हूँ कि तुम्हारे पिता का भी ऐसा ही मत था।"

जेम्स ने पूछा :—"क्या वे रम या भिस्की कुछ भी नहीं पिया करते थे ?"

"योंही कभी कभी। क्योंकि वे मतवाले आदमियों की संगत कभी करते ही न थे"।

जेम्स ने पूछा :—"यदि इससे नुक़सान पहुँचता है तो लोग मद्य पीना छोड़ क्यों नहीं देते ?"

"यह कहना बहुत कठिन है कि वे क्यों नहीं छोड़ते। कोई कोई तो ऐसा कहते हैं कि वे छोड़ ही नहीं सकते।"

बहुत आश्चर्य में होकर जेम्स ने पूछा:—"छोड़ नहीं सकते ?"

"ऐसा कहा जाता है कि वे छोड़ नहीं सकते क्योंकि वे इसमें इतने आसक्त हो जाते हैं कि बिना इसके रही नहीं सकते।"

जेम्स ने बड़ी दृढ़ता से कहा:—"मैं इसे अवश्य ही छोड़ूँगा।"

"इस बुरी चीज़ का न छूना ही अच्छा है।"

"लोग मद्य क्यों पीते हैं?"

"मैं समझती हूँ कि यह कहना कठिन होगा कि लोग इसे क्यों पीते हैं। ज्यादा आदमी इसे पीते हैं क्योंकि कदाचित् वे इसे पसन्द करते होंगे।"

"क्या इसका स्वाद अच्छा होता है?"

"मैं समझती हूँ कि इसका स्वाद उन्हें अच्छा लगता है जो इसे पसन्द करते हैं।"

जेम्स ने कहा:—"मैं भी इसे एक बार चीख कर देखूँगा कि कैसी लगती है।"

"हे मेरे प्यारे बेटे, मैं कहती हूँ कि तुम उसे चीखो ही नहीं। यदि तुम उसे कभी न चीखो तो इतना तो निश्चय है कि तुम मतवाले कभी न होगे। देखो, बाइबिल में लिखा है "तुम शराब की ओर मत देखो जब कि यह लाल है और जबकि इसकी रङ्गत प्याली में दीख पड़ती है और जबकि यह तरल पदार्थ की नाईं स्वयं बह सकती है। अन्त में यह साँप की तरह काटती है और बिच्छू की तरह डंक मारती है।"

जेम्स ने पूछाः—"रम में कौन सी ऐसी चीज़ है जो आदमी को नुक़सान पहुँचाती है ?"

"उसमें एक नशीली चीज़ होती है, इसी कारण लोग मतवाले हो जाते हैं। देखो, दूध या पानी पीने से किसी को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचता।"

"नहीं, ऐसा तो नहीं होता।"

"हाँ, इन बलकारक चीज़ों के पीने में और मादक वस्तुओं के पीने में बड़ा भेद है। दूध या पानी में मादक द्रव्य कुछ नहीं है।"

"यदि मादक चीज़ों के देने से लोगों को नुक़सान होता है तो क्यों वे इन चीज़ों को इसमें छोड़ते हैं।"

जेम्स की विधवा माता से जहाँ तक बन पड़ा भलीभाँति इस अन्तिम प्रश्न का उत्तर देकर उसने अपने पुत्र को शान्त किया।

सातवाँ परिच्छेद

बहुत दिनों से टामस की इच्छा थी कि वह किसी प्रकार बन्दोबस्त करके रहने के लिए आरेंज में एक अच्छा मकान बनवावे। इस कारण धीरे धीरे चार पाँच साल के बीच में उसने कुछ लकड़ी, लट्ठा, बाँस, बल्ली इत्यादि सामान इकट्ठा कर रक्खा था। परन्तु रुपये के अभाव से कोई बढ़ई नहीं लगाया जा सकता था, जो मकान को बना दे। इस कारण उसे अब रुपया कमाने की बड़ी चिन्ता हुई।

सौभाग्यवश थोड़े ही दिन बाद सुनने में आया कि आरेंज से २०, २५, मील दूर पर मिचिगन नामी एक गांव में जंगल की सफ़ाई करने के लिए कुछ लोगों की ज़रूरत है। टामस ने इस बात के सुनते ही तुरन्त वहाँ जाने का विचार पक्का कर लिया, और उसने अपने छोटे भाई से अपना मतलब कह सुनाया।

जेम्स इस बात को सुन कर बहुत ख़ुश हुआ और बोला, "भैया, तुम मिचिगन जाओ, और मैं यहाँ रह कर अपने खेत में काश्तकारी करूँगा। तुम कितने दिनों के लिए वहाँ जाओगे और वे तुम्हे कितनी तनख़्वाह देंगे।

टामस ने उत्तर दिया कि वहाँ मैं कम से कम छः महीने रहूँगा, और ज्यादा भी रह सकता हूँ। वे हमको प्रायः ३० रुपया मासिक देंगे।"

जेम्स ने भी अपने भाई के साथ जाना चाहा परन्तु उसके जाने से खेती-बारी का काम कौन करता, माता के पास कौन रहता। जब यह युक्तिपूर्ण चिन्ता उसके दिमाग़ में आई तब वह चुप रह गया। उस समय जेम्स की अवस्था १२ वर्ष की थी और टामस २१ वर्ष का था। पहले ही से माता और पुत्रों में यह बात तै हो गई थी कि टामस २१ वर्ष की अवस्था में बाहर जाकर रुपया कमावेगा और जेम्स १२ वर्ष में खेती करेगा। लड़कपन में टामस ही ने ऐसा प्रस्ताव किया था। अतएव मौक़ा आने पर जब टामस ने माता से अपने जाने का पूरा हाल कह सुनाया तब यद्यपि उनके चित्त में पुत्र के विच्छेद का कष्ट अनुभव होने लगा परन्तु तो भी वे इनकार न कर सकीं; क्योंकि पहले तो वे वचन हार चुकी थीं, और दूसरे यह कि वहाँ जाने से लड़के को कुछ अधिक अनुभव प्राप्त होगा और कुछ रुपया भी कमा लावेगा—यह सोच कर वे टामस की बात पर सहमत हो गईं और उसे मिचिगन जाने की अनुमति दे दी।

इधर टामस मिचिगन जाने की तैयारी कर रहा था और उधर जेम्स अपनी नई ज़िम्मेदारी की चिन्ता कर रहा था, और इनकी माता दोनों को अपने परिश्रम और बुद्धि-द्वारा सहायता कर रही थीं।

दूसरे दिन टामस ने अपनी माता को प्रणाम करके और अपने भाई-बहनों का हाथ चूम कर उनसे विदा माँगी और सीधे मिचिगन की राह ली। उसी दिन से जेम्स ने भी अपने खेती का सारा भार अपने ऊपर लिया। किन्तु टामस के चले जाने पर जेम्स और उसकी माता को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि इन दोनों भाइयों में बड़ा ही प्रेम और सद्भाव था। वह इन्हीं बच्चों का मुँह ताक के अपने वैधव्य का कष्ट सहन करती हुई किसी प्रकार जीवन धारण करती थीं।

यद्यपि जेम्स को अपने भाई से छूट जाने पर बड़ा ही दुःख हुआ किन्तु तो भी उसने बड़ी गम्भीरता से खेती का काम आरम्भ किया। खेती करना उसके लिए बिलकुल नया काम न था, क्योंकि चार वर्ष से बराबर वह अपने भाई के साथ उसके काम की देख भाल किया करता था और इस कारण उसने इस काम में बहुत सा अनुभव प्राप्त किया था। लड़कपन में जब जेम्स खेत पर काम किया करता था तब लोग उसे किसान बालक कहा करते थे, परन्तु अब उसने पूरे तौर से किसान बन कर इस काम को आरम्भ कर दिया।

एक दिन किसी पड़ोसी ने आकर गारफ़ील्ड की विधवा माता से कहा:—"आपका लड़का अपने औज़ारों को लेकर बड़ी ख़ूबी से खेत पर काम करता है।"

माता को यह बात सुन कर बड़ा आनन्द हुआ और उसने कहा:—"हाँ, हमें भी ऐसा ही मालूम होता है।"

पड़ोसी ने कहा:—"हम अगुआओं की ज़िन्दगी हमेशा तक़लीफ़ से भरी रहती है।"

गारफ़ील्ड की विधवा माता ने भी इसी बात को स्वीकार किया और इन दोनों में कुछ देर तक इसी तकलीफ़ के विषय में बात-चीत हो ही रही थी कि इतने में जेम्स वहाँ आ पहुँचा।

पड़ोसी ने तुरन्त पूछा:—"क्यों जेम्स, इस विषय में तुम्हारी क्या राय है ?"

जेम्स ने पूछा:—"किस विषय में ?"

"यही कि साधारण लोगों की अपेक्षा अगुआओं की ज़िंदगी हमेशा ज़्यादा तकलीफ़ से भरी रहती है।"

जेम्स ने कहा:—"जब और लोगों की तकलीफ़ के विषय में मैं कुछ जानता ही नहीं तब भला मैं कैसे कह सकता हूँ कि किन लोगों की तकलीफ़ ज़्यादा है। हम लोगों की या शहर वालों की। मैं समझता हूँ कि हम लोगों की मेहनत है, तकलीफ़ नहीं है, क्योंकि मेहनत एक चीज़ है और तकलीफ़ दूसरी चीज़। मेहनत को कभी तकलीफ़ नहीं कह सकते। जो मेहनत को तकलीफ़ कहा जाय तो हमारी समझ में शहर के अमीरों की मेहनत तकलीफ़ देनेवाली है, क्योंकि उनको अपने रुपयों का हिसाब-किताब और उसकी ख़बरदारी के लिए हमेशा फ़िक्र करनी पड़ती है, इस कारण उन्हें रात रात भर नींद नहीं आती। नींद न आने से खाना नहीं हज़म होता, दस्त खुल कर नहीं होता और इस कारण शरीर नीरोग नहीं रहता। इस हिसाब से

यदि देखा जाय तो कहना पड़ता है कि अमीरों की मेहनत तकलीफ़ देनेवाली है, हम लोगों की नहीं ।''

जेम्स कभी मेहनत को तकलीफ़ नहीं कहा करता था, बल्कि मेहनत को वह इतना पसन्द करता था कि उसके भाई के चले जाने पर जब वह खेत पर जाता और कठिन परिश्रम करता तब वह पहले से कहीं अधिक प्रसन्न होता ।

एक दिन जेम्स हँसता हुआ अपनी माता के पास आकर कहने लगा:—"माँ, मैंने काम करने का एक नया ही ढँग निकाला है । वह यह कि "काम के बदले काम न कि काम के बदले दाम ।" अर्थात् यदि तुम हमारा कुछ काम करदो तो मैं भी तुम्हारा कुछ काम कर दूँगा, उसके लिए न तुम मुझे कुछ दाम दोगी न मैं तुम्हें कुछ दूँगा और मैंने मिस्टर लेम्पर से इसका बन्दोबस्त किया है । मैं उनका थोड़ा बहुत काम कर दूँगा और वे मुझे अपने बैलों को देंगे, जिससे मैं अपना काम करूँ ।" माता ने प्रसन्न होकर कहा:—"यह तुमने बहुत अच्छा काम किया । इससे तुम्हारी भी भलाई होगी और तुम्हारे साथी की भी । तुम्हारे साथी बूढ़े आदमी हैं । उनकी राय तुम्हारे लिए बड़ी लाभदायक होगी ।"

काम करने का नया तरीक़ा जो जेम्स ने जारी किया उससे दोनों को बड़ा लाभ पहुँचा । जेम्स को बैलों से बहुत बड़ी मदद मिली, और मिस्टर लैम्पर भी जेम्स सरीखे बुद्धिमान् बालक की सहायता पाकर बहुत खुश हुए । जेम्स में एक बहुत बड़ा

गुण यह था कि वह हर काम को बड़ी चतुराई से कर सकता था। इस कारण लैम्पर साहब उसकी सहायता से बहुत प्रसन्न थे।

पाठक, तुमने कदाचित् जार्ज स्टीफनसन का नाम सुना होगा। इन्होंने रेल चलाने के इंजन का आविष्कार किया था। वे कहा करते थे:—"मैंने कलों के विषय में किसी गुरु के पास कुछ भी नहीं पढ़ा था वरन् कल ही मेरा गुरु था।" ये एक पुतलीघर में काम किया करते थे। सनीचर के दिन जब आधे दिन की छुट्टी हो जाती और सब कुली मज़दूर पुतलीघर से बाहर चले जाते तब ये अकेले वहाँ रह कर कलों को खोला करते और उनके पुर्ज़ों को साफ़ किया करते थे और हर एक विषय को अच्छी तरह समझने की कोशिश किया करते थे। ऐसा करते करते इन्होंने स्वयं एक नये प्रकार की कल आविष्कृत की और इसी कल के द्वारा इन्होंने रेल चलाई। इनके विषय में जब आलोचना की जाती है तब यही कहना पड़ता है कि कल ही इनका गुरु था। इसी प्रकार यद्यपि जेम्स ने किसी पाठशाला में नहीं पढ़ा था, तोभी हमेशा उसको उसके खेत से सबक़ मिलता रहा था। उस खेत ने उसको बहुत सी अच्छी अच्छी बातें सिखाई थीं। उस खेत के कठोर परिश्रम के साथ रह कर उसमें प्रौढ़ता आगई थी। उसकी मेधाशक्ति प्रबल हो गई थी और उसका चरित्रगठन हो गया था।

इस काम के करते समय उसको पढ़ने के लिए बहुत थोड़ा

समय मिलता था, परन्तु जो कुछ समय मिलता था उसी में वह कुछ न कुछ पढ़ा करता था। पर तोभी उसकी विद्यातृष्णा कभी शान्त न होती थी।

जेम्स की माता प्रायः कहा करती थी—"बेटा, तुम्हारे लिए केवल खेत जोतने का काम करना ठीक नहीं है। तुम्हारे लिए विद्या-उपार्जन करना भी उचित है।"

इस बात के उत्तर में जेम्स कहता था:—कि यदि ईश्वर को यही मंजूर है कि मैं विद्वान् बनूँ और अच्छा काम करूँ तो वे ही कोई न कोई उपाय निकाल देंगे, परन्तु ऐसी अवस्था में विद्या का उपार्जन करना कठिन मालूम होता है।"

आठवाँ परिच्छेद



र्य नारायण डूबने ही पर थे। पश्चिमी आकाश में लालिमा छा गई थी। गड़रिये अपनी भेड़-बकरियों को जंगल से चरा कर लौट रहे थे। चिड़ियाँ अपने दिन भर की सैर के अनन्तर बसेरा लेने को जा रही थीं। बेचारे ग़रीब कुली मज़दूर भी दिन भर के कठोर परिश्रम के बाद अपने अपने घर लौट रहे थे। इतने में जेम्स नाचता, कूदता, चिल्लाता घर आया और बोला:—"माँ माँ, टामस आ रहा है।" इतना कह कर वह फिर निकल गया और टामस से मिलने को दौड़ा। माता ने इन बातों को सुन कर चाहा कि वह भी जेम्स की तरह दौड़ कर टामस से मिलने जाय परन्तु उसके बुढ़ापे ने इस उमङ्ग को रोक दिया। वह दौड़ कर बाहर न जा सकी किन्तु घर के बाहर आकर खड़ी हो गई और टामस की राह देखने लगी। थोड़ी देर बाद क्या देखती है कि दोनों भाई परस्पर एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए प्रेम से बातें करते करते चले आ रहे हैं। जब वे घर पहुँचे तब माता ने तुरन्त टामस को अपनी छाती से लगा लिया और बड़ी देर तक दोनों माँ-बेटे उसी अवस्था में खड़े रहे। दोनों आवाक्

थे । किसी के मुँह से कोई बात नहीं निकली । केवल जेम्स जब तब अपने लड़कपन की बातों से उस समय के सन्नाटे को दूर कर देता था । सात महीने के वियोग को जेम्स उसी एक मुहूर्त्त में बिलकुल भूल गया । उसके चित्त में शान्ति छा गई । माता को भी कुछ कम आनन्द नहीं हुआ ।

जब सब लोग भीतर गये तब टामस ने अपनी जेब से दो तीन मुट्ठी सोने के सिक्के निकाल कर माँ की गोद में डाल दिये । जेम्स इन सिक्कों को देख कर बहुत .खुश हुआ और मारे .खुशी के चिल्ला उठा और बोला, "माता, अब हम लोगों का नया मकान बन जायगा ।"

टामस ने कहा:—"अब एक बढ़ई मुक़र्रर करना चाहिए, क्योंकि बढ़ई वग़ैरा का काम ठीक-ठाक करके मैं फिर चला जाऊँगा । मिचिगन में अभी बहुत काम है ।"

दूसरे दिन एक होशियार बढ़ई, जिसका नाम मिस्टर ट्रीट था, बुलवाया गया और काम करने के लिए नियत किया गया । जेम्स और टामस दोनों भाई क्लीभलैण्ड में ईंट, चूना आदि लाने के लिए गये, और दो दिन बाद इन चीज़ों को लेकर लौट आये और देखा कि मिस्टर ट्रीट अपने काम को बड़ी मुस्तैदी और होशियारी के साथ कर रहा है ।

जेम्स जब तब इस बढ़ई के पास आता और उसके काम को बड़े ग़ौर से देखता और उसके औज़ारों को टटोला करता

यह देख कर मिस्टर ट्रीट ने एक दिन कहा:—"जेम्स, मालूम होता है कि तुम हमें मदद दिया चाहते हो।"

जेम्स ने तुरन्त उत्तर दिया:—"अगर कोई काम मुझे दो तो मैं करने को राज़ी हूँ।"

मिस्टर ट्रीट ने कहा:—"अच्छा इस रुखानी और हथौड़े को लो और इस तख़्ते को छील कर उसमें गड्ढा करो जैसा मैं करता हूँ।"

जेम्स ने बहुत जल्द उसमें गडढा कर दिया और कहा:—"मिस्टर ट्रीट, मैंने इसको कर लिया है और अब मुझे दूसरा दो।" मिस्टर ट्रीट ने चकित होकर पूछा:—"इतनी जल्दी कर लिया! देखें।" यह कह कर उस तख़्ते को लिया और उसको अच्छी तरह जाँचा और कहा:—"शाबाश रे बहादुर, बहुत अच्छी तरह किया है। मैं भी इससे अच्छा न कर सकता था। अच्छा लो। दूसरा बनाओ।"

इसी तरह एक एक करके उसने ६ तख़्तों में गड्ढा बना दिया और हर एक गड्ढे बड़ी सफ़ाई से बने हुए थे। तख़्ते बना देने के बाद शाम हो गई और बढ़ई घर चला गया।

दूसरे दिन जब बढ़ई आया तब उसने जेम्स से कहा:—"तुमने सूराख़ बनाना सीख लिया है। अब दूसरा काम सीखो।

जेम्स ने बहुत ख़ुश होकर पूछा:—"बताइए कौन सा काम करूँ?"

बढ़ई ने पूछा:—"तुम इन तख़्तों को सफ़ाई से गढ़ सकते हो जैसा कि मैं करता हूँ?"

जेम्स ने तुरन्त उत्तर दिया:—"मैं ज़रूर गढ़ सकता हूँ। ये तख़्ते जब गढ़ने ही के लिए बनाये गये हैं तब मैं ज़रूर गढ़ सकूँगा। मुझे दीजिए।"

बढ़ई ने दो तख़्ते जेम्स को दिये, और उसने उन्हें गढ़ना शुरू किया।

उस समय रन्दे का रिवाज बहुत कम था, और विशेष कर आरेंज के गाँव में तो था ही नहीं। रन्दे का काम बसूले ही से लिया जाता था, इस कारण रन्दे का काम बहुत मामूली तौर का हुआ करता था। मकान भी बहुत मामूली तौर के बनाये जाते थे। आज कल जैसी सफ़ाई से काम लिया जाता है उस समय कोई इतनी सफ़ाई पर ध्यान न देता था। रहने के लिए जैसा तैसा मकान बना लेते थे।

जिस समय बढ़ई तख़्तों को गढ़ रहा था उस समय जेम्स ने उस काम को अच्छी तरह ग़ौर से देखा था और उसे सीखा था। इस कारण वह इस काम को भी आसानी से करने लगा।

कप्तान सामुयेल ब्राउन जो कि बड़े प्रसिद्ध पुल बनाने वाले थे ट्वीड नदी के किनारे रहा करते थे। वे चाहते थे कि उसी ट्वीड नदी के आर पार झूलों का एक पुल बनावें। जब कि वे इसी विषय को सोच रहे थे कि कैसे इस पुल को बनावें

उसी समय एक दिन सुबह को घूमते घूमते वे अपने बाग़ की ओर गये। वहाँ अकस्मात् उन्होंने एक मकड़ी का जाला देखा। उस जाले को उन्होंने अच्छी तरह जाँचा और समझा कि वह कैसे बनाया गया है। उस जाले को देख कर उन्हें पुल बनाने का उपाय सूझ गया। उन्होंने समझ लिया कि लोहे की ज़ंजीर और लोहे के रस्सों को जोड़ जोड़ कर बनाने से वे भी एक झूले का पुल बना सकते हैं। ऐसे जाले कदाचित् हम लोग रोज़ देखा करते हैं, किन्तु उन्हें देख कर हमें पुल बनाने की बात नहीं सूझती। कारण इसका यह है कि हमारी आँखें अन्धी हैं। ऐसा होने के लिए आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण होनी चाहिए, बुद्धि में तेज़ी होनी चाहिए। जेम्स की दृष्टि भी ऐसी ही तीक्ष्ण थी। इस कारण बढ़ई को गढ़ने का काम करते देख कर उसने तुरन्त गढ़ना सीख लिया। जब वह दो एक तख़्तों को गढ़ चुका तब उसने कहा—"मिस्टर टीट, इस काम में मुझे बड़ा मज़ा आता है। यह बहुत अच्छा काम है।"

मिस्टर ट्रीट ने कहा:—"हाँ ठीक है, परन्तु जब तुम्हें दिन दिन भर इसी काम में लगा रहना पड़ेगा तब तुम्हें मज़ा न आवेगा क्योंकि इस काम को अच्छा तरह करने में चोटी से एड़ी तक पसीना आता है।"

जेम्स ने कहा:—"सिर्फ़ पसीने ही की ज़रूरत नहीं वरन और भी किसी चीज़ की आवश्यकता होती है, अर्थात् बुद्धि की ज़रूरत होती है।"

मिस्टर ट्रीट इस उत्तर पर बहुत .खुश हुआ और बोलाः—"तुमने ठीक समझ लिया है और तुम इस काम को ज़रूर अच्छी तरह कर सकोगे। हमें आशा होती है कि तुम एक अच्छे बढ़ई हो सकते हो ।"

जेम्स ने दुःखित होकर कहाः—"लेकिन हमारे लिए बढ़ई बनना कुछ सहज काम नहीं है क्योंकि हमें मौक़ा नहीं है ।"

मिस्टर ट्रीट ने कहाः—"तुम ठीक कहते हो, परन्तु एक कहावत है—'जो चाहता है वह पाता है' ।"

जेम्स ने कहाः—"माँ भी ऐसा कहा करती हैं। इस कहावत से इतना लाभ तो अवश्य ही होता है कि बहुत से कठिन काम सहल हो जाते हैं ।

जब तख़्ते रन्दे के ज़रिए साफ़ हो गये तब मिस्टर ट्रीट ने कहाः—"जेम्स, तुम्हारे लिए एक दूसरा काम है, करोगे ?"

जेम्स ने बड़ी ख़ुशी से पूछाः—"वह काम क्या है ? दीजिए ।"

ट्रीट ने कहाः—"तख़्तों में काँटा ठोकना है। इस काम में ज़्यादा मेहनत की ज़रूरत नहीं है। केवल एक बात का ख़याल रखना कि काँटे के ठीक सर पर हथौड़ा मारना चाहिए। हथौड़ा इधर उधर पड़ने से ठीक न होगा ।"

इतना कहने के बाद मिस्टर ट्रीट ने दो तख़्ते निकाल दिये और कहाः—"इनमें जैसे मैं कील ठोंकता हूँ वैसे ही तुम ठोंको।

उन तख़्तों को जोड़ कर जब जेम्स ने कील ठोंकी तब उसका निशाना कुछ तिरछा पड़ने से काँटा झुक गया, और मिस्टर ट्रीट हँसने लगे, और कहा :—जेम्स, इसमें होशियारी चाहिए।"

दूसरी बार तख़्तों को जोड़ कर और काँटा ठीक स्थान पर रख जेम्स ने कहा :—मिस्टर ट्रीट, अब मेरी होशियारी देखिए।" इतना कहते उसने ऐसा हथौड़ा मारा कि काँटा उन तख़्तों में धँस गया।

यह देख कर ट्रीट बहुत ख़ुश हुआ और बोला:—जो लड़के अपनी हार पर लज्जित नहीं होते वरन् दूनी मुस्तैदी से काम करते हैं वे ही अन्त में जीतते हैं और दिग्विजयी पुरुष होते हैं। देखो, क्यूरेन, जो कि आयरलैण्ड का रहने वाला था, एक बड़ा प्रसिद्ध वक्ता हो गया है। वह लड़कपन में बड़ा तुतला था। जिस दिन वह पहली वक्तृता देने के लिए उठा उस दिन वह इतना तुतलाया कि उसके मुँह से बात तक न निकली। यह देख कर लोग हँसने और ताली बजाने लगे। इन अपमान-सूचक बातों ने उस बालक के अन्तरात्मा को हिला दिया और उसने कहा:—"आज तुम लोग जितना चाहो हँस लो, परन्तु मैं इस तुतलेपन को अवश्य ही दूर करूँगा और तब तुम हमारी वक्तृता सुन कर दाँतों में उङ्गली दबाओगे।" क्यूरेन ने जैसा कहा थोड़े दिन में वैसा ही कर दिखाया। इसका कारण यह है कि वह अपनी हार पर लज्जित नहीं हुआ वरन् तुतलापन को दूर करने पर दृढ़प्रतिज्ञ हो गया और अन्त में वह जीत गया।"

उसके बाद जेम्स ने कई तख़्तों में कीलें लगाईं और उस काम को पूरा कर दिया।

मकान पूरा हो जाने पर बढ़ई घर चला गया, परन्तु जेम्स के चित्त में यह बात समाई कि वह बढ़ई का काम करके कुछ रुपया कमावे। उसने अपने मन की बात किसी से प्रकाशित नहीं की। वह दिन रात चुपचाप सोचा करता था।

जब बहुत दिन बीत गये और वह इस बात को छिपा न सका तब उसने एक दिन अपनी माँ से कहा:—"मैंने रुपया कमाने का एक उपाय सोचा है। यदि अनुमति दो तो कहें।"

माता ने कहा:—"वह क्या है, कहो बेटा।"

उसने कहा:—"बढ़ई का काम करके रुपया कमाऊँगा। मिस्टर ट्रीट के पास जाने से वे हमें कुछ न कुछ काम अवश्य ही दे देंगे।" इसके पहले वह मिस्टर ट्रीट से काम का बन्दोबस्त कर आया था। ज्योंही माता इस बात पर राज़ी हुईं उसने तुरन्त कहा:—"मैं कल सबेरे काम करने जाऊँगा। मिस्टर ट्रीट ने मुझे काम दिया है।"

माता इस बात को सुन कर बहुत चकित हुईं और कहने लगीं, "तुम काम करने तो जाओ परन्तु दो तीन घण्टे से अधिक काम कदापि न करना। दो तीन घंटे में ही लौट आना।"

जेम्स ने कहा:—"माता, यदि कल मैं दो तीन घंटे में लौट आऊँ तो तुम समझना कि या तो मेरा कोई अङ्ग भङ्ग हो गया

है अथवा वह काम पूरा हो गया है, इस कारण लौट आया हूँ। दो तीन घंटे में लौटने का कोई दूसरा कारण न होगा।"

दूसरे दिन सवेरे जेम्स मिस्टर ट्रीट के पास गया। उसने उसको रन्दा करने के लिए तख़्ते निकाल दिये और कहा:—"मैं तुम्हें पचास तख़्ते रन्दा करने के लिए एक रुपया दूँगा।"

ये बातें तै हो जाने पर जेम्स ने अपने कपड़ों को उतार कर रन्दा करना आरम्भ किया और वह दिन भर बराबर वही काम करता रहा।

उसने शाम को कहा:—"मिस्टर ट्रीट" मैंने सौ तख़्ते छील डाले हैं।"

ट्रीट को यह बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ, परन्तु गिन कर जब देखा तो पूरे सौ तख़्ते छिले हुए मिले। उसने कहा:—"देखो जेम्स, इतनी मेहनत तुम्हारे लिए अच्छी नहीं है क्योंकि इससे तुमको बड़ी हानि होगी। तुमने जितना काम आज किया है उसका आधा भी करना उचित नहीं है।"

जेम्स ने इन बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया। अन्त में दो रुपया पाकर हँसता कूदता अपनी माँ के पास गया और झट पट दो रुपये निकाल कर माँ की गोद में डाल दिये।

माँ इन रुपयों को पाकर कुछ बोल न सकी। चुप रह गई।

———

नवाँ परिच्छेद ।

मिस्टर बाइंटन नाज रखने के लिए एक खत्ता बनवाना चाहते थे, और उन्होंने मिस्टर ट्रीट को इस काम के लिए मुक़र्रर किया था। जब मिस्टर ट्रीट ने काम करना आरम्भ कर दिया उसके दो तीन दि नके बाद वह एक दिन जेम्स की विधवा माता से मिलने गया। उनसे मिलकर उसने कहा:—"यदि जेम्स को काम करने का अवसर हो और काम करने की इच्छा भी हो तो कृपा करके उसे मेरे पास भेज दीजिएगा, क्योंकि मेरे पास खत्ता बनाने का एक काम आया है।"

इस बात के समाप्त होते न होते जेम्स वहाँ आ पहुँचा और उसने बड़ी प्रसन्नता से कहा:—"मिस्टर ट्रीट, मुझे अवसर भी है और काम करने की इच्छा भी पूरी है। क्या मैं कल से काम करने आऊँ?"

ट्राट ने कहा:—"हाँ कल सबेरे से तुम आना। मैं तुम्हें एक रुपया रोज़ दूँगा।" इतना कह कह कर मिस्टर ट्रीट वहाँ से चला गया।

जेम्स की माँ ने कहा:—"देखो बेटा, तुम इस काम को नहीं जानते। इसे तुमको सीखना होगा। एक बात याद रखना

कि जिस किसी काम को तुम करो उसे पूरी तौर से सीख कर करो । अधूरा काम अच्छा नहीं होता ।"

जेम्स ने इन बातों को मान लिया और माँ ने जैसा कहा वैसा ही किया ।

दूसरे दिन सबेरे वह मिस्टर ट्रीट के मकान पर गया और जाते ही उससे कहा:—"मिस्टर ट्रीट, मुझे क्या करना होगा । कृपा करके बता दीजिए और एक बार दिखा दीजिए ताकि मैं उसे अच्छी तरह सीख लूँ और तब करूँ ।"

मिस्टर ट्रीट ने कहा:—"मैं जिस काम को कर रहा हूँ उसे तुम ग़ौर से देखो और समझने की कोशिश करो । जहाँ समझ में न आवे वहाँ हमसे पूछ लेना । मैं तुमको सब बातें बताता रहूँगा ।"

जेम्स ने वैसा ही किया और ट्रीट भी उसे दिन भर काम दिखाता, बताता और सिखाता रहा । अन्त में उसने दिन भर में काम को अच्छी तरह सीख लिया, और दूसरे दिन काम करना शुरू किया ।"

चालीस दिन के बाद काम समाप्त हो गया । तब मिस्टर ट्रीट ने प्रसन्न होकर कहा:—"जेम्स, तुमने चालीस दिन में चालीस रुपये कमाये हैं उनको लो और घर जाओ, और फिर जब कभी काम लगेगा मैं तुम्हें बुला लूँगा ।"

मिस्टर ट्रीट को सलाम कर जेम्स उछलता-कूदता अपनी

माँ के पास गया और सब रुपये उनकी गोद में रख दिये । मां भी बहुत .खुश हुई ।

जाड़े के दिनों में जब स्कूल खुला तब उसने भी और लड़कों के साथ स्कूल जाना आरम्भ किया । छुट्टियों में उसने घर पर गणित शास्त्र को अच्छी तरह पढ़ा था । इस कारण उसमें उसने बड़ी निपुणता प्राप्त कर ली । पाठशाला के लड़कों का यह ख़याल था कि जेम्स उन लोगों के शिक्षक से भी अधिक जानता है ।

एक दिन ऐसा हुआ कि मास्टर साहब ने क्लास में एक सवाल दिया जिसको कोई लड़का न कर सका । तब मास्टर साहेब ने स्वयं उसको किया परन्तु उनका भी जवाब किताब से न मिला । तब उन्होंने कहा:—"किताब में जवाब ग़लत है । .खैर, मैं इसे कल फिर करूँगा ।"

दूसरे दिन मास्टर साहब ने फिर लड़कों से पूछा:—तुमने सवाल किया है ?" लड़कों ने उत्तर दिया:—"सवाल तो किया है परन्तु जवाब किताब से नहीं मिलता ।"

तब मास्टर साहब ने बड़ी दृढ़ता से कहा:—"किताब का जवाब अवश्यही ग़लत है ।"

इतने में जेम्स खड़ा हुआ और बोला:—"मैंने उस सवाल को किया है और मेरा जवाब किताब से भी ठीक मिलता है ।"

मास्टर ने उसकी स्लेट को अच्छी तरह जाँचा और देखा कि जवाब ठीक है । तब उनको बड़ा क्रोध हुआ और वे कुछ

लज्जित भी हुए; परन्तु कुछ कह न सके। लड़के इनका विचार देख कर बहुत ख़ुश हुए, और तब से उन लोगों को पूरा विश्वास होगया कि जेम्स उन सभों से बहुत अधिक जानता है।

एक दिन जेम्स और उसका एक मित्र डेभिड दोनों ने मिल कर एक दोस्त से मिलने का विचार किया।

जेम्स ने तुरन्त कहा:—"इतवार के दिन हम न जावेंगे, क्योंकि वह भजन करने का दिन है।"

डेभिड ने कहा:—"तो और किसी दिन जाना असम्भव ही है।"

जेम्स ने कहा:—"उस दिन हमारी माँ हमें न जाने देगी; और कुछ ठहरो जब मौक़ा आवेगा तब जायँगे।"

डेभिड ने कहा:—"माँ से बिना कहे चुपचाप चले चलो, क्योंकि न जाने फिर ऐसा मौक़ा कब मिले।"

जेम्स ने कहा:—"अगर मौक़ा न मिला तो न जावेंगे, परन्तु माता से बिना कहे हम कदापि न जावेंगे, चाहे जाना हो और चाहे न हो।"

डेभिड चुप-चाप घर लौट गया और कुछ न बोला।

ऊपर की बात-चीत से जेम्स की मातृ-भक्ति और कर्त्तव्य-परायणता का भलीभाँति परिचय मिलता है।

छोटे छोटे पशुओं पर जेम्स कितना दयालु था, नीचे का व्यवहार पढ़ कर तुम्हें पता लग जायगा।

एक दिन वह अपनी छोटी बिल्ली को साथ लेकर बाग़ में घूमने गया। वहाँ उसका मित्र डेभिड भी अकस्मात् आ पहुँचा। डेभिड ने वहाँ जाते ही उस बिल्ली पर ईंट फेंकना आरम्भ किया। यह देख कर डरके मारे बिल्ली घर भाग गई। तब जेम्स ने डेभिड से कहा:—"पशुओं पर अत्याचार करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। वे अनबोल जानवर हैं; थोड़े ही में डर जाते हैं।"

डेभिड ने कहा:—"मैं नहीं जानता था कि यह बिल्ली तुम्हारी है। नहीं ढेला न फेंकता। मैंने उसको मारा तो नहीं।"

जेम्स ने कहा:—"मारा नहीं, परन्तु डर तो दिखाया, और दूसरे यह कि वह चाहे मेरी बिल्ली हो और चाहे किसी की हो तुम्हें उन पर अत्याचार करना ही न चाहिए।"

डेभिड इस उत्तर पर बहुत लज्जित हुआ और जेम्स की बातों पर मज़ाक करता हुआ घर चला गया।

चाहे मज़ाक करके डेभिड ने अपनी लज्जा प्रकट न होने दी परन्तु उसने अपनी मूर्खता अवश्य ही प्रकाश की।

जेम्स की विचारशक्ति और सहानुभूति की भी बानगी देख लीजिए:—

जिस पाठशाला में जेम्स पढ़ा करता था उसी में एक छोटा लड़का भी पढ़ता था। उस बेचारे का बाप न था और कोई बड़ा भाई भी उसकी मदद के लिए न था। पाठशाला के लड़के प्रायः उस बेचारे को छेड़ा करते थे।

जेम्स था तो केवल १३ वर्ष का बालक, परन्तु उसके हाथ-पैर आदि अंग बड़े लम्बे चौड़े और बलिष्ठ थे, देखने में वह एक दृढ़ युवा मनुष्य मालूम होता था ।

एक दिन उसने लड़कों से कहा:—"देखो, उस बेचारे अनाथ को छेड़ना तुम लोगों को उचित नहीं है। उसका कोई बड़ा भाई भी नहीं है कि जो उसकी मदद करे। अतएव आज से तुम लोग उसे मत छेड़ना। यदि उसे छेड़ना हो तो मुझे छेड़ लेना।"

इतना सुनते ही लड़कों ने हँसी दिल्लगी करना आरम्भ किया। उनमें से एक ने कहा:—"तो क्या आज से तुम उसके बाप और भाई का काम करोगे।"

जेम्स ने उत्तर दिया:—"कम से कम जब तक वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकता तब तक मैं उसकी सहायता करूँगा।"

बड़ी देर तक हँसी-दिल्लगी करने के बाद सब लड़के मान गये। उस दिन से सबने उसको छेड़ना बन्द कर दिया।

छुट्टियों में उसने अँगरेज़ी की कई किताबें पढ़ी थीं। उनमें से राबिन्सन् क्रूसो को वह बहुत पसन्द करता था। और कई बार उसने उसको पढ़ा था। एक और पुस्तक जिसका नाम "एलोनजो मेलिसा" था उसको भी उसने कई बार पढ़ा था, परन्तु वह कहा करता था कि वह पुस्तक राबिन्सन् क्रूसो के तुल्य न थी।

मिस्टर ट्रीट को फिर एक खत्ता बनाने की ज़रूरत हुई। इस कारण उसने एक दिन जेम्स से मिल कर कहा:—"यदि काम किया चाहते हो तो कहो, मेरे पास काम है।"

जेम्स ने कहा:—"ज़रूर करूँगा, कबसे करना होगा; बताइए।"

"जबसे तुम्हारा जी चाहे।"

"अच्छा, कल से आऊँगा।"

मिस्टर ट्रीट ने इतना कह कर उनसे बिदा ली और जाते समय कह दिया कि तुम्हारा मेहनाता उतना ही होगा जितना पहले था।

दूसरे दिन से जेम्स काम पर जाने लगा और एक महीने में काम समाप्त होगया।

अबकी बार मिस्टर ट्रीट को कुछ बताना नहीं पड़ा। जेम्स ने स्वयं ही सब काम कर लिया।

काम के पूरा होने पर मिस्टर ट्रीट ने तीस रुपये निकाल कर जेम्स को दिये और जेम्स उनको लेकर वैसा ही नाचता-कूदता घर गया, और उसने सब रुपये माँ को जा दिये।

इसी प्रकार जेम्स लिखता-पढ़ता भी था और साथ ही बढ़ई का काम करके रुपया भी कमाता था।

एक और घटना का उल्लेख करके इस परिच्छेद की समाप्ति की जायगी।

एक दिन एडभिन् मेप्स ने उससे कहा:—"भाई, मैं अपने बाप से भेंट करने क्लीभलैण्ड जाऊँगा और चाहता हूँ कि तुम भी मेरे साथ चलो।"

जेम्स सम्मत हो गया और बोला:—"मैं इस बात को माँ से पूँछ लूँ।"

उसकी माता ने कुछ रोक टोक न की और दूसरे दिन सबेरे दोनों मित्रों ने अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर क्लीभलैण्ड की ओर यात्रा आरम्भ कर दी।

दोनों निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये और काम समाप्त करने के बाद लौट भी आये। इन दोनों के घोड़े बहुत तेज़ थे, इस कारण जब वे बड़ी तेज़ी से चले आ रहे थे तब रास्ते में एक और आदमी इनके पीछे पीछे आरहा था। वह किसी तरह इनके आगे नहीं बढ़ सकता था, इसलिए इन लोगों को गालियाँ देता था कि तुम लोग हट जाओ। भला ये लोग कब हटनेवाले थे। एडभिन मेप्स ने कहा:—"यदि सामर्थ्य हो तो आगे बढ़ जाओ, रास्ता तो पड़ा है।"

इस बात पर वह और झुँझला गया, परन्तु कर कुछ न सका।

रास्ते में एक पड़ाव आया। वहाँ दोनों मित्र उतरे और थोड़ी देर तक आराम करते रहे। इतने में वह आदमी भी घोड़ा दौड़ाता वहाँ आ पहुँचा। आते ही उसने इन दोनों को गालियाँ

देनी शुरू कीं और कहा:—"बदमाश लड़को, जी में आता है कि तुम लोगों को एक एक चाबुक मारूँ।"

इतने में जेम्स आगे बढ़ आया और बोला:—"यदि मारने का इरादा करते हो तो पहले मुझे मार लो तब उसे मारना।"

जेम्स के बलिष्ठ हाथ-पैरों को देख कर वह डरा और उसने कहा:—"तुम्हें नहीं, तुम्हें नहीं, उसको मारूँगा।"

तब जेम्स ने घुड़क कर कहा "तुम उसे क्यों मारोगे। दोष तो तुम्हारा ही है। तुम्हारे लिए रास्ता बहुत था, तुम गये क्यों नहीं। तुम्हारा घोड़ा तेज़ नहीं दौड़ सकता था। अतएव ग़लती तुम्हारे घोड़े की है, न कि उसकी। तुम उसे व्यर्थ गालियाँ दे रहे हो। ख़बरदार, अब गाली मत बको। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो घर लौट जाओ।"

इतना सुनते ही वह डर गया और तुरन्त घोड़े पर सवार हो निकल भागा।

इसके बाद दोनों मित्र हँसते हुए घर लौट आये।

दसवाँ परिच्छेद ।


क किसान, जिसका नाम मिस्टर स्मिथ था. और जो पोदीना की खेती किया करता था, एक दिन जेम्स की विधवा माता से मिला और बोला:—"पोदीना बोने का समय आगया है। इस कारण मैंने बीस लड़कों को उस काम के लिए नियत किया है। मैं चाहता हूँ कि जेम्स को भी उसी काम में लगाऊँ, क्योंकि मैंने देखा है कि जेम्स लड़कों से बहुत अच्छी तरह काम ले सकता है। उसकी सहायता मिलने से हमारा काम बहुत अच्छी तरह हो जायगा। यदि आप आज्ञा दीजिए तो मैं उससे इस विषय में बातचीत करूँ।"

जेम्स की माता ने कहा:—"आज कल वह अपनी खेती के काम में ऐसा फँसा हुआ है कि उसको बिलकुल फुर्सत नहीं है।"

मिस्टर स्मिथ ने बहुत कुछ विनती की और कहा:—"आप कृपा करके किसी तरह उसको मेरे काम में नियुक्त करा दीजिए, नहीं तो यह काम रुक जायगा।"

इसके बाद दोनों में बहुत तर्क-वितर्क हुआ परन्तु अन्त में

वह राज़ी हो गई और जेम्स को वहाँ काम करने को आज्ञा दे दी।

दूसरे दिन जेम्स काम पर गया और जाते ही उसने लड़कों से दोस्ती कर ली और अपनी स्वाभाविक मुस्तैदी से काम आरम्भ किया, और थोड़े ही दिनों में काम पूरा कर दिया।

जब जेम्स की उम्र १५ वर्ष की थी तब वह मिस्टर ट्रीट के साथ एक गोदाम बनाने के काम में लगा हुआ था। गोदाम का मालिक इस लड़के का रंग-ढंग, चाल-ढाल देख कर बहुत मोहित होगया था और चाहता था कि उसको अपने काम में लगा ले।

जब उन लोगों का गोदाम बनाना पूरा होगया तब गोदाम के मालिक मिस्टर वार्टन ने एक दिन जेम्स से कहा :—"यदि तुम हमारे कारख़ाने में काम करना स्वीकार करो तो मैं तुम्हें २८) रुपये मासिक दूँगा; और लोगों को यद्यपि २४) ही रुपये देता हूँ, परन्तु तुम्हें चार रुपये अधिक दूँगा।"

जेम्स ने कहा :—"मैं अपनी माता से बिना पूछे इस बात का कुछ भी उत्तर नहीं दे सकता।"

मिस्टर वार्टन ने कहा :—"अच्छा तुम अपनी माता से पूछ कर बहुत जल्द इस बात का उत्तर देना क्योंकि मैं बहुत चिन्तित रहूँगा।"

जेम्स ने कहा:—"यदि मैं काम करूँ तो आगामि सोमवार

को अवश्यही आपके पास उपस्थित हूँगा और यदि न करूँ तो न आऊँगा।" यह कह कर जेम्स वहाँ से घर चला गया।

मिस्टर वार्टन एक सौदागर थे जो सज्जी मिट्टी का कारोबार किया करते थे। राख ख़रीद कर उससे सज्जी निकालना उनका व्यवसाय था।

जेम्स ने जब अपनी माता से उस नये काम के विषय में कहा तब उन्होंने उत्तर दिया कि वह काम तुम्हारे लिए अच्छा न होगा, क्योंकि उस काम में अनपढ़े नीच लोगही रहा करते हैं। यदि तुम उनकी संगत में पड़ोगे तो तुम्हारा चरित्र भी दूषित हो जायगा।

यह बात जेम्स के जी में खटक गई और उसने कहा:—"मैं वहाँ काम करने जाऊँगा या अपना चरित्र बिगाड़ने। जिस समय काम न रहेगा उसी समय चरित्र बिगाड़ना सम्भव हो सकता है, और वहाँ जाकर मैं इस बात को भी जानना चाहता हूँ कि मेरा चरित्र उस संगत में भी रह कर वैसा ही निर्मल और पवित्र रहेगा जैसा कि अब है।"

माता ने उत्तर दिया:—"बेटा, मनुष्य की विचारशक्ति हर घड़ी ठीक नहीं रहती, किस समय विचलित होती है कोई नहीं कह सकता। इसलिए बुरों से दूर रहना ही अच्छा है।"

जेम्स ने कहा:—"माता, मेरे वहाँ जाने के दो कारण हैं। पहला:—मासिक २८) रुपये का प्रलोभन, और दूसरा यह कि मैं संसार को यह दिखा सकूँ कि यदि मैं अपने कर्त्तव्यों पर अटल

बना रहूँ तो बुरी संगत भी मेरे ऊपर कोई असर नहीं डाल सकती ।"

अन्त में माता ने पुत्र की बात मान ली और उसे वहाँ जाने की आज्ञा दे दी ।

सोमवार के दिन प्रातःकाल जेम्स ने अपना सामान इकट्ठा करके घोड़े पर सवार होकर क्लीभलैण्ड की ओर यात्रा की और दस मील रास्ता तै करके वह दो तीन घंटे में वहाँ पहुँच गया ।

वहाँ मिस्टर वार्टन जेम्स की राह देख रहे थे । अतएव उसको ठीक समय पर पाकर वे बहुत .खुश हुए । उसके रहने के लिए उन्होंने कमरा बता दिया और उसका सामान उसी कमरे में रखवा दिया और तब उसे साथ लेकर कारख़ाने में गये।

कारख़ाना बहुत ही मैला कुचैला था । चारों ओर राख, धुआँ और कारिख से भरा हुआ था, परन्तु जेम्स को उस मैले धुआँदार कारख़ाने में बैठ कर काम करने की ज़रूरत न हुई । मिस्टर वार्टन ने उसको हिसाब-किताब रखने के काम में नियुक्त किया । बेचने-ख़रीदने का काम भी वही किया करता था । इस काम को उसने बहुत ईमानदारी और होशियारी से निबाहा । थोड़े ही दिन में मिस्टर वार्टन को विश्वास हो गया कि यह बहुत ईमानदार लड़का है । इस कारण कारख़ाने का सब काम इसी के अधीन कर दिया ।

एक दिन एक आदमी कई बोरों में भर कर राख लाया

और बोला:—"इनमें २५ मन राख है । इनको आप ले लीजिए और मुझे दाम दीजिए" ।

जेम्स ने कहा :—"इनको उतारो । मैं पहले उन्हें तोल कर देख लूँ तब दाम दूँगा ।"

जेम्स के इस काम पर आने के पहले राख वाले जितना कहा करते मिस्टर वार्टन उतना ही विश्वास करके दाम दे दिया करते थे । अब जेम्स के पास एक नई बात सुन कर सबके सब चकित हुए; पर कुछ बोल न सके । बोरे तोले गये और २५ मन की जगह २२ ही मन निकले । जेम्स इनको २२ मन राख का दाम दे ही रहा था कि इतने में मिस्टर वार्टन वहाँ आ पहुँचे । वे सब हाल सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और जेम्स की बड़ी प्रशंसा करने लगे ।

जेम्स जिस कमरे में रहा करता था उसी कमरे की एक आलमारी में कई पुस्तकें थीं । जब वह कारख़ाने का काम समाप्त करके घर आता तब उन्हीं पुस्तकों को पढ़ा करता और गणित के सवाल लगाया करता था ।

मिस्टर वार्टन तो पढ़े लिखे न थे पर इनकी एक युवती लड़की थी । यह अच्छी पढ़ी लिखी थी । ये पुस्तकें उसी की ख़रीदी हुई थीं । वह लड़की भी प्रायः इनके पास आकर बैठती और कहती "तुमने फलानी किताब पढ़ी है । वह किताब अच्छी है उसको पढ़ो ।" ऐसी ऐसी बातें वह प्रायः कहा करती थी ।

प्रति दिन जेम्स १२ बजे रात तक पढ़ा करता था और जब घर के सब लोग सो जाते तब वह सोता था।

एक दिन ऐसे ही पढ़ते पढ़ते रात के बारह बज गये और प्रायः एक बजने के लगभग था कि वह अपनी चारपाई पर गया, परन्तु उसे नींद न आई। कई एक चिन्तायें उसके मन को विकल कर रही थीं। वह अपने मनही मन सोचता था कि कितने दिन तक मैं इसी सब्ज़ी बेचने के काम में लगा रहूँगा। दुनिया में कितनी नई चीज़ें हैं, कितने नये काम रोज़ हुआ करते हैं, मैं उनको कुछ भी नहीं देखता। उनके विषय में कुछ भी नहीं जानता। मैं केवल एक अँधेरी कोठरी में बन्द हूँ। मुझे यहाँ से बाहर जाना ही होगा और जैसे बने दुनिया को देखूँगा। यह सोचते सोचते उसने अपने मन में कहा कि मैं जहाज़ का मल्लाह बनूँगा। इस ख़याल ने उसके चित्त को ऐसा अधीर किया कि उसे नींद नहीं आई। वह रात भर योंही करवटें बदलता रहा। उसने अपने मन में संकल्प कर लिया कि जितनी जल्दी हो सकेगा मैं यहाँ से निकलूँगा और मल्लाह बनूँगा।

इसके बाद बहुत दिन तक उसे वहाँ रहना न पड़ा। एक घटना ने उसके चित्त को ऐसा दुःखित किया कि उसे वहाँ से चला जाना पड़ा। वह घटना यह है :—"मिस्टर वार्टन की लड़की का विवाह नहीं हुआ था। विवाह का बंदोबस्त होरहा था। एक लड़का इस लड़की से मिलने के लिए आया करता था। इसी के साथ विवाह का बन्दोबस्त होरहा था। एक दिन

वह लड़का रात को आया और एक बड़े कमरे में बैठ कर उस लड़की से बातें कर रहा था। उसके माता-पिता भी उसी कमरे में एक कोने में बैठे बातें कर रहे थे, और जेम्स भी उसी कमरे में बैठ कर गणित का हिसाब लगा रहा था। जब रात बहुत बीत गई तब माता-पिता, वहाँ से उठ कर चले गये पर जेम्स बैठा हुआ अपना हिसाब ही लगाता रहा। उस नव-दम्पति को जेम्स का वहाँ रहना बहुत बुरा मालूम होता था। इस कारण लड़की ने घृणापूर्वक कहा :—"वेतन-भोगी नौकरों के लिए इतनी रात तक बैठे बैठे पढ़ना अच्छा नहीं है। अब तुम जाओ, सोओ।" जेम्स को यह कटाक्ष बहुत ही असह्य मालूम हुआ। वह चुपचाप उठ कर वहाँ से चला गया और अपने बिछौने पर लेट गया। नींद नहीं आई—आई केवल वही एक चिन्ता 'वेतन भोगी नौकर'। जेम्स ने दृढ़ संकल्प किया कि आज से अब मैं वेतनभोगी नौकर न रहूँगा। ऐसी दुश्चिन्ता में किसी तरह रात कटी। सुबह होते ही उसने मिस्टर वार्टन से कहा:—"आप मेरी तनख्वाह चुका दीजिए। मैं अब यहाँ न रहूँगा, मैं घर जाऊँगा।" मिस्टर वार्टन ने कितना ही समझाया पर उसने एक न सुनी। वह रुपया लेकर घर चला ही गया।

ग्यारहवाँ परिच्छेद



म्स ने घर लौट कर अपनी माता से कहा:–"अब मैं नौकरी न करूँगा। बहुत हो चुका। अब मैं और कुछ करने की कोशिश करूँगा जिससे संसार में हमारी भी कुछ प्रतिष्ठा हो।"

माता ने आश्चर्य में होकर पूछा:—"क्यों! क्या हुआ? इतने नाराज़ क्यों मालूम होते हो? क्या रुपया नहीं दिया?"

जेम्स ने ११२ रुपये निकाल कर माँ के सामने रख दिये और कहा:—"रुपया तो हमको पूरा मिल गया और मिस्टर वार्टन बड़े नेक आदमी हैं। उन्होंने हमारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया, परन्तु उनकी लड़की के व्यवहार से हमारा चित्त बहुत दुःखी हुआ है।"

यह कह कर जेम्स ने उस रात का सारा हाल कह सुनाया। जेम्स की माता ने कहा:—"बेटा, तुमने इस काम में बहुत जल्दी की।"

जेम्स ने कहा:—"जल्दी या देरी मैं कुछ नहीं जानता; परन्तु मैंने नौकरी छोड़ दी।"

"तुम्हें मिस्टर? बार्टन की कृपाओं पर अधिक ध्यान रखना

चाहिए था, उस लड़की की बातों का नहीं। वेतनभोगी नौकर होने में कोई बेइज्ज़ती नहीं है।"

जेम्स ने कहा—"मैं जानता हूँ कि वेतन लेकर नौकरी करने में कोई बेइज्ज़ती नहीं है, परन्तु जिस रीति से उस लड़की ने कहा था वह बहुत अपमानसूचक है। ख़ैर जो हो, मैंने भी ठान लिया है कि मैं भी संसार में कोई बड़ा काम अवश्य ही करूँगा।"

माता के साथ इतनी बात-चीत करके जेम्स को अपनी खेती का ध्यान आया और वह तुरन्त उठ कर खेत देखने के लिए चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने खेत का काम-काज अच्छी तरह देखा भाला और फिर घर लौट आया। दूसरे दिन सवेरे उठ कर प्रातःक्रिया समाप्त करने के बाद जेम्स अपने खेत पर गया और उस दिन से अपनी खेती के काम में जी-जान से लग गया।

कुछ दिन तक अपने खेत पर काम करने के बाद उसने सुना कि उसके एक चाचा जो कि न्यूवर्ग में रहा करते हैं वे एक जंगल कटवा रहे हैं और इस कारण उन्हें लकड़ी चीरने वालों की ज़रूरत है। जेम्स ने ख़बर पाते ही तुरन्त अपनी माँ से इस विषय को कह सुनाया और कहा कि मैं वहाँ जाऊँगा।

माता ने इस बात को सुन कर कहाः—"तुम वहाँ जासकते हो, क्योंकि तुम्हारी बहिन भी वहीं ब्याही है। वहाँ रहने में तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न होगा।"

दूसरे दिन जेम्स ने न्यूवर्ग की राह ली और वहाँ पहुँच कर उसने अपने चचा से भेंट की और अपना मतलब कह सुनाया।

चचा ने इस बात को सुन कर कहा—"मैं तुम्हारे आने से बहुत प्रसन्न हुआ। तुम देखने में पूरे एक जवान आदमी मालूम पड़ते हो और हमें आशा होती है कि तुम इस काम को अच्छी तरह कर सकोगे, परन्तु यह बहुत कठिन काम है। कदाचित् तुम इस काम को करते करते ऊब उठोगे; और फिर सामने ही गर्मी का मौसिम आने वाला है। उस समय तुम काम न कर सकोगे।" जेम्स ने कहा:—"मैं इस काम को बहुत आसानी से कर सकूँगा पर इतना कहना अपना ठीक है कि गर्मी में मैं न कर सकूँगा, परन्तु दो महीने तो अवश्य ही कर सकूँगा। आप कितना काम कराना चाहते हैं ?"

मैं सब मिला कर सौ कुन्दे चिरवाया चाहता हूँ। हर एक कुन्दे आठ फुट लम्बे, चार फुट चौड़े और चार ही फुट मोटे होंगे।"

जेम्स ने पूछा:—"इस काम के लिए आप कितनी मज़दूरी देंगे ?"

चचा ने कहा—"एक रुपया फ़ी कुन्दा चिरवाई दूँगा।"

"तो मैं पचास दिन में इस काम को समाप्त कर दूँगा।"

जेम्स की बात सुन कर चचा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा:—"दो कुन्दे रोज़ चीरना कुछ सहल काम नहीं है।

जो लोग हमेशा लकड़ी चीरने का काम किया करते हैं वे भी मुश्किल से दो कुन्दे रोज़ चीर सकते हैं।"

जेम्स ने कहा:—"मुझे विश्वास है कि मैं इतना काम रोज़ आसानी से कर लूँगा।"

इतना कह के जेम्स वहाँ से चला गया और अपनी बहिन के पास गया और सब हाल कह सुनाया।

छोटे भाई को बहुत दिन के बाद देखने से बहिन बहुत खुश हुई और उसने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया।

दूसरे दिन सबेरे से जेम्स ने काम करना शुरू कर दिया।

जिस मैदान में लकड़ियाँ चीरी जा रही थीं उसी के सामने कुछ दूरी पर एक प्रशान्त सागर था। उसकी बड़ी बड़ी लहरें आ आ कर किनारे पर टकराती थीं, और छोटे बड़े सैकड़ों हज़ारों जहाज़ बहते हुए देख पड़ते थे। उन जहाज़ों को देख कर जेम्स का जी आनन्द के मारे नृत्य किया करता था और वह सोचा करता था कि वह दिन कब आवेगा जब मैं भी इसी तरह जहाज़ पर सवार होकर विदेशों में भ्रमण करूँगा। वह घंटों इसी सोच में खड़ा रहता और उन जहाज़ों की ओर देखा करता।

हफ़्ते भर के बाद देखा कि उसके एक साथी ने भी उतने ही कुन्दे चीरे हैं जितने कि उसने चीरे हैं। और उसकी कुल्हाड़ी भी उतनी तेज़ नहीं चलती थी जितनी कि जेम्स की। अतएव उसने अपनी बहिन से इसका कारण पूछा।

बहिन ने कई एक कारण बताये पर उसको एक भी पसन्द न हुआ । अन्त में उसने स्वयं ही इसका कारण स्थिर करके बताया कि मेरा साथी सुबह से शाम तक बराबर अपना काम ही करता रहता है, समुद्र अथवा जहाज़ आदि उसके चित्त को आकर्षित नहीं करते । यही कारण है कि वह इतने कुन्दे चीर सका है। उस दिन से जेम्स होशियार हो गया और पचास दिन में काम पूरा कर दिया और सौ रुपये लेकर बहन को अपने खाने-पीने का ख़र्चा देकर मकान लौट गया और बाक़ी रुपये माँ को जा सौंपे ।

बारहवाँ परिच्छेद ।

लकड़ी चीरने का काम पूरा करके जब जेम्स घर लौटा तबसे उसका चित्त बहुत दुखी रहा करता था। किसी काम में उसका जी न लगता। अपनी माता से भी अधिक बात-चीत न किया करता था। चित्त का परिवर्त्तन देख कर माता सोचा करती थी कि कदाचित् उसका पुत्र समुद्र-यात्रा के लिए व्याकुल है और इसी कारण वह किसी से बात-चीत नहीं करता, परन्तु इस विषय को पुनरुत्थापन करने का साहस माता में न था इस कारण वे भी चुप साधे हुए थीं।

कुछ दिन ऐसी अवस्था में बीतने के बाद जेम्स ने एक दिन कहा:—"माता, तुम नहीं जानती हो कि समुद्र-यात्रा के लिए हमारा चित्त कितना व्याकुल है, और जब मैं तुमसे इस विषय को कहता हूँ तभी तुम इन्कार कर देती हो और नाराज़ हो जाती हो। इससे हमारा मन बहुत दुखी होता है। आज तुम हमसे कहो कि तुम हमें समुद्र-यात्रा के लिए जाने दोगी या नहीं।"

माता ने पूछा:—"कहाँ जाओगे?"

"कहाँ जाऊँगा इसका पता नहीं है, परन्तु जहाज़ में नौकरी करके देश-भ्रमण करने के लिए अटलांटिक महासागर के पार जाऊँगा।"

माता ने कहा:—"यही तो पागलपन है! कहाँ जाओगे उसका पता नहीं और कहते हो 'जायँगे'।" ऐसी दशा में भला तुम्हारा जाना कैसे सम्भव हो सकता है। मेरी बात याद रक्खो कि समुद्र की नौकरी तुम्हें कभी अच्छी न लगेगी और तब तुम सोचोगे कि माँ का कहना मानते तो अच्छा होता।"

जेम्स ने कहा:—"यदि समुद्र की नौकरी हमें अच्छी न लगेगी तो मैं नौकरी छोड़ कर घर लौट आऊँगा।"

माँ ने कहा:—समुद्र की नौकरी क्या ऐसी वैसी थोड़ी ही होती है कि जब जी चाहा घर लौट आये। समुद्र की नौकरी में आज तुम यहाँ हो, दस दिन बाद हज़ार मील दूर पर जा पड़ोगे। और, मान लो कि यदि तुम जहाज़ में सवार होकर चीन देश में पहुँच गये और वहाँ जाकर तुम्हारा जी घबराया और तुमने घर आना चाहा तो क्या तुम किसी तरह तुरन्त घर आ सकते हो? तुमको घर लौटने में महीनों लग जायँगे और सैकड़ों रुपये ख़र्च हो जायँगे। यदि तुम समुद्र की नौकरी करना ही चाहते हो तो यहाँ पास ही आएरी नामक एक झील है। वहाँ जाकर किसी जहाज़ में नौकरी कर लो ताकि जब जी चाहे घर लौट आ सको।"

कुछ काल तक सोचने के बाद जेम्स ने कहा:—"अच्छा, मैं वहीं जाऊँगा। तुम हमें वहाँ जाने की आज्ञा देती हो न?"

माता ने कहा:—"हाँ, वहाँ जा सकते हो।"

माता की अनुमति पाकर जेम्स बहुत ख़ुश हुआ और अपना सामान बाँध कर ठीक ठाक करने लगा ।

दूसरे दिन सूर्योदय के पहले उसने आएरी झील की ओर यात्रा कर दी और बारह बजते बजते वह वहाँ पहुँच गया । आएरी झील उसके मकान से १७ मील दूर थी ।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि एक जहाज़ उसी किनारे पर लंगर डाले हुए खड़ा है ।

उसने एक आदमी से पूछा—"क्यों भाई, जहाज़ के कप्तान साहब कहाँ हैं ? मैं उनसे कुछ बातें किया चाहता हूँ ।"

उस आदमी ने उत्तर दिया:—"कप्तान साहब जहाज़ की दूसरी ओर गये हैं । अभी आवेंगे । आप ठहरिए ।"

यह सुन कर जेम्स ने उसे धन्यवाद दिया और वहीं खड़ा रहा ।

थोड़ी देर बाद एक आदमी जहाज़ की दूसरी ओर से गरजता हुआ, गालियाँ बकता हुआ आता मालूम हुआ । उस जहाज़ के आदमी ने जेम्स से कहा:—"वे कप्तान साहब आ रहे हैं ।"

कप्तान साहब से मिलने के लिए जेम्स आगे बढ़ा, और जब कप्तान साहब सामने आये तब उसने उन्हें सलाम किया ।

कप्तान साहब ने अपने स्वभावानुसार भौं चढ़ा कर गालियाँ बकते बकते पूछा—"तू कौन है बे, क्या चाहता है ?"

जेम्स ने बड़ी नम्रता से पूछा—"क्या आपको अपने जहाज़ के लिए कुछ और आदमियों की ज़रूरत है ?"

कप्तान ने कहा:—"अबे है तो सही, पर तेरा क्या। यहाँ से भाग, नहीं तो ऐसी लात मारूँगा कि याद करेगा।"

जेम्स इन बातों को सुन कर भौंचक सा रह गया और चुपके से वहाँ से खसक गया। उसको इतना दु:ख हुआ कि वह वहाँ ठहर भी न सका; तुरन्त वहाँ से हट गया और एक पेड़ तले जा बैठा और अपनी मुसीबत की बात सोचने लगा। बड़ी देर तक सोचता रहा कि अब क्या करना चाहिए। इतने में पीछे से किसी ने पुकारा—"जिमी जिमी !"

यह सुन कर जेम्स चौंक उठा और पीछे फिर कर जो देखा तो क्या देखता है कि उसका चचेरा भाई एमोस फ्लेचर एक डोंगी पर सवार चला आ रहा है। उसने आते ही पूछा:—"जेम्स तुम यहाँ कैसे आये ?"

जेम्स ने कहा:—"तुम कैसे आये ?"

एमोस फ्लेचर ने कहा:—"मैं पीटस्बर्ग से कच्चा ताँबा लाने जाता हूँ। पर तुम कहाँ आये थे ?"

जेम्स ने अपना सारा क़िस्सा कह सुनाया।

तब फ्लेचर ने कहा:—"जहाज़ के कप्तान प्राय: ऐसी ही प्रकृति के लोग हुआ करते हैं। ख़ैर जो हुआ सो हुआ। क्या अब तुम नौकरी किया चाहते हो ?"

जेम्स ने कहा:—"हाँ नौकरी करने ही के लिए यहाँ आया हूँ । क्या तुम हमें नौकर रक्खोगे ? कितनी तनख़्वाह दोगे ?"

फ्लेचर ने कहा:—"२४) रुपया मासिक दूँगा, यदि मंज़ूर हो तो चले आओ ।"

जेम्स राज़ी होगया और तुरन्त डोंगी पर जा पहुँचा ।

ये डोंगियाँ ख़च्चरों के द्वारा खींची जाती थीं । डोंगियों में बड़ी बड़ी रस्सियाँ बाँध कर दो दो ख़च्चर जोते जाते थे और वे झील के किनारे किनारे डोंगी को खींचते हुए चलते थे । इन ख़च्चरों को ठीक तौर से चलने के लिए हाँकने वालों की ज़रूरत होती थी । जेम्स इसी काम में नियुक्त किया गया ।

कुछ दूर तक जाने के बाद जेम्स ने चाहा कि ख़च्चरों को तेज़ चलावे । उसने वैसा ही किया । ख़च्चर बहुत तेज़ भागने लगे । अन्त में ऐसे एक स्थान में आ पहुँचे जहाँ सामने ही एक पुल था । जेम्स ने चाहा कि उस पुल से बचा कर डोंगी और ख़च्चरों को ले जाय परन्तु ऐसा न हो सका । रस्सियाँ पुल से टकरा ही गईं और उस धक्के से दोनों ख़च्चर और उनके सवार पानी में गिर गये । तुरन्त डोंगी पर से कई आदमी उतर आये और उन तीनों जीवों को पानी से निकालने में लग गये । अन्त में जेम्स और दोनों ख़च्चर पानी से बाहर निकल आये । तब जहाज़ के लोगों ने बड़ी हँसी उड़ाई और सभों ने मिल कर जेम्स को बेवकूफ़ बनाने की कोशिश की । जेम्स बेचारा अकेला क्या बोलता । वह भी बेवकूफ़ बन गया ।

एक दिन फ्लेचर ने जेम्स से कहाः—"भाई जेम्स, हमने सुना है कि तुमने अच्छी विद्या हासिल की है, तो तुम किसी पाठशाला में शिक्षक का काम क्यों नहीं करते ?" यह कह कर फ्लेचर ने जेम्स से कहाः—"मैं तुमसे भूगोल, इतिहास, गणित व्याकरण आदि में कुछ प्रश्न पूछा चाहता हूँ ! तुम उनका उत्तर, दो।"

जेम्स ने कहाः—"पूछिए, परन्तु बहुत कठिन प्रश्न न पूछिएगा।"

मिस्टर फ्लेचर ने तीन साल तक शिक्षक का काम किया था और इस कारण उन्हें अपनी विद्या का बड़ा अहंकार था।

उन्होंने कई प्रश्न जेम्स से पूछे ।

जेम्स ने भी उनका उत्तर ख़ूब विस्तारपूर्वक दिया। मिस्टर फ्लेचर बहुत ख़ुश हुए।

तब जेम्स ने कहाः—"अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँ और आप उनका उत्तर दीजिए।"

जेम्स ने कई प्रश्न पूछे पर वे एक का भी उत्तर न दे सके। तब वे बहुत लज्जित हुए। वास्तव में फ्लेचर से जेम्स बहुत अधिक जानता था।

फ्लेचर ने इनकी बड़ी प्रशंसा की और कहाः—"तुम्हारे लिए समुद्र की नौकरी करना और अपनी विद्या को समुद्र के जल में फेंक देना उचित नहीं है। तुम संसार में रह कर लोगों

को बहुत लाभ पहुँचा सकते हो। घर लौट जाओ और किसी पाठशाला में शिक्षक का काम करो।"

जेम्स ने कहा—"हमारी माता भी ऐसे ही कहा करती हैं और हमें समुद्र में नहीं जाने देतीं, परन्तु हमें दुनिया देखने की बड़ी इच्छा है।"

फ्लेचर ने फिर कहाः—"ऐसे विद्वान् पुरुष के लिए मल्लाह का काम करना कदापि उचित नहीं है। तुम्हारी माता ठीक कहती हैं। तुम ज़रूर उनकी बात मानो।"

इन बातों को सुन कर जेम्स बहुत ख़ुश हुआ और सोचने लगा कि कदाचित् हम में कुछ विद्या अवश्य ही है, नहीं तो फ्लेचर ऐसी बात न कहता।

तेरहवाँ परिच्छेद


ड़ी बड़ी नहरों में, जहाँ किश्ती और डोंगी चला करती हैं वहाँ, प्रायः जगह जगह पुल बने रहते हैं और उन पुलों में डोंगियों के आने जाने के लिए फाटक बने रहते हैं।

उन फाटकों से एक समय में केवल एक ही डोंगी जा सकती है ज्यादा नहीं। मिस्टर फ्लेचर की डोंगी रात दस बजे के लग भग ऐसे ही एक पुल के पास पहुँची। कप्तान फ्लेचर ने तुरन्त माझी को फाटक खोलने की आज्ञा दी। माझी भी तुरन्त फाटक पर पहुँच कर फाटक खोलने ही को था कि अन्धेरे में किसी ने चिल्ला कर कहा:—"फाटक मत छुओ, हम लोग यहां पहले आये हैं अतएव हमीं लोग पहले भीतर जायँगे।"

इतना कहना था कि कप्तान फ्लेचर का माझी लड़ने को खड़ा हो गया और उसकी देखा-देखी उसके सब साथी भी तैयार खड़े हो गये। उधर दूसरी डोंगी वाला माझी भी अपने साथियों को इकट्ठा कर खड़ा हो गया और दोनों में गाली-गलौज होने लगी।

ऐसी लड़ाइयाँ प्रायः हुआ करती थीं और कप्तान भी कभी कुछ न कहा करते थे। अतएव कप्तान फ्लेचर चुप-चाप खड़े तमाशा देख रहे थे। इतने में जेम्स वहाँ आ पहुँचा और उसने

कप्तान साहब के कन्धे पर हाथ धर कर कहा—"कप्तान फ्लेचर, यह क्या मामला है। क्या तुम ही इस फाटक के अधिकारी हो जो उन बेचारों को जाने नहीं देते और मुफ़्त उनसे लड़ते हो ?"

कप्तान फ्लेचर ने उत्तर दिया:—"यदि न्याय-पूर्वक देखा जाय तो यह फाटक हमारा नहीं है लेकिन हम लोगों में ऐसा रिवाज है कि जो यहाँ पहले पहुँच जाय वही पहले भीतर जा सकता है। इसके सिवा जब कभी दो डोंगीवाले एक साथ यहाँ पहुँचते हैं तब उन दोनों में लड़ाई होती है क्योंकि दोनों यही कहते हैं कि मैं पहले आया हूँ। इस कारण मुझे पहले जाना चाहिए।"

जेम्स ने कहा:—"यदि यह फाटक तुम्हारा नहीं है तो व्यर्थ लड़ना उचित नहीं है। उन लोगों को पहले जाने दो और तुम यहाँ रुके रहो।"

कप्तान फ्लेचर ने जेम्स की बात समझ ली और उसी की बात पर अपनी सम्मति दी, और ज़ोर से चिल्ला कर माझी को आज्ञा दे दी:—"फाटक छोड़ दो। उन लोगों को जाने दो। लड़ो मत।"

डोंगी के सब लोग कप्तान के ऐसे आदेश पर बहुत आश्चर्यित हुए, परन्तु सिवा फाटक छोड़ देने के वे कुछ करही न सकते थे, क्योंकि कप्तान की आज्ञा थी। इस कारण उन्होंने फाटक छोड़ दिया और दूसरे डोंगीवालों ने जाने की तैयारी की।

कप्तान फ्लेचर की डोंगी एक किनारे खड़ी थी । डोंगी के लोग अपना अपना काम बन्द करके हँसी-दिल्लगी में लगे हुए थे । डोंगियों के नौकर बिलकुल जंगली होते थे इस कारण दिल्लगी भी बेतुकी किया करते थे । उधर दूसरे डोंगी वाले फाटक के भीतर डोंगी ले जाने की तदबीर कर रहे थे कि इतने में अकस्मात् उस डोंगी से छिटक कर एक रस्सी मारफ़ी के सिर में लगी और उसकी टोपी पानी में गिर गई । कप्तान फ्लेचर के एक माँझी का नाम मारफ़ी था । वह बड़ा लड़ाका और क्रोधी स्वभाव का आदमी था । जब टोपी पानी में गिरी तब जेम्स ने अफ़सोस करके कहा:—"मिस्टर मारफ़ी, क्या करोगे, भगवान् को धन्यवाद दो कि तुम्हारी जान बच गई । केवल तुम्हारी टोपी ही पानी में गिर गई । तुम बच गये । नहीं तो जिस झोंके में रस्सी इधर आई थी उससे तुम्हारे बचने की कोई सम्भावना न थी ।"

इन बातों को सुन कर मिस्टर मारफ़ी ने सोचा कि जेम्स उनसे दिल्लगी करता है । इस कारण मारे ग़ुस्से के वह आग बबूला हो गया, और वहाँ से ऐसी तेज़ी से गरजता हुआ आया कि मानो एक ही धक्के में जेम्स को उसी टोपी के पास भेज देगा; परन्तु ज्योंही वहाँ पहुँच कर उसने जेम्स पर हाथ उठाया उसी दम जेम्स ने उसको पकड़ कर ऐसे ज़ोर से पछाड़ा कि वह सभों के सामने चारों कोने चित्त गिर गया और जेम्स उसकी छाती पर चढ़ बैठा और उस पर सवार हो गया ।

फ्लेचर ने चिल्ला कर जेम्स से कहा:—"अब इस बदमाश से गाली देने का बदला क्यों नहीं लेते ?"

जेम्स ने उत्तर दिया:—"अब मारफ़ी तो मेरे क़ाबू में है। मैं इसे जिधर चाहूँ उधर ही घुमा सकता हूँ। यह मेरा कुछ भी नहीं कर सकता। इस कारण मैं इसे मारूँगा नहीं क्योंकि हमारी राय में किसी को मारना उचित नहीं है। दूसरों से अपने को बचाना चाहिए, परन्तु बचाने के माने यह नहीं हैं कि उसी को पकड़ कर पीटो। मैंने अपने को बचा लिया है। अब इसे मारना कायरपन होगा।"

इन बातों को सुन कर सब लोगों ने समझ लिया कि जेम्स कापुरुष नहीं है वरन् वह एक बड़ा साहसी वीर लड़का है। यद्यपि वह एक बालक साही है तथापि उसकी शारीरिक शक्ति किसी युवा पुरुष से कम नहीं है। इस कारण उस दिन से सब लोग उसकी इज़्ज़त करने लगे। मारफ़ी ने जब अपनी हार मान ली तब जेम्स ने उसे छोड़ दिया और उठ कर उससे हाथ मिलाया और उसी समय से उन दोनों में बड़ी मित्रता हो गई।

कप्तान फ्लेचर की डोंगी पर एक और माझी था। उसका नाम था हैरी। वह बेचारा बड़ा सीधा साधा आदमी था। परन्तु शराब पिया करता था। इस कारण उसका स्वास्थ्य अच्छा न था। वह जेम्स को बहुत प्यार किया करता था। एक दिन जेम्स ने उससे कहा:—"प्यारे हैरी, यदि तुम शराब

पीना छोड़ दो तो हमें आशा है कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा हो जायगा।"

यदि यही बात और कोई हैरी से कहता तो कदाचित् हैरी उसका गला ही दबा देता अथवा उसकी जीभ खींच लेता, परन्तु उसने जेम्स के साथ ऐसा कुछ व्यवहार नहीं किया क्योंकि वह उसकी बड़ी इज्ज़त करता था। उसने उत्तर दिया:—"हां मैं समझता हूँ कि शराब छोड़ने से हमारे शरीर की उन्नति हो सकती है, परन्तु इसका छोड़ना ही बड़ा कठिन है।"

जेम्स ने उत्तर दिया:—"यदि तुम जी से चाहो तो तुम अवश्य ही छोड़ सकते हो। और ऐसा करने से तुम्हारा नाम संसार में प्रसिद्ध हो सकता है।"

यह सुन कर हैरी बहुत प्रसन्न हुआ और उस दिन से शराब छोड़ने का उद्योग करने लगा। जब तब वह अपने दोस्तों के पास जेम्स की बड़ी बड़ाई किया करता था। एक दिन उसने दूसरी डोंगी के एक माझी के सामने जेम्स की बड़ी प्रशंसा की।

इस प्रकार डोंगी के माझियों के बीच जेम्स की प्रतिष्ठा दिन पर दिन बढ़ती गई और वह सब का प्रियपात्र बन बैठा। न केवल बुद्धिमान् कप्तान फ्लेचर ही उसको प्यार करते थे, बल्कि उसके साथी जँगली माझी मल्लाह भी उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते थे।

जेम्स ने प्रायः तीन चार महीना इस डोंगी पर नौकरी की

थी और इस बीच में वह १७ बार पानी में गिरा था। लेकिन इससे यह न समझना चाहिए कि वह बड़ा बेपरवाह लड़का था। वरन् जिस काम को वह करता था उसको इतना मन लगा के करता कि उसको अपने शरीर की सुधबुध न रहती। पानी में गिर जाता तब किसी प्रकार अपने उद्योग और दूसरों की सहायता से निकल आता।

अन्त में जब वह पानी में गिरा तब रात अन्धेरी थी और किसी ने उसको गिरते समय न देखा। अतएव पहले की तरह उसके बचने की कोई आशा न थी, परन्तु जिसे ईश्वर बचाता है भला उसे कौन मार सकता है। जब जेम्स पानी में डुबकियां खा रहा था और उसके बचाव की कोई आशा न देख पड़ती थी, उस समय एक रस्सी उसके हाथ आलगी। उसी रस्सी की सहायता से वह डोंगी के ऊपर उठ आया, देखा तो वह रस्सी डोंगी ही में बँधी हुई थी। उसने भगवान् को अनेक धन्यवाद दिये और वह सोचने लगा कि मैं कैसे बचा, किसने मुझे बचाया और क्यों बचाया। तब उसने अपने मन ही मन कहा:—"मुझे मालूम होता है कि मुझे अभी जीने की ज़रूरत है। नहीं तो ऐसे संकट में पड़ कर जान न बचती। भगवान् को मंज़ूर है कि मैं अभी कुछ दिन तक संसार में रहूँ और अपना जीवन समुद्र के पानी में न फेकूँ। मेरी माता जैसा कहा करती हैं वैसा ही करना चाहिए। अब मैं घर लौट जाऊँगा और माता की आज्ञा के अनुसार काम करूँगा।

जब जेम्स घर लौटने की बात सोच रहा था उसी समय उसे ज्वर की बीमारी हो गई और कई दिन तक वह बिछौने से हिल न सका। जब अच्छा हुआ तब बहुत ही दुर्बल हो गया था। उसने कप्तान फ्लेचर से घर जाने की छुट्टी माँगी। कप्तान फ्लेचर ने बिना रोक टोक के उसे छुट्टी तो दे दी पर उसे छोड़ कर वे बहुत दुखी हुए और डोंगी के सब लोग बहुत शोकाकुल हुए।

जेम्स ने एक डोंगी पर सवार होकर क्लीभलैण्ड की ओर यात्रा की और सूर्य अस्त होने के पहले ही वह वहाँ पहुँच गया। वहाँ से घर की ओर पैदल ही चला। रात के ग्यारह बजे तक वह घर पहुँच गया। वह चुपके से घर के भीतर गया और देखा कि उसकी माता एक कोने में घुटना टेके हुए बैठी है और सामने एक पुस्तक खुली हुई है। जेम्स ने सोचा कि माता पढ़ रही हैं, परन्तु दूसरे ही मुहूर्त्त में उसने देखा कि वे कुछ पढ़ नहीं रही हैं वरन् सामने बाइबिल खुली हुई है निश्चल चित्त से ईश्वर के पास पुत्र के मङ्गलार्थ प्रार्थना कर रही हैं। हाय रे माता का हृदय! तू क्या ही स्नेहपूर्ण है। यदि संसार के सारे पदार्थों को और सारे भावों को एक ओर रक्खें और मातृहृदय को दूसरी ओर तो भी वे सब मिल कर इस विशाल हृदय की बराबरी नहीं कर सकते।

जेम्स ने माँ के कंधे पर हाथ धर कर कहा:—"माँ, माँ, क्या कर रही हो?"

माता चौंक उठी और पीछे फिर कर देखा कि उसका पुत्र पीछे खड़ा हुआ माँ, माँ चिल्ला रहा है। उसने अपने दोनों हाथ फैलाये और बेटे को अपनी छाती से लगा लिया। उस समय उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

अहा! वह माता-पुत्र का मेल कितना सुखदायी था!

चौदहवाँ परिच्छेद

जब जेम्स ने अपना सिर माता की गोद से हटा लिया तब उसकी माता ने उससे पूछा:—"बेटा तुम इतने दुर्बल क्यों मालूम होते हो ?"

जेम्स ने कहा:—"हाँ माँ, मैं बहुत दुर्बल हो गया हूँ। मुझे अन्तरा ज्वर आता था। और इसी कारण मैं घर लौट आया हूँ।"

जेम्स की विधवा माता ने कहा:—"बहुत अच्छा हुआ कि तुम घर लौट आये परन्तु एक बड़े आश्चर्य की बात है कि जहाज़ पर तुम्हें अन्तरा ज्वर होगया। समुद्र में यह बीमारी प्रायः नहीं होती।"

जेम्स ने कहा:—"मैं समुद्र पर नहीं गया था। मेरी डोंगी नहर में ही थी। अब तक मैं नहर ही की नौकरी करता रहा।"

माता ने बड़े आश्चर्य में होकर पूछा:—"तुम नहर में थे। क्या तुम आयरी झील पर नहीं गये ?"

तब जेम्स ने माता से सब घटनाओं का पूरा पूरा इतिहास कह सुनाया और यह भी कह दिया कि कैसे वह जहाज़ के कप्तान से घुड़का गया था, कैसे एमोस फ्लेचर से अकस्मात्

भेट हो गई थी और उसकी डोंगी पर नौकरी मिली थी और कैसे वह १७ बार पानी में डूबने से बचा था।

माता ने उसका सारा वृत्तान्त चुपचाप सुना और अन्त में इतना ही कहा:—"ईश्वर ने तुमको सदा बचाया है और उसने हमारी प्रार्थनाओं को भी मंज़ूर किया है जो तुम्हें घर भेज दिया।"

जेम्स ने कहा:—"सत्य है, माता, उस दिन रात को ईश्वर ही ने मुझे डूबने से बचाया था। मैं तो मरही चुका था।"

पुत्र के मन में ईश्वर पर विश्वास देख माता का हृदय आनन्द से प्रफुल्लित होगया। उन्होंने जेम्स से कहा:—"बेटा, रात बहुत हो गई। अब तुम विश्राम करो। कल सबेरे और और बातें सुनूँगी।"

माँ, बेटे दोनों अपने अपने बिछौनों पर गये। जेम्स तो जाते ही सो गया, पर उसकी माता की आँखों में नींद न आई। वह सारी रात जागती रही। उस रात को विधवा माता अपने छोटे पुत्र की भूत, वर्त्तमान तथा भविष्य जीवन की समालोचना कर रही थी और ईश्वर को धन्यवाद देती थी कि उनकी प्रार्थनायें दिन पर दिन पूरी होती जाती हैं। माता का चित्त बहुत प्रसन्न था। एक तो प्रिय पुत्र का बहुत दिन बाद माता की गोद को शीतल करने के लिए घर लौट आना, दूसरे उनकी प्रार्थना का सफल होना और तीसरे पुत्र के मन में ईश्वर पर भक्ति—येही सब बातें मिल कर माता के हृदय-सागर में आनन्द की लहरें उठा रही थीं।

सवेरा होते ही विधवा माता जेम्स के कमरे में गई और देखा कि वह गहरी नींद में सो रहा है । कुछ काल तक बाहर खड़ी बात करती रहीं । अन्त में जब दिन चढ़ गया तब वे उसके कमरे में फिर गईं तो देखा कि जेम्स जाग उठा है । माँ को पास देख उसने कहा :—मैं आज ख़ूब सोया । ऐसी नींद मुझे हफ्ते भर में नहीं आई थी । आज मैं पहले से कुछ अच्छा भी हूँ ।"

अन्तरा ज्वर का नियम है कि एक रोज़ बाद ज्वर होता है और तब रोगी को विकल कर देता है और फिर दूसरे ही दिन रोगी चंगा हो जाता है ।

वह दिन तो ख़ुशी ख़ुशी में कट गया । दूसरे दिन फिर ज्वर आया तब जेम्स की माता ने उस की राय लेकर एक डाकृर बुलाया । डाकृर की चिकित्सा आरम्भ हो गई परन्तु कई हफ्ते तक वह बीमार रहा और बिछौने से हिल न सका ।

जिस समय जेम्स बीमार पड़ा रहा उसी समय आरेंज का स्कूल खुला । वहाँ के शिक्षक मिस्टर बेट्स बड़े योग्य थे। वे बड़े धार्मिक, विद्वान्, और दयालु थे और जवान लड़कों का चित्त आकर्षण करने में बड़े ही चतुर थे ।

जेम्स की विधवा माता ने इनसे मुलाक़ात की और अपने पुत्र के विषय में बहुत कुछ कहा । उसने उनसे कहा कि उनका पुत्र है तो बहुत ज़हीन परन्तु उसका चित्त समुद्र-यात्रा के लिए व्याकुल है और इस कारण लिखने-पढ़ने की ओर ध्यान नहीं देता । यदि किसी प्रकार उसका चित्त लिखने-पढ़ने की ओर

एक बार खींचा जा सके तो कदाचित् समुद्र-यात्रा से उसका जी हट जावे ।

मिस्टर बेट्स इन बातों को सुन बहुत .खुश हुए और उन्होंने कहाः—"मैं जेम्स से शीघ्र ही किसी दिन मिलूँगा और इस बात की कोशिश करूँगा कि उसका मन लिखने-पढ़ने में लगे ।"

विधवा अपने मकान को लौट गईं और जेम्स की सेवा करने लगीं । उन्होंने कहाः—"बेटा, बहुत अच्छा हुआ कि इस बीमारी के समय तुम घर पर उपस्थित हो, नहीं तो कौन जानता है कि तुम कैसी विपत्ति में पड़े होते ।"

जेम्स ने कहाः—"यदि मैं बीमार न पड़ता तो कदाचित् मैं हफ़्ते भर पहले ही मकान पर आ जाता ।"

माता ने पूछाः—"क्यों ? क्या तुमने समुद्र की नौकरी छोड़ देने का विचार किया था ?"

जेम्स ने कहाः—"मिस्टर फ्लेचर कहते हैं कि तुम्हारी जैसी विद्या-बुद्धि है उसको समुद्र के पानी में फेंक देना उचित नहीं है, तुमको चाहिए कि तुम और कुछ दिन तक विद्याभ्यास करो और ज्ञान-लाभ करने के बाद किसी पाठशाला के अध्यापक बनो । तभी तुम्हारी विद्या-बुद्धि का उचित सम्मान हो सकता है ।"

माता ने कहाः—"मैं फ्लेचर की राय .खूब पसन्द करती हूँ, और तुम भी जानते हो कि मैं तुमसे हमेशा यही कहा करती

हूँ । क्या तुमने फ्लेचर की राय मान ली और समुद्र-यात्रा का संकल्प त्याग दिया ?"

जेम्स ने उत्तर दिया:—"मैंने समुद्र-यात्रा का संकल्प बिलकुल तो नहीं छोड़ा है किन्तु मैं उस विषय को अभी तक सोच रहा हूँ ।"

माता-पुत्र में इस तरह बातचीत हो ही रही थी कि इतने में जेम्स से मिलने के लिए मिस्टर बेट्स उनके घर पर आपहुँचे। उन्होंने जेम्स से बहुत देर तक बातचीत की परन्तु पहली मुलाक़ात में लिखने-पढ़ने के सम्बन्ध में उन्होंने कुछ भी चर्चा नहीं की ।

जब मिस्टर बेट्स चले गये तब माता ने कहा:—"क्यों बेटा, तुम्हारी क्या राय है ? मिस्टर बेट्स बहुत नेक आदमी हैं न ? मैं समझती हूँ कि लड़के उनको बहुत प्यार करते होंगे ।"

जेम्स ने कहा:—"हाँ वे बहुत अच्छे आदमी हैं और मैं चाहता हूँ कि उनके साथ स्कूल जाया करूँ ।"

"यदि तुम चाहो तो अवश्य ही जा सकते हो । देखो, यदि तुम कुछ दिन और पढ़ लो तो तुम कुछ दिन के लिए किसी स्कूल में शिक्षक का काम कर सकते हो । और इस काम में जो रुपया कमाओ उसी की सहायता से तुम फिर पढ़ना आरम्भ कर सकते हो । इस तरह तुम्हारा पढ़ना-पढ़ाना दोनों साथ साथ हो सकता है । तुम रुपया भी कमा सकते हो और प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकते हो ।"

जेम्स ने कहाः—यह तो सब ठीक है, परन्तु समुद्र का पानी, उसकी बड़ी बड़ी लहरें और उन पर बहने वाले बड़े बड़े जहाज़ ऐसे जी लुभाने वाले हैं कि जब कभी मैं उनके विषय में सोचता हूँ तभी मेरा जी भीतर से नाचने लगता है, इस कारण मैं कहता हूँ कि एक वार मुझे समुद्र में और जाने दो।"

माता ने कहाः—"परन्तु अब तो तुम समुद्र अथवा नहर में लौट जाना पसन्द नहीं करते। मैंने सोचा था कि तुमने समुद्र जाने का संकल्प बिलकुल छोड़ दिया है।"

निदान माँ-बेटे में बहुत देर तक इसी विषय में तर्क-वितर्क होता रहा। जब माता ने देखा कि लड़का किसी तरह नहीं मानता तब बुद्धिमती माता ने सोचा कि ऐसे समय में पुत्र को एकदम रोकना अच्छा न होगा, बल्कि समुद्र-यात्रा में भी कुछ न कुछ उत्साह देना चाहिए। यह सोच कर उन्होंने कहाः—"जो तुम नहर का काम करने जाओ अथवा किसी जहाज़ में मल्लाह का काम करो तो तुम पूरे साल भर तो काम कर नहीं सकते, कुछ दिन तक तुम्हें चुपचाप बैठा रहना पड़ेगा। क्योंकि जाड़ों में जहाज़ का काम बन्द रहेगा; अतएव इस समय तुम स्कूल में जाओ और शिक्षक का काम करो और गर्मियों में जहाज़ चलाना, इस तरह तुम दोनों काम कर सकोगे।"

जेम्स की विधवा माता को डर था कि जेम्स को समुद्र-यात्रा के विचार से एकदम रोकना कदाचित् असम्भव होगा,

इस कारण उन्होंने उससे कहा था कि जाड़ों में तुम स्कूल में पढ़ाओ और गर्मियों में जहाज़ चलाओ। इस आशा पर कि यदि एक बार वह पुस्तकों के प्रेम में पड़ जाय तो उसका समुद्र जाने का सारा विचार जाता रहेगा।

मिस्टर बेट्स प्रायः जेम्स से मुलाक़ात करने आया करते थे। एक दिन बात बात में दोनों में बड़ी बहस छिड़ गई—जेम्स कहता था:—"मैं जहाज़ चलाऊँगा।" और बेट्स कहते थे, "तुम पढ़ाने का काम करो।" अन्त में मिस्टर बेट्स ने कहा:—"देखो, विद्यार्थी और मल्लाह में इतना भेद है जैसा कि ज़मीन और आसमान में। अतएव यदि तुम यह चाहते हो कि संसार में लोग तुम्हारा सम्मान करें तो विद्यार्थी बनो और नहीं तो जैसा चाहो वैसा करो।"

मिस्टर बेट्स ने फिर कहा:—"तुम मेरे साथ पहली मार्च से स्कूल चलो। पहले तुम इस बात को तै कर लो कि उस दिन से तुम मेरे साथ स्कूल जाओगे। इसके बाद और बातें आप से आप ठीक होती जायँगी।"

जेम्स ने बड़े दृढ़ स्वर से उत्तर दिया:—"मैं अवश्य ही स्कूल जाऊँगा।"

मिस्टर बेट्स ने कहा:—"शाबाश, यही तो बहादुरों की सी बात है लेकिन याद रक्खो कि तुमने कहा है कि स्कूल जायँगे अगर तुम अपनी बात पर क़ायम रहोगे तो ज़रूर तुम

अपने भविष्य जीवन में सफलता-लाभ करोगे क्योंकि यहीं से तुम्हारे जीवन का परिवर्तन आरम्भ होगा ।"

इन बातों ने जेम्स के चित्त में बड़ा असर पैदा किया और वह स्कूल जाने के लिए दृढ़-संकल्प होगया । स्कूल जाने के पहले उसने अपने चचेरे भाई विलियम और हेनरी को भी साथ ले जाने का प्रबन्ध किया ।

जिस समय जेम्स का स्कूल जाना तै होगया उसी समय डाक्टर राबिन्सन एक बड़े नामी डाक्टर आरेंज में किसी रोगी को देखने आये थे । जेम्स ने बिना किसी को बताये हुए चाहा कि डाक्टर साहब से मुलाक़ात करके पूछे कि उसके दिमाग़ में ऐसी शक्ति है या नहीं कि वह पठन-पाठन का काम कर सके । इस कारण चुपके से वह एक दिन डाक्टर साहब से मिलने के लिए निकल गया ।

डाक्टर साहब के पास पहुँच कर उसने उनको सलाम किया ।

डाक्टर साहब ने सलाम का उत्तर देकर पूछा:—"तुम कौन हो ? कहाँ से आये हो और क्या चाहते हो ?

जेम्स ने कहा:—"मेरा नाम जेम्स गारफ़ील्ड है । मैं आरेंज से आया हूँ और आप से अकेले में कुछ बात पूछा चाहता हूँ ।"

डाक्टर साहब ने कहा:—मैं तुम्हारे माता-पिता को पहचानता हूँ और तुमको भी मैंने बचपन में देखा था । अब तुम जवान हो गये हो । क्या कहा चाहते हो, बोलो ।"

जेम्स और डाकृर साहब एक कोठरी में गये । वहाँ जाकर जेम्स ने कहाः—"डाकृर साहब, कृपा करके आप मेरे सब अङ्ग-प्रत्यङ्गों को अच्छी तरह परीक्षा करके देखिए तो सही कि मेरे दिमाग़ में इतनी शक्ति है या नहीं कि मैं पठन-पाठन का काम अच्छी तरह कर सकूँ ।"

डाक्टर साहब इस विचित्र प्रश्न को सुन कर बड़े आश्चर्य में हुए । लेकिन उन्होंने जेम्स की नाड़ी, दिल, फेफ़ड़े, गुर्दा, मस्तिष्क आदि सब अङ्गों की अच्छी तरह परीक्षा की और अन्त में कहाः—"मिस्टर जेम्स, केवल तुम्हारे मस्तिष्क ही में अजीब शक्ति नहीं है बल्कि तुम्हारे हाथ पैर भी ऐसे मज़बूत हैं कि तुम जैसा काम चाहो कर सकोगे, और बड़ी सफलता से कर सकोगे । तुम काम करने से कदापि मत डरो । काम सदा करते रहो । कोई काम तुम्हें हरा न सकेगा ।"

डाक्टर साहब की बात सुन कर जेम्स बहुत ख़ुश हुआ और उसको पूरी तौर से विश्वास होगया कि वह विद्याभ्यास करने के योग्य है ।

स्कूल जाने की राय पक्की होगई, और उसकी विधवा माता ने २२) रुपये इकट्ठे किये ।

जेम्स ने कहाः—"प्रारम्भ में इतना रुपया काफ़ी होगा । इसके बाद मैं और कमा लूँगा ।"

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

पहली मार्च को चेस्टर का स्कूल खुल गया। आरेंज से चेस्टर प्रायः १० मील दूर था। जेम्स और उसके चचेरे भाई, विलियम और हेनरी, स्कूल खुलने पर, अपने अपने लिखने-पढ़ने और खाने-पीने का सामान कन्धों पर लाद कर ले चले। दस मील रास्ता उन्होंने पैदल ही तै किया और चेस्टर पहुँच कर वहाँ के अध्यापक से भेंट की। अध्यापक महाशय, जिनका नाम मिस्टर ब्रांच था, किसी किसी विषय में बड़े विद्वान् थे, परन्तु कुछ थोड़े बहुत सनकी भी थे।

ये तीनों लड़के मिस्टर ब्रेंच से मिले और जेम्स ने उनसे कहा:—"हम लोग आपके स्कूल में पढ़ने के लिए आये हैं।"

मिस्टर ब्रेंच ने उनका नाम-धाम पूछा।

जेम्स ने उत्तर दिया और कहा:—"मेरा नाम जेम्स ए. गारफ़ील्ड है। ये दोनों मेरे चचेरे भाई हैं। इनका नाम विलियम और हेनरी बाइंटन है। हम लोग आरेंज से आ रहे हैं।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा:—"वाह! मैं तुम लोगों को देख कर बहुत .खुश हुआ।"

उन लड़कों के फटे पुराने कपड़ों को देख कर उन्होंने कहा:—"मालूम होता है कि तुम लोग किसी अमीर के लड़के नहीं हो।"

जेम्स ने कहा:—"जी हाँ महाशय, हम लोग बहुत ग़रीब हैं। हम लोगों की झोलियों में रुपये-पैसे अधिक नहीं हैं, खाने पीने और लिखने-पढ़ने का सामान ही है।"

मिस्टर ब्रेंच ने पूछा:—"तुम लोग अपने खाने-पीने और रहने का बन्दोबस्त तो स्वयं ही करोगे न?"

जेम्स ने कहा:—"जी हाँ, हम लोग अपना बन्दोबस्त आप ही करेंगे, लेकिन क्या आप कृपा करके हम लोगों को कोई जगह रहने के लिए बता दीजिएगा?"

अध्यापक महाशय ने एक बुढ़िया का मक़ान दिखा दिया और कहा:—"उसी बुढ़िया के साथ रहने का तुम लोग बन्दोबस्त कर लो। हमें आशा है, कि वहाँ तुम लोग आराम से रहोगे।"

लड़कों ने बुढ़िया के साथ रहने का बन्दोबस्त कर लिया और वे वहीं रहने लगे।

दूसरे दिन उन्होंने स्कूल में नाम लिखाया। शिक्षक ने जेम्स के पढ़ने के लिए चार कोर्स ठीक किये:—पदार्थ-विज्ञान (Natural Philosophy) व्याकरण (Grammar), गणित (Arithmetic) और बीजगणित (Algebra):

उस स्कूल में लड़के और लड़कियाँ मिला कर प्रायः सौ विद्यार्थी पढ़ा करते थे । इतने विद्यार्थियों के साथ पढ़ना जेम्स के लिए एक नई बात थी ।

मिस्टर ब्रेंच विद्यार्थियों को व्याकरण पढ़ाया करते थे ।

पहले बता चुके हैं कि जेम्स जिस किसी विषय को सीखता था, उसको बिना अच्छी तरह समझे न छोड़ता था, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो । यहाँ व्याकरण पढ़ते पढ़ते एक कठिनाई आपड़ी । अँग्रेज़ी में एक शब्द बट (but) है जिसका अर्थ है "परन्तु"। व्याकरण में यह शब्द अव्यय (अर्थात् Conjunction) है । अध्यापक महाशय ने इसको क्रिया (अर्थात् Verb) बताया था । इस कारण जेम्स ने एक दिन मिस्टर ब्रेंच से पूछाः—"महाशय, क्या बट (but) अव्यय (Conjunction) नहीं है ?"

उन्होंने कहाः—"नहीं, यह क्रिया है ।"

जेम्स ने कहाः—"व्याकरण में इसको अव्यय ही कहते हैं ।"

अध्यापक ने पूछाः—"तुमने कौन सा व्याकरण पढ़ा है ?"

कर्कमैन साहब का बनाया हुआ व्याकरण जेम्स को कण्ठ था । उसने कहाः—"मैंने कर्कमैन का व्याकरण पढ़ा है ।"

अध्यापक ने कहाः—"कर्कमैन का व्याकरण बिलकुल ग़लत है ।"

जेम्स ने कहाः—"मैंने इसके पहले जिन जिन शिक्षकों के पास पढ़ा है वे सब यही कहा करते थे कि यह अव्यय है ।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा:—"उन लोगों ने चाहे जिस किसी व्याकरण से पढ़ाया हो परन्तु मैं अपना ही बनाया हुआ व्याकरण पढ़ाता हूँ।"

तिस पर जेम्स ने कहा:—"यदि 'बट' क्रिया है तो ऐण्ड (and) जिसके माने हैं, 'और' वह भी क्रिया है।"

अध्यापक ने कहा:—"अवश्य, वह भी क्रिया है, क्योंकि इसके माने हैं जोड़ना।"

यह सुन कर जेम्स हँस पड़ा और उसने दूसरे विद्यार्थियों की ओर देखा।

अध्यापक ने समझ लिया कि जेम्स को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने फिर कहा:—"देखो, and के माने केवल और ही नहीं हैं वरन् इसके माने जोड़ना भी हैं। इस बात को मैं अभी प्रमाण से सिद्ध किये देता हूँ। यह कह कर उन्होंने कहा:—"जैसे तुम और हेनरी दो लड़के हो, और मैं कहता हूँ कि तुम और हेनरी दोनों मिल कर फलाने काम को करो। इसका मतलब यह होगा कि हेनरी तुम में जोड़ दिया गया है; इस कारण 'और' क्रिया है, अव्ययं नहीं है।"

जेम्स चुप हो गया और कुछ बोला नहीं।

व्याकरण के घंटे में जेम्स और अध्यापक से प्रायः ऐसा ही तर्क हुआ करता था। इस तर्क से लड़के बहुत ख़ुश होते थे। लेकिन अध्यापक महाशय बहुत चिढ़ते थे। परन्तु इतना उन्होंने

अवश्य ही समझ लिया था कि जेम्स एक साधारण लड़का नहीं है। इस कारण उसको पढ़ाने में वें कुछ हिचकते भी थे।

जेम्स के भाइयों ने जब देखा कि अध्यापक और जेम्स में प्रायः तर्क वितर्क हुआ करता है और अध्यापक महाशय ठीक ठीक उत्तर न दे सकने के कारण चिढ़ते भी थे तब उन लोगों ने जेम्स को राय दी कि वह व्याकरण छोड़ कर कोई दूसरा कोर्स ले ले।

जेम्स ने व्याकरण छोड़ कर दूसरा कोर्स ले लिया। अध्यापक भी इस बात पर बहुत ख़ुश हुए।

कुछ दिन बाद जेम्स ने देखा कि उसके २२ रुपये प्रायः चुकने पर हैं, तब उसने अपने भाइयों से कहा:—"यदि मैं इस समय कुछ रुपया न कमाऊँ तो मेरा दिवाला निकल जायगा क्योंकि अब मेरी थैली ख़ाली हो चली है।"

विलियम ने पूछा:—"भला यहां क्या काम करोगे ?"

जेम्स ने कहा:—"यहां बढ़ई का कांम करूँगा। मिस्टर उडवर्थ नामी एक बढ़ई यहां रहते हैं। मैं उनसे मिल कर कुछ काम करने का बन्दोबस्त करूँगा जिससे कुछ रुपया कमा सकूँ।"

यह राय तै होने पर जेम्स ने मिस्टर उड्वर्थ से मुलाक़ात की और अपना मतलब यान किया।

उड्वर्थ ने पूछा:—"तुमने कभी इस काम को किया है।

यदि तुमने कभी किया हो तो कल स्कूल के बाद आना मैं देखूँगा कि तुम्हें कुछ काम दे सकता हूँ या नहीं ।"

जेम्स ने कहा:—"मैंने मिस्टर ट्रीट के पास कुछ दिन काम किया है और मैं इस काम को अच्छी तरह जानता हूँ और कर सकता हूँ । आप मुझे काम दीजिएगा । मैं अगर अच्छी तरह न कर सकूँ तो मुझे छुड़ा दीजिए । मैं यह नहीं चाहता कि मुझे मुक़र्रर करने में आप मुझ पर कुछ मेहरबानी कीजिए। मेरा काम देखिए । यदि काम अच्छा हो तो दाम दीजिए । नहीं तो मत दीजिए ।"

मिस्टर उड्वर्थ ने इन बातों पर बहुत ख़ुश हो कर कहा:—"तुम कल से यहाँ आना । मैं तुम्हें काम दूँगा ।"

जेम्स घर लौट गया और उड्वर्थ के कथनानुसार दूसरे दिन से सुबह शाम वहाँ जाने लगा और काम करने लगा। नतीजा उसका यह हुआ कि स्कूल से छुट्टी होने पर लिखने-पढ़ने, खाने-पीने और रहने में जो कुछ ख़र्चा हुआ सब उसने अपनी ही कमाई से किया और घर जाते समय पाँच छः रुपया साथ भी लेगया था ।

स्कूल का नियम ऐसा था कि प्रत्येक विद्यार्थी को सब शिक्षकों और विद्यार्थियों के सामने खड़े होकर हफ़्ते में दो दिन वक्तृता देनी पड़ती थी । वक्तृता का विषय कभी तो अध्यापक महाशय स्वयं चुन देते और कभी विद्यार्थी ही अपने आप लिख लाते थे।

जेम्स को जिस दिन पहली वक्तृता देनी पड़ी उस दिन उसकी विचित्र दशा थी। हाथ-पैर काँपते थे, जीभ लड़खड़ाती थी और गला घुटता सा था, परन्तु किसी प्रकार उसने अपनी वक्तृतां समाप्त की। घर पहुँच कर अपने भाइयों से कहा:— "हमारे भाग्य अच्छे थे कि जिस स्थान पर खड़ा होकर मैं वक्तृता दे रहा था वहाँ मेरे पैर के सामने एक पर्दा पड़ा हुआ था नहीं तो सबको पता लग जाता कि मेरे पैर काँप रहे थे।"

हेनरी ने पूछा:—"क्या तुम घबरा गये थे ?"

जेम्स ने कहा:—"हाँ, मैं बहुत घबरा गया था।"

"लेकिन तुम्हारी वक्तृता बहुत अच्छी हुई थी। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ था कि इस फटे चिथड़े के भीतर इतना मसाला भरा हुआ है।"

स्कूल के विद्यार्थियों ने मिल कर तर्क-वितर्क करने की एक साधारण सभा क़ायम की थी। जेम्स भी उस सभा का एक मेंबर था। उस सभा में प्रायः वक्तृता और बहस आदि हुआ करती थी। जेम्स की आदत थी कि वक्तृता देने के पहले वह उस विषय को अच्छी तरह सोच लेता था। इस कारण उसकी वक्तृता सब लड़कों से अच्छी हुआ करती थी। लड़कों को विश्वास होगया था कि भविष्य में जेम्स एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध वक्ता होगा। जेम्स की रुचि और वृत्ति देख कर शिक्षक गण भी ऐसी ही बात कहा करते थे।

स्कूल के पुस्तकालय से जेम्स ने "हेनरी सी राइट" की जीवनी पढ़ी थी। पढ़ते समय उसके जीवन व्यतीत करने का नियम जेम्स को बहुत पसन्द आया था। उसने एक दिन अपने भाइयों से कहा:—"मैं हेनरी राइट की तरह अपना जीवन व्यतीत किया चाहता हूँ।"

हेनरी ने पूछा:—"सो कैसा?"

जेम्स ने कहा:—"केवल दूध और रोटी खा कर दिन काटूँगा। इसमें हमारा ख़र्चा भी कम होगा और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।"

हेनरी ने कहा:—"दूध पीने से ख़र्चा तो अवश्य कम हो सकता है परन्तु स्वास्थ्य कैसे अच्छा रह सकता है।"

जेम्स ने कहा:—"मांस खाने वालों की अपेक्षा दूध पीने वालों का मस्तिष्क और उनका शरीर अधिक बलिष्ठ होता है और इस कारण वे उनसे अधिक विद्वान् होते हैं। इसका प्रमाण हमें मिल चुका है।"

जेम्स की बातें सुन कर हेनरी और विलियम दोनों ने मज़ाक करना आरम्भ किया। पर जेम्स ने कहा:—"तुम लोग चाहे मज़ाक करो और चाहे हँसो। लेकिन मैं तो केवल दूध ही पीऊँगा।"

जेम्स ने वैसा ही किया।

सोलहवाँ परिच्छेद ।

स्कूल में गर्मियों की दो महीने की छुट्टी हुई, जैसा हर जगह हुआ करता है। छुट्टियों में जेम्स अपने भाइयों के साथ घर गया। टामस भी घर पर था, और वह चाहता था कि अपनी माँ के रहने के लिए एक कोठा बनावे। इस कारण धीरे धीरे कई महीनों में उसने बाँस बल्ली इत्यादि सामान इकट्ठा कर रक्खा था। जब जेम्स घर आया तब उसने कहा:—"जेम्स, तुम तो कोठे का ठाट बाँध सकोगे न, क्योंकि तुमने बहुत बनाया है?"

जेम्स ने उत्तर दिया:—"यदि बीजगणित (Algebra) और विज्ञान (Philosophy) ने मेरे दिमाग़ से कोठा और ठाट बनाने का ज्ञान मिटा न दिया हो तो मैं अवश्य ही बना सकता हूँ।" टामस ने कहा:—"मुझे आशा होती है कि गणित और विज्ञान की सहायता से तुम कोठे को पहले से भी ज़्यादा अच्छी तरह बना सकोगे।"

कुछ काल तक दोनों भाइयों में इसी प्रकार की बातें होती रहीं। अन्त में इन्हीं दोनों ने मिलकर बिना किसी और आदमी

की सहायता के कोठा तैयार कर दिया । अब माँ के रहने के लिए एक दूसरा मकान बन गया ।

कोठे का बनना समाप्त होने पर जेम्स दूसरा कोई काम करने की चिन्ता करने लगा । काम भी तुरन्त ही मिल गया । उसके पड़ोस में एक किसान रहता था । उसको खेत बोने के लिए किसी आदमी की ज़रूरत थी । इस कारण उस किसान ने तुरन्त जेम्स को नियत कर लिया । जेम्स ने बड़ी मुस्तैदी के साथ काम किया और थोड़े ही दिनों में उसका काम पूरा कर दिया। उस काम के पूरा हो जाने पर जेम्स ने दो एक जगह और भी काम किया, और इन कामों के पूरा होने के साथ साथ उसकी छुट्टी भी पूरी हो गई ।

छुट्टियों में जेम्स दिन भर तो काम किया करता था और रात को गणित विज्ञान आदि पुस्तकों को पढ़ा करता था।

उसके लिखने-पढ़ने की ओर अनुराग देख कर उसकी विधवा माता को अनुमान होगया कि कदाचित् उसके पुत्र के मन से समुद्र-यात्रा का ख़याल दूर हो गया है । वह भी उस भूली हुई बात की चर्चा नहीं छेड़ती थी, जैसे जेम्स ने समुद्र-यात्रा के विषय में कुछ नहीं कहा वैसे ही उसकी माता ने भी कुछ नहीं कहा ।

स्कूल की छुट्टी पूरी हो गई और जेम्स फिर चेस्टर जाने को तैयार हुआ । माता ने कहा:—"बेटा, तुम विदेश जा रहे

हो, और तुम्हारे पास केवल एक अठन्नी ही है, कुछ रुपये और ले जाओ।"

जेम्स ने कहा:—"मैं अपने खाने-पीने और लिखने-पढ़ने का बन्दोबस्त चेस्टर ही में ठीक कर लूँगा। मुझे कुछ रुपये की ज़रूरत नहीं है।" माता ने कहा:—"प्रारम्भ में ख़ाली हाथ जाने की अपेक्षा कुछ थोड़ा रुपया ले जाना अच्छा है।"

जेम्स ने कहा:—"प्रारम्भ में कुछ रुपया लेके जाने और अन्त में ख़ाली हाथ लौटने की अपेक्षा ख़ाली हाथ जाना और अन्त में पाकेट गरम करके लौटना अच्छा होगा।"

माता ने कहा:—"इस बात से तो ऐसा मालूम होता है कि तुम घर लौटते समय कुछ रुपया साथ लेके लौटोगे।"

जेम्स ने कहा:—"ज़रूर कुछ रुपये लाऊँगा। अगर रुपये न लाऊँ तो जाड़े में शिक्षक का काम कैसे करूँगा।"

माता ने ख़ुश होकर पूछा:—"क्या तुमने शिक्षक बनना स्थिर कर लिया है।"

जेम्स ने कहा:—"इच्छा तो ऐसी ही है, इसके बाद हर-इच्छा।"

माता ने कहा:—"यदि शिक्षक बनने की तुम्हारी इच्छा हुई तो भगवान् तुम्हारी इच्छा अवश्य ही पूरी करेंगे। इसके अतिरिक्त यदि तुम शिक्षक हो जाओ तो तुम इतना रुपया कमाओगे कि दूसरे साल तुम अपने पढ़ने और खाने-पीने का ख़र्चा उसी से चला सकते हो।"

दूसरे दिन सबेरे जेम्स और उसके दोनों चचेरे भाई चेस्टर को रवाना हुए। चेस्टर पहुँच कर जेम्स ने अपने भाइयों से कहा:—"मेरे पास केवल एक अठन्नी है। यह बेचारी जेब में अकेली घबराती है। झट पट इसका कोई साथी ठीक कर देना चाहिए।"

इस बात के कहने के दो दिन बाद ही सैबेथ डे (Sabbath Day) आ पहुँचा, और जेम्स कोई काम न कर पाया था।

सैबेथ के दिन सब लोग गिर्जे में बैठे हुए भजन सुन रहे थे। जेम्स भी वहाँ था। भजन पूरा होने पर पादरी साहेब ने चन्दे का बक्स सब लोगों के पास भेजा। जिस से जो देते बना उसने उतना ही दिया। जेम्स के पास केवल वही अठन्नी थी। जब उसके पास बक्स आया तब उसने भी चुपके से वही अठन्नी निकाल कर बक्स में डाल दी।

जेम्स और उसके दोनों भाई पहले की तरह मिस्टर राइट की नाईं, दूध पीकर ही जीवन बिताने लगे। ऐसा करने से उनका ख़र्चा बहुत कम होगया, परन्तु विलियम और हेनरी दोनों भाई ऐसे भोजन से असन्तुष्ट थे। इस कारण हेनरी ने एक दिन कहा:—"देखो भाई, यह भोजन कुछ बुरा नहीं है। पर हम देखते हैं कि इससे हमारी शक्ति दिन दिन मानो घटती जाती है।"

जेम्स ने कहा:—"तुम्हारी शक्ति घट रही है परन्तु मेरी

शक्ति दिन दिन दूनी हो रही है। मैं अभी तुम दोनों को दबाये रख सकता हूँ।"

हेनरी ने कहा:—"ईश्वर ने तुम्हारे शरीर की ऐसी काठी बनाई है कि तुम यदि मिट्टी के लड्डू बना के खाओ तब भी तुम्हारा शरीर बलिष्ठ होता रहेगा।"

विलियम ने कहा:—"यह सब तो हँसी की बात छोड़ दो। परन्तु हम लोगों को अपने खाने-पीने का सामान कुछ अच्छा करना ही होगा।"

हेनरी ने भी इस बात पर ज़ोर दिया। इस कारण जेम्स आहार बदलने पर लाचार हुआ। नये आहार में उन लोगों का एक एक रुपया प्रति सप्ताह हर एक का लगता था।

जेम्स सुबह शाम उसी उद्वर्थ बढ़ई के यहाँ काम किया करता और अपना ख़र्चा चलाता।

जेम्स ने अपने अध्यापक से शिक्षक बनने का अभिप्राय कुछ भी न बतलाया था, लेकिन मिस्टर ब्रेंच जेम्स को बहुत प्यार करते थे और वे चाहते थे कि वह कुछ दिन तक विद्या पढ़े। वे यह भी जानते थे कि जेम्स बहुत ग़रीब का लड़का है। इस कारण उन्होंने एक दिन जेम्स को पास बुला कर कहा:—"तुम शिक्षक का काम करना पसन्द करोगे?"

जेम्स ने बड़ी ख़ुशी से कहा:—"मेरी माता मुझे इस काम को करने के लिए बहुत दिनों से कह रही हैं और मैं भी चाहता हूँ कि मैं इसे करूँ।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा :—"तुम जो अपनी माता की बात मानते हो, इससे मैं बहुत ख़ुश हुआ। अच्छा लड़का इसी का नाम है और अच्छे लड़के का यही काम है। विद्या पढ़ाने से तुम्हारी दूनी भलाई होगी। इससे तुम्हारी आर्थिक उन्नति होगी और दूसरे लड़के भी तुम से उपकृत होंगे?"

जेम्स ने पूछा :—"क्या मैं ऐसा काम पा सकता हूँ?"

"दस वर्ष पहले स्कूल भी कम थे, पढ़ने-पढ़ाने वाले भी कम थे, परन्तु अब यह बात नहीं है। अब स्कूल भी बहुत हैं, पढ़ने वाले भी बहुत हैं और शिक्षकों की भी बहुत ज़रूरत होती है, परन्तु हर आदमी इस काम में सफल नहीं होता, लेकिन हमें आशा है कि तुम इसको अच्छी तरह कर सकोगे और इस काम में कृतकार्य होगे।"

"आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं इस काम में कृतकार्य हूँगा।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा :—"पहली बात तो यह है कि तुमने अच्छी विद्या पाई है, और शिक्षक के लिए इसका होना बहुत ज़रूरी है। दूसरे यह कि तुम में विचारशक्ति बहुत तेज़ है, और तुम किसी विषय को सुन कर गूढ़ तत्व को विचारने की कोशिश करते हो। शिक्षक में इस गुण का भी होना बहुत ज़रूरी है। और तीसरे यह कि तुम बिना किसी कठिनाई के स्कूल को अच्छी तरह चला सकोगे। और आख़िर बात यह है कि जो

लड़का अपने सहपाठियों में मिलनसार होता है वही अच्छा शिक्षक हो सकता है।"

जिस समय जेम्स स्कूल में पढ़ता था उस बीच की एक घटना उल्लेख योग्य है। स्कूल के किसी दुष्ट लड़के ने पड़ोस के किसी लड़के को मारा और गाली दी। इस कारण लड़के के बाप ने अध्यापक महाशय से इसकी नालिश की। अध्यापक महाशय उस अपराधी लड़के को निकाल देने का दण्ड देना विचार रहे थे। उस समय उस अपराधी लड़के के कई साथी भी इकट्ठे होकर यही परामर्श कर रहे थे कि यदि बेल (लड़के का नाम) निकाल दिया जाय तो हम लोग भी उसी के साथ साथ स्कूल छोड़ देंगे।

यह बात जेम्स के कान में पहुँची। तब उसने उन लड़कों से पूछा:—"क्यों भाई, यदि कोई लड़का अपराध भी करे तो भी हम लोग उसका साथ देंगे ?"

उन लड़कों ने कहा :—"अपना सम्मान स्थिर रखने के लिए हम लोगों को ऐसाही करना चाहिए।"

जेम्स ने कहा:—"कभी नहीं। यदि मेरा कोई मित्र अपनी दुष्टता से कष्ट में पड़ जाय तो मैं उसकी सहायता न करूँगा।"

बेल के मित्र ने कहा:—"मैं समझता हूँ कि यह उस पड़ोसी का कमीनापन है जो वह एक विद्यार्थी के नाम नालिश

करता है केवल इस वजह से कि वह उस समय अपनी ज़बान दुरुस्त न रख सका था ।"

जेम्स ने कहा:—"मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकता क्योंकि मैं समझता हूँ कि बेल को अपनी ज़बान का उतनाही भद्र भाव से व्यवहार करना चाहिए जितना कि वह अपने हाथ-पैर को करता है ।"

बेल के दोस्त ने कहा:—"हाँ, यह सब ठीक है, परन्तु यदि वह बे जाने धोखे में पड़ जावे तो उसकी मदद करना ज़रूरी है ।"

जेम्स ने तुरन्त कहा:—"उस हालत में उसकी ज़रूर मदद करूँगा । पर कब ? जब वह अपने किये पर लज्जित और दुःखित हो ।"

"तो मैं समझता हूँ कि तुम मदद करने पर नाराज़ नहीं हो वरन् हम लोगों के ढँग पर नाराज़ हो ।"

जेम्स ने कहा:—"हाँ ठीक है । यदि बेल उस पड़ोसी से मुआफ़ी माँगे और मिस्टर ब्रेंच के पास इस बात की शपथ करने को राज़ी हो कि वह भविष्य में कभी ऐसा काम न करेगा तो मैं पहले उसके लिए कहूँगा ।"

बेल ने वैसा ही किया और उसका अपराध क्षमा हो गया । जेम्स की बात सभों ने मान ली ।

स्कूल बन्द होने के पहले जेम्स ने अपने खाने पीने का सारा ख़र्चा चुका दिया और जिस दिन स्कूल बन्द हुआ उसी दिन वह अपने घर चला गया ।

सत्रहवाँ परिच्छेद ।

घर पहुँचने के दूसरे ही दिन जेम्स किसी स्कूल की नौकरी ढूँढ़ने निकला । जाते जाते एक स्कूल के व्यवस्थापक से भेंट हुई । उनके पास जाकर जेम्स ने अपना मतलब बयान किया ।

व्यवस्थापक ने कहा:—"तुम्हारी उम्र बहुत थोड़ी है और तुम स्कूल का काम न कर सकोगे ।"

जेम्स ने कहा:—"गीग सेमिनेरी * के अध्यापक, मिस्टर ब्रेंच का सार्टिफ़िकेट मेरे पास है । आप उसको देखिए ।"

सिकत्तर ने कहा:—"मैं मानता हूँ कि तुमने अच्छी विद्या प्राप्त की है और तुम बहुत कुछ जानते हो, परन्तु हम लोग तुम्हें नियत नहीं कर सकते; क्योंकि तुम्हारी उम्र बहुत थोड़ी है और हम लोग लड़कों को शिक्षक नहीं बनाया चाहते ।"

निराश होकर जेम्स वहाँ से निकल आया । बाहर निकल कर फिर आगे बढ़ा । जाते जाते फिर एक और व्यवस्थापक से भेंट हुई ।

---

* गीग सेमिनेरी उसका नाम है जहाँ जेम्स पढ़ा करता था । सेमिनेरी स्कूल को कहते हैं और गीग उस जगह का नाम है ।

उन्होंने जेम्स का मतलब सुन कर कहा:—"हम लोगों ने एक आदमी थोड़े दिन हुए रख लिया है। अब हम लोगों को किसी और शिक्षक की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यहाँ से तीन मील दूर एक स्कूल है। मिस्टर नेलसन उसके व्यवस्थापक हैं। उनको एक आदमी की ज़रूरत है। यदि उनसे तुम मिलो तो कदाचित् वे तुम्हें रख लें।"

जेम्स को आशा की ज्योति दिखाई दी, और उसी ज्योति के सहारे आगे बढ़ा और शाम होते होते वह मिस्टर नेलसन के मकान पर पहुँच गया। मिस्टर नेलसन बड़े परोपकारी और सज्जन थे। उन्होंने जेम्स की बात सुन कर बहुत दुःख प्रकाश किया और कहा:—"यदि आप दो दिन पहले आये होते तो मैं आपको रख लेता। हम लोगों ने दो दिन हुए एक शिक्षक नियत किया है। वह बड़ा ग़रीब आदमी है और पढ़ाने से जो रुपया मिलेगा उसी से वह अपने पढ़ने का ख़र्च चलाना चाहता है।"

जेम्स ने कहा:—"मैं भी विद्याध्ययन करने ही के लिए स्कूल की नौकरी करना चाहता हूँ। इस काम में मेरा जितना अधिकार है उनका भी उतना ही अधिकार है। वरन् उनका कुछ अधिक है क्योंकि वे मुझसे पहले आये हैं।"

मिस्टर नेलसन ने पूछा:—"आप किस स्कूल में पढ़ते हैं?"

जेम्स ने कहा:—"गीग सेमिनेरी में।"

मिस्टर नेलसन ने ख़ुश होकर कहा:—"ओ हो! आप वहाँ पढ़ते हैं! वहाँ के विद्यार्थी बड़े लायक़ होते हैं। हम लोगों के

स्कूल में वहाँ के एक विद्यार्थी थे। वे बड़े लायक़ आदमी थे और बड़े नेक भी थे।"

दोनों में बात-चीत करते करते रात हो गई। इस कारण मिस्टर नेलसन कहाः—"आप आज रात को मेरे ही मकान पर रह जाइए। कल सुबह को जहाँ जी चाहे जाइएगा क्योंकि अब रात ज़्यादा हो गई है और आपको बहुत दूर जाना पड़ेगा।"

जेम्स ने इस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया और रात को वह वहीं रह गया। सबेरा होते ही जेम्स उठा और अपने शिकार की तलाश में निकला। तमाम दिन घूमता रहा। पर कोई शिकार हाथ न लगा। अन्त में निराश होकर घर लौट गया और अपनी माता से कहाः—"स्कूल की नौकरी मिलनी हमें असम्भव मालूम पड़ती है क्योंकि प्रायः सब स्कूलों में शिक्षक नियत हो चुके हैं, और एक-आध जगह जो ख़ाली भी है तो वे हमें रखना नहीं चाहते क्योंकि हमारी उम्र बहुत कम है।"

माता ने लड़के को उत्साहित करके कहाः—"बेटा, घबराओ नहीं। ईश्वर ने अवश्य ही तुम्हारे लिए कोई उपाय सोच रक्खा है, और वह उपाय क्या है इस बात का भी पता तुम्हें बहुत जल्द लग जायगा।"

जेम्स ने नैराश्यजनक वचन में कहाः—"देखें ईश्वर ने क्या उपाय सोच रक्खा है। हमें तो कुछ भी नहीं सूझता।"

माता ने कहाः—"तुम बहुत थक गये हो। अब खा-पीकर सोओ। कल जो होगा देखा जायगा।"

माँ-बेटे दोनों खा-पीकर सो गये। दूसरे दिन प्रातःकाल के समय दरवाज़े पर किसी के पुकारने का शब्द सुनाई पड़ा। उसकी आवाज़ सुनते ही जेम्स की विधवा माता बाहर निकल आईं और उससे पूछाः—"आप क्या चाहते हैं?"

उस पड़ोसी ने कहाः—"मैं आपके कनिष्ठ पुत्र जेम्स को चाहता हूँ। क्या वह हमारे स्कूल में शिक्षक का काम करेगा?"

जेम्स उस समय सो रहा था। अपने नाम के साथ स्कूल का नाम सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ और उस आगन्तुक के सामने गया।

उस पड़ोसी ने जेम्स से पूछाः—"क्या तुम हमारे स्कूल में शिक्षक का काम करना पसन्द करोगे? हम लोग २४ रुपया मासिक वेतन और खाना देंगे।"

जेम्स ने कहाः—"मैं ऐसी ही नौकरी ढूँढ़ रहा था। परन्तु शाम को मैं इसका जवाब दूँगा।"

पड़ोसी चला गया और माता-पुत्र दोनों घर के भीतर गये।

जेम्स ने कहाः—"माता, तुम तो जानती हो कि उस स्कूल के लड़के कितने दुष्ट हैं। वहाँ का शिक्षक होना कितना कठिन है। पहले तो यह कि कोई शिक्षक वहाँ टिकने नहीं पाता और दूसरे यह कि यदि पहले ही पहल मैं उस काम को करूँ और

थोड़े ही दिन में मुझे भी छोड़ कर भागना पड़े तो बड़ी लज्जा की बात होगी और इसमें हमारी बड़ी बदनामी होगी।"

माता ने कहा :—"यह तो ठीक है, परन्तु स्कूल के सब लड़के तुम्हें अच्छी तरह पहचानते हैं और सब तुम्हारी प्रतिष्ठा करते हैं। इस अवस्था में यदि तुम एक बार उन लोगों को अपने क़ाबू में कर लो और उनके बुरे अभ्यास को छुड़ा दो तो निश्चय जानो कि तुम्हारी प्रतिष्ठा जम जायगी और सब लोगों को ऐसा अनुमान हो जायगा कि तुम एक अच्छे शिक्षक हो। मेरी तो यही राय है कि तुम इस काम को कर लो, परन्तु एक बार तुम अपने चचा ऐमोस बाइंटन से भी पूछ लो। देखो वे क्या कहते हैं।"

दुपहर को खाने पीने के बाद जेम्स ने मिस्टर बाइंटन से मुलाक़ात की और अपना सारा हाल कह सुनाया।

मिस्टर बाइंटन ने बहुत देर तक सोच-विचार कर वही कहा जो उसकी माता ने कहा था।

चचा और माता की राय जब एक सी मिल गई तब जेम्स ने उसी स्कूल में पढ़ाना स्वीकार किया और शाम को उस पड़ोसी से कह आया कि मैं आपके स्कूल में पढ़ाऊँगा।

दो तीन दिन में यह बात चारों ओर फैल गई कि जिम गारफ़ील्ड जाड़े में पढ़ाने का काम करेगा। लड़के जब कभी आपस में मिलते यही कहते:—"जिम बहुत अच्छा आदमी है। हम लोग उसके पास बहुत ख़ुशी से पढ़ेंगे।"

जिस दिन स्कूल खुला उस दिन जेम्स ने अपनी मां से कहा—"मैं स्कूल जाता हूँ। लेकिन शायद दोपहर तक मुझे लौट आना पड़ेगा।"

माता ने कहा:—"नहीं बेटा, हमें विश्वास है कि तुम इस काम को बहुत सफलता से करोगे।"

जेम्स ने अपने मन में ठान लिया था कि वह स्कूल में जहां तक बन पड़े किसी लड़के को बेंत न मारेगा और कोई कठिन नियम भी जारी न करेगा। वह चाहता था कि स्कूल में उसकी हुकूमत मज़बूत हो, परन्तु यह नहीं चाहता था कि किसी पर कुछ अत्याचार हो, इस कारण उसने आते ही लड़कों से अपना मतलब बयान किया और कहा:—"लड़को, मेरे यहाँ आने का उद्देश यह है कि मैं तुम लोगों को तुम्हारे लिखने-पढ़ने में, जहाँ तक सम्भव हो, सहायता करूँ, जिससे तुम लोग अपने काम में उन्नति करो। तुम सब लोग बड़े लड़के हो और सब बुद्धिमान हो। इस कारण तुम अपनी और अपने स्कूल की भलाई-बुराई अच्छी तरह समझते हो। मैं हर तरह से इस बात का प्रयत्न करूँगा कि यह एक अच्छा स्कूल हो जाय, और जो तुम लोग भी मेरी सहायता करो तो कदाचित् थोड़े ही दिनों में इस गाँव भर में यह स्कूल सबसे अच्छा हो जायगा।"

लड़कों ने जिम गारफ़ील्ड की बात मान ली। बड़े बड़े लड़के आपसे आप उसके क़ाबू में होते गये, और जिन जिन बदमाशियों के लिए स्कूल पहले से बदनाम था वे बदमाशियाँ

धीरे धीरे दूर होने लगीं। लड़कों ने धीरे धीरे बदमाशी छोड़ लिखने-पढ़ने की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। जेम्स लड़कों के खेल-कूद में वैसा ही शरीक होता था जैसा कि उनके लिखने-पढ़ने में होता था। तात्पर्य यह कि थोड़े ही दिन में जेम्स की प्रतिष्ठा अच्छी तरह जम गई।

जेम्स भी पारी बाँध कर विद्यार्थियों के घर में रहा करता था। इस कारण नहीं कि वह केवल लड़कों ही को अपनी बात चीत से मोहित करता था वरन् उनके पिता-माता भी उनके व्यवहार पर लट्टू हो गये थे।

जाड़ा बीतने पर जब जेम्स ने स्कूल छोड़ा तब स्कूल के कार्य-कर्त्ताओं और विद्यार्थियों के माता-पिता ने मिल कर एक सार्टि-फ़िकेट दिया जिसमें लिखा था कि "जबसे यह स्कूल क़ायम हुआ है तबसे हम लोगों ने मिस्टर गारफील्ड से बढ़ कर कोई शिक्षक नहीं पाया।

स्कूल खुलने पर वह फिर गीग सेमिनेरी लौट गया और फिर पढ़ने लगा। वहाँ की पढ़ाई पूरी होने पर उसने दूसरे जाड़े में दूसरे स्कूल में मास्टरी की। वहाँ उसको ३२) मासिक वेतन और खाना मिलता था।

इस स्कूल में एक बड़े लड़के ने रेखागणित (Geometry) पढ़ना चाहा। जेम्स ने कुछ दिन उसे टाला और इसी बीच में उसने रेखागणित की एक पुस्तक ख़रीद कर रात को पढ़ना आरम्भ किया। कुछ दिन में उसने उस विषय को अच्छी तरह

पढ़ लिया और तब उस लड़के को उसने पढ़ाना शुरू किया। उस लड़के को इस बात का पता न लगा कि उसका शिक्षक उस विद्या को नहीं जानता था।

जेम्स जब तब कहा करता था:—"जब कोई आदमी किसी काम को करता है तब उसको जान लेना चाहिए कि वह उस काम को न करने वालों से ज़्यादा जानता है।"

एक दिन लड़कों के साथ खेलते खेलते जेम्स गिर पड़ा और उसकी पतलून फट गई। इस कारण वह बहुत दुःखित हुआ। उस समय वह मिसेस स्टैलस के यहाँ रहा करता था। मिसेस स्टैलस ने इन्हें दुःखित देख कर कारण पूछा।

तब जेम्स ने कहा:—"मेरी पतलून फट गई है, और मेरे पास दूसरी पतलून भी नहीं है।"

मिसेस स्टैलस ने कहा:—इसके लिए दुःखी मत हो। रात को जब तुम सोओगे तब मैं तुम्हारी पतलून सी दूँगी और किसी को न मालूम होगा कि यह फटी थी।

स्कूल बन्द होने पर जेम्स घर लौट गया।

अठारहवाँ परिच्छेद

गी ग सेमिनेरी में जेम्स ने तीन साल पढ़ा था। जब तीसरे साल वह वहाँ पढ़ रहा था उस समय उससे न्यू इँगलैण्ड के एक विद्वान् से मुलाक़ात हुई थी। उसने जेम्स की बुद्धि और तीक्ष्णता देख कर एक दिन उससे कहा:—"तुमने स्कूल का पढ़ना समाप्त कर लिया है। अब तुम्हें कालिज में पढ़ना चाहिए और वहाँ से बी० ए० पास करना चाहिए।"

जेम्स ने कहा:—"मैं तो चाहता हूँ कि कालेज में पढ़ूँ और बी० ए० पास करूँ, परन्तु मेरे लिए ऐसा करना सम्भव नहीं मालूम होता; क्योंकि मेरे पास पैसा नहीं है, और बिना पैसे के कालिज की पढ़ाई सम्भव नहीं है।"

उस विद्वान् ने कहा:—"बहुत से ग़रीबों के भी लड़के कालिजों में पढ़ते हैं और अपना ख़र्चा आपही चलाते हैं। कोई तो स्कूल पढ़ा कर रुपया कमाते हैं, कोई माली का काम करके, कोई खेती करके और कोई बढ़ई का काम करके। जो जिस काम को कर सकता है वह उसी को करके रुपया कमाता है और अपना ख़र्चा आपही चलाता है।"

इन बातों को सुन कर जेम्स बहुत .खुश हुआ और उसने कहा:—"अब तो मैं देखता हूँ कि कालेज में पढ़ना मेरे लिए सम्भव मालूम होता है क्योंकि मैं बहुत तरह के काम कर सकता हूँ और काम करने में मैं न थकता हूँ, न ऊबता हूँ।"

फिर जेम्स ने पूछा:—"कितने दिन में मैं बी० ए० पास कर सकता हूँ और कितना मेरा ख़र्चा पड़ेगा ?"

विद्वान् ने कहा:—"चार वर्ष में तुम बी० ए० पास कर सकते हो, और ४००) वार्षिक से कम में किसी तरह ख़र्चा नहीं चल सकता।"

जेम्स ने कहा:—"मुझे बी० ए० पास करने में कदाचित् अधिक समय लगेगा क्योंकि मैं स्कूल में मास्टरी भी करूँगा और कालिज में भी पढ़ूँगा, परन्तु यदि १२ वर्ष में भी बी० ए० पास कर सकूँ तो भी मैं बिना पास किये न छोड़ूँगा।"

उसने और भी कई उपाय बतलाये जिससे जेम्स वहाँ ज़रूर पढ़ सके। जेम्स ने भी कालेज में पढ़ने का दृढ़ संकल्प कर लिया और इस कारण उसने लैटिन और ग्रीक दो भाषायें सीखनी आरम्भ कर दीं क्योंकि कालिज में ये दो भाषायें पढ़ाई जाती हैं।

उसी समय जेम्स ने "कृस्तान-धर्म-महा-मण्डल" में अपना नाम लिखाया और धर्म के विषय में उसने कई एक वक्तृतायें दीं। उसकी वक्तृतायें ऐसी लुभावनी और युक्तिपूर्ण हुआ करती थीं कि लोग दूर दूर से सुनने आया करते थे। तब से लोगों ने

भविष्य वाणी करना शुरू किया था कि जेम्स एक बहुत बड़ा वक्ता और धर्मशिक्षक होगा।"

गीग सेमिनरी के अध्यापक महाशय, मिस्टर ब्रेंच, भी यही कहा करते थे कि एक दिन वह एक बड़े समाज में वक्तृता देगा।

लड़के भी यही कहते थे कि जिमी बहुत बड़ा धर्म-शिक्षक होगा। सब लोगों को मानो ऐसा विश्वास हो गया था कि भगवान् ने उसको धर्मशिक्षा देने ही के लिए बनाया है।

गीग सेमिनरी में गर्मी की छुट्टी होने पर जेम्स घर लौट गया और छुट्टी बिताने के लिए काम ढूँढने लगा। अब की बार गीग सेमिनरी का एक लड़का उसके साथ काम करने की इच्छा से आया था।

दोनों काम की खोज में निकले। जाते जाते एक किसान से मुलाक़ात हुई और जेम्स ने उससे अपना मतलब कह सुनाया और पूछा:—"तुम्हें किसी आदमी की भी ज़रूरत है?"

उस किसान ने पूछा:—"तुम लोग क्या काम कर सकते हो? तुम लोग तो विद्यार्थी मालूम होते हो।"

जेम्स ने कहा:—"हाँ, हम लोग विद्यार्थी हैं, और हम लोग इसी तरह काम करके विद्या-उपार्जन करते हैं। जो काम आपका जी चाहे हम लोगों को दीजिए, हम लोग उसे कर देंगे।"

किसान ने पूछा:—"तुम लोग क्या वेतन लोगे?"

जेम्स ने कहा:—"जितना आप ठीक समझेंगे उतना ही दीजिएगा।"

किसान ने उनकी बात मान ली और वह उन लोगों को खेत में ले गया। खेत में तीन आदमी काम कर रहे थे। उन आदमियों से किसान ने कहा:—"ये दो लड़के तुम्हारी सहायता करेंगे। तुम इनको काम बता दो, और इन से काम लो।"

जेम्स और उसके साथी ने काम करना शुरू किया और उन्होंने चाहा कि उन तीन आदमियों को हरा दें। इस कारण उन्होंने बहुत शीघ्रता से काम करना शुरू किया। उनका मालिक भी वहीं खड़ा तमाशा देख रहा था। घंटे भर बाद जब उसने देखा कि उन आदमियों की अपेक्षा इन दो लड़कों ने बहुत काम किया है तब उसने चिल्लाकर कहा:—"रे काहिलो, बड़ी लज्जा की बात है कि दो बालकों ने तुम तीनों को हरा दिया।" उन लोगों ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया। वे चुपचाप अपना काम करते रहे। किसान वहाँ से चला गया।

जब काम पूरा हो गया तब किसान ने सभों को दाम देने के लिए बुलाया और जेम्स और उसके साथी से कहा:—"लड़को, तुम लोग कितना दाम लोगे?"

जेम्स ने कहा:—"जो कुछ आप ठीक समझें वही दीजिए।"

उसने कहा:—"तुम लोग आख़िर लड़के ही हो, इस कारण तुम को लड़कों का सा दाम मिलना चाहिए।"

जेम्स ने कहाः—"लेकिन हम लोगों ने काम आदमियों का सा किया है, बल्कि उनसे भी ज़्यादा। इसलिए दाम आदमियों का सा मिलना चाहिए।"

"बाज़े लड़के आदमियों का सा काम करते हैं परन्तु वे लड़के ही कहलाते हैं।"

"यह सब ठीक है, परन्तु दाम तै करते समय मैंने आपसे कहा था कि जो दाम आप ठीक समझेंगे वही दीजिएगा। अब जो दाम आप दे रहे हैं क्या वह ठीक है। यदि आप ठीक समझें तो हमें लेने में कोई इनकार नहीं।"

किसान इस बात पर लज्जित हुआ और आदमियों की सी मज़दूरी देकर उनको बिदा किया। उन लोगों के जाते समय उसने जेम्स से कहाः—"यदि तुम इस बीच में कोई वक्तृता दो तो मुझे ख़बर देना मैं तुम्हारी वक्तृता सुनने आऊँगा।" यह कह कर उन दोनों को आशीर्वाद देकर किसान ने बिदा किया।

जेम्स ने अपने साथी से कहाः—"हमें बहुत आश्चर्य मालूम होता है कि क्यों लोग यह कहते हैं कि मैं वक्ता या धर्म-शिक्षक होऊँगा।"

उसके साथी ने कहाः—"क्योंकि वे देखते हैं कि तुम में वक्तृता देने के गुण उपस्थित हैं।"

उस समय दासत्व-निवारिणी सभा बड़ा काम कर रही थी। चारों ओर नित्य ऐसी सभायें स्थापित होती थीं और लोग

इस बात की कोशिश करते थे कि किसी प्रकार संसार से दासत्व की प्रथा उठा देवें । गीग सेमिनेरी के शिक्षक और विद्यार्थी गण भी इसी की चर्चा किया करते थे । एक दिन जेम्स ने कहा:—"बड़े शर्म की बात है कि जिस देश के लोगों ने ब्रिटेन-निवासियों की अधीनता से छूटने का इतना प्रयत्न किया था वे ही लोग अपने देश-वासियों पर इतना अत्याचार करें कि उनके अमूल्य जीवन को नीच दासत्व की शृङ्खला में जकड़ के उनकी स्वाधीनता और सुख-सम्पत्ति सदा के लिए छीन लेवें । यदि दासत्व दूर न किया जाय तो इस देश का कल्याण होना असम्भव है । यदि अब भी हम लोग इस विषय पर ध्यान न दें तो फिर यह देश सदा के लिए अज्ञान की गोद में पड़ा रहेगा ।"

इससे यह मालूम होता है कि जेम्स लड़कपन ही से दासत्व की प्रथा से बड़ी घृणा रखता था ।

तीन वर्ष तक गीग सेमिनेरी में पढ़ने के बाद जब जेम्स स्कूल छोड़ कर घर लौटने को था उसी समय उस स्कूल की वार्षिक प्रदर्शिनी होने वाली थी । उस प्रदर्शिनी में जेम्स ने एक वक्तृता दी थी । स्कूल में वही उसकी अन्तिम वक्तृता हुई । उस वक्तृता को सुन कर लोगों ने उसकी बड़ा प्रशंसा की और बड़ों ने आशीर्वाद दिया कि वह अपने भविष्य जीवन में प्रत्येक काम में पूरी सफलता लाभ करे ।

स्कूल का पाठ समाप्त करके जेम्स घर गया । वहाँ पहुँच

कर देखा कि उसकी माता अपने किसी कुटुम्बी से मुलाक़ात करने के लिए जाने की तैयारी कर रही है। इनके कई कुटुम्बी मस्किंगम नगर में रहा करते थे। आरेंज से मस्किंगम प्रायः ३०—४० मील दूर था। जब जेम्स घर पहुँचा तब उसकी माता ने कहा:—"तुम भी हमारे साथ मस्किंगम चलो। वहां मैं तीन चार महीने रहूँगी। तुम अपने पढ़ने की किताबें ले चलो। उन्हें पढ़ना और इसके सिवा यदि और कोई काम मिल जाय तो वह भी करना।"

जेम्स ने ख़ुश होकर कहा:—"मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ वहाँ जाऊँ और दूर दूर के मुल्कों को देखूँ, परन्तु मैंने कालिज में पढ़ने का विचार भी किया है और हमें उसके लिए बन्दोबस्त करना होगा।"

जब जेम्स की माता ने सुना कि जेम्स कालिज में पढ़ना चाहता है तब उसका हृदय आनन्द से गद्गद हो गया। उन्होंने कहा:—"तुम वहाँ जाकर अपना समय व्यर्थ न खोना। अपने पढ़ने की किताबें ले चलो। वहाँ पढ़ा करना। यदि कोई काम मिल जाय तो उसे करना।"

जेम्स राज़ी हो गया और माँ-बेटे दोनों ने क्लीभलैण्ड के लिए यात्रा कर दी। क्लीभलैण्ड पहुँच कर जेम्स को उस जहाज़ के कप्तान की बात याद आई। और, अपनी नहर की नौकरी की बात याद आई। परन्तु उसने कुछ कहा नहीं।

क्लीभलैण्ड से रेल पर जाना पड़ता था। जेम्स ने इसके पहले रेल कभी न देखी थी। उसको रेल देख कर बहुत आनन्द हुआ। रेल पर वे जाते जाते कोलम्बस पहुँचे। वहाँ पहुँच कर जेम्स ने राजदरबार और सरकारी विचारालय देखे। उन्हें देख कर उसका चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। वहाँ पर उसने यह भी सीखा कि राज्य-शासन किसे कहते हैं और राज्य का काम कैसे किया जाता है। उसने अपनी माता से एक दिन कहा:—"मेरे परम भाग्य थे कि मैं तुम्हारे साथ आया, नहीं तो इन सब बातों को न देख पाता। एक महीना स्कूल पढ़ाने से हमें जितना आनन्द मिलता उससे बहुत अधिक आनन्द इनके देखने से हमें मिला है।"

इन सब दृश्यों को देखते हुए माँ-बेटे दोनों जेनेसवेली पहुँचे। वहाँ से नाव भाड़ा करके वे मस्किंगम पहुँचे। इनके कुटुम्बी इनको देख कर बहुत ख़ुश हुए।

चार पाँच दिन तक बड़े आनन्द में समय बिताने के बाद जेम्स का चित्त काम करने के लिए व्याकुल हो उठा।

उसकी चची ने कहा:—"तुम्हें यहाँ मास्टरी का काम मिल सकता है। तुम्हारे चचा आवें तो तुम्हें बतावेंगे कि कहाँ वह स्कूल है और किसके पास अर्ज़ी भेजनी चाहिए।"

चचा ने जब पता बता दिया तब जेम्स ने एक अर्ज़ी भेज दी। अर्ज़ी मंज़ूर हो गई, और जेम्स ने २४) मासिक वेतन

और भोजन पर स्कूल पढ़ाना आरम्भ कर दिया। तीन महीने तक इस काम को करने के बाद स्कूल बंद हो गया और जेम्स बड़ों से आशीर्वाद ग्रहण करके बिदा हुआ। घर से आते समय जेम्स ख़ाली हाथ आया था, परन्तु जाते समय उसके पास प्रायः ७०) रुपये थे। इन्हीं रुपयों को लेकर वह अपनी माता के साथ घर लौटा।

—

उन्नीसवाँ परिच्छेद ।



रेंज से थोड़ी दूर पर हिराम नाम का एक नगर था। वहाँ एक नया विद्यालय स्थापित किया गया था जिसका नाम "इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट" (Electric Institute) था। वहाँ की परीक्षायें पास करने के बाद यदि कोई विद्यार्थी कालेज में पढ़ने जाता तो उसका बहुत सा समय और रुपया बच जाता था, क्योंकि कालेज की बहुत सी पढ़ाई इसी विद्यालय में हो जाती थी। जब जेम्स ने इस बात को सुना तब वह तुरन्त हिराम की ओर रवाना हुआ। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यू ट की आलीशान इमारत मैदान में खड़ी है। और सामने फाटक पर एक दरबान खड़ा है। उसने दरबान से कहा :—"मैं प्रिन्सिपल साहब से मिलना चाहता हूँ।"

दरबान ने कहा :—"प्रिन्सिपल साहब इस समय इस विद्यालय की कार्य-कारिणी सभा में हैं और वहाँ पर सभापति महाशय तथा अन्यान्य प्रतिनिधिगण भी उपस्थित हैं। इसलिए इस समय उनसे मिलना कठिन है।"

जेम्स ने कहा :—"तुम कृपा करके उनसे इतना कह दो कि एक विद्यार्थी आपसे मिलना चाहता है।"

दरबान ने वैसाही किया और प्रिन्सिपल साहब ने जेम्स को बुलवा भेजा।

जब जेम्स भीतर गया तब प्रिन्सिपल ने पूछा:—"तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, और क्या चाहते हो?"

जेम्स ने कहा:—"मेरा नाम जेम्स एबरम गारफ़ील्ड है। मैं आरेंज से आया हूँ, और मैं आपके विद्यालय में पढ़ना चाहता हूँ। मेरा बाप नहीं है। मैं अनाथ हूँ।"

प्रिन्सिपल ने पूछा:—"इस विद्यालय में जो कुछ पढ़ाया जायगा सभी तुम पढ़ोगे?"

जेम्स ने कहा:—"मैं अवश्यही पढ़ूँगा यदि मुझे यहाँ कुछ काम मिल गया। मैंने सोचा था कि मुझे यहाँ झाड़ू देने और घंटा बजाने का काम मिल सकता है।"

प्रिन्सिपल ने पूछा:—"तुमने कितने साल स्कूल में पढ़ा है?"

"गोग सेमिनेरी में मैंने तीन साल पढ़ा है।"

"तब तो तुमने साधारण विद्यार्थियों से बहुत ज़्यादा पढ़ा है।"

"नहीं मैंने कुछ ज़्यादा नहीं पढ़ा। ज़्यादा जानने में केवल लैटिन और ग्रीक भाषा थोड़ी सीखी है।"

"तो क्या तुम्हारा विचार कालेज में पढ़ने का है?"

"जी हाँ, मैं कालेज में पढ़ा चाहता हूँ।"

सभापति महाशय ने पूछा :—"अच्छा, हमें इस बात का कैसे पता लगे कि तुम भाड़ू देने और घंटा बजाने का काम अच्छी तरह कर सकोगे ?"

जेम्स ने कहा :—"मुझे आप दो हफ़्ते तक परीक्षा करके देख लीजिए। अगर मैं कर सकूँ तो वाह वाह और नहीं तो मैं चुपचाप यहाँ से चला जाऊँगा।"

जेम्स की बात पर सब लोग प्रसन्न हुए। वह स्कूल में भर्ती कर लिया गया।

"थोड़े ही दिनों में शिक्षकों और विद्यार्थियों को मालूम हो गया कि जेम्स एक असाधारण लड़का है।"

एक दिन उसने प्रिन्सिपल से कहा :—" क्या आप मुझे कृपा करके बता दीजिएगा कि मैं कौन सा कोर्स पढ़ूँ, जिससे मुझे अधिक लाभ हो ?"

प्रिन्सिपल ने कहा :—"अभी तो जो कोर्स स्कूल में पढ़ाया जाता है वही पढ़ो। दूसरे साल देखा जायगा कि कौन सा कोर्स तुम्हें दिया जाय।"

घंटा बजाने का काम किसी काहिल और सुस्त लड़के के लिए बहुत कठिन काम था क्योंकि उस काम में एक मिनट इधर उधर होने से सारे काम बिगढ़ जाने की सम्भावना थी। झाड़ू देना भी कोई सहल काम नहीं है क्योंकि उसमें सफ़ाई का ध्यान रहना चाहिए। जिस आदमी के चित्त में सफ़ाई का ध्यान

नहीं वह अच्छी तरह झाड़ू नहीं दे सकता। जेम्स ने उन दोनों कामों को बड़ी सफ़ाई से निबाहा।

एक दिन उसके एक साथी ने कहा :—"तुम पढ़ने में जितना परिश्रम करते हो झाड़ू देने में भी उतना ही परिश्रम करते हो। इसका क्या कारण है? प्रायः लड़कों का नियम होता है कि अच्छे काम में जितना परिश्रम करते हैं, नीच और भद्दे काम में उतना नहीं करते।"

जेम्स ने कहा :—"तुम्हारे विचार बड़े भद्दे हैं। हर आदमी को चाहिए कि जिस काम को वह करे उसी को सफ़ाई से करे, चाहे वह कितनाही भद्दा क्यों न हो। भद्दा हो लेकिन बुरा काम न हो, क्योंकि बुरा काम किसी को करना ही न चाहिए।"

उस साथी ने जेम्स की बात मान ली और अपनी हार स्वीकार की।

उस इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में बहुत से विद्यार्थी पढ़ा करते थे। उनमें एक स्त्री भी पढ़ती थी जिसका नाम मिस बूथ था। उसके साथ जेम्स की बड़ी प्रीति थी क्योंकि वह लिखने-पढ़ने में बड़ी तेज़ थी और जेम्स से किसी किसी विषय में अधिक जानती थी। जेम्स ने उस स्त्री से बहुत सहायता ली।

एक साल तक दरबान का काम करने के बाद जेम्स की तरक्क़ी हुई और वह उस विद्यालय का शिक्षक बनाया गया। वह इस स्कूल में किसी किसी दर्जे को पढ़ाया करता और स्वयं भी

पढ़ा करता था। उसी समय उपरिलिखित मिस बूथ से मित्रता हुई।

मिस बूथ पहले पहल जेम्स से दर्जे में कुछ बढ़ी हुई थी परन्तु थोड़े दिनों में जेम्स उसके साथ होगया और दोनों साथ पढ़ने लगे। दोनों एक दूसरे की सहायता पाते और पढ़ने की उन्नति करते थे।

एक दिन प्रिन्सिपल साहब ने जेम्स को व्याख्यान लिखने के लिए कहा। आज्ञा पाते ही जेम्स तुरन्त मिस बूथ के कमरे में गया और कहने लगा—"मैं आपकी सहायता चाहता हूँ।"

मिस बूथ ने पूछा:—"किस काम में सहायता माँगते हो? मैं देने को राज़ी हूँ।"

"एक व्याख्यान लिखने में।"

वह राज़ी हो गई। दोनों मिल कर उस व्याख्यान को लिखने बैठे। उस विषय का व्याख्यान बनाने और लिखने में दोनों इतने डूबे हुए थे कि उनको समय का कुछ भी ख़याल न था। लिखते लिखते सारी रात बीत गई। अन्त में जब प्रातःकालीन सूर्य की किरणों की सुनहरी छटा कमरे के झरोखों से झाँकने लगी तब दोनों चौंक उठे और देखा तो सबेरा हो गया था। दोनों प्रातःक्रिया समाप्त करके फिर लिखने बैठे और लिखना समाप्त करने के बाद भोजन आदि किया।

जेम्स को अपने धर्म में बहुत बड़ा अनुराग था। इस कारण हिराम के पादरी साहब जब कभी कोई व्याख्यान देते तभी

जेम्स को अपने पास बुला लेते और कभी कभी उससे भी कोई कोई वक्तृता दिलाते थे ।

जब कभी पादरी महोदय गाँव में उपस्थित न रहते थे तब वे जेम्स ही को अपना आसन ग्रहण करने के लिए निमन्त्रण करते और जेम्स भी उस काम को बहुत अच्छी तरह निबाहता था । सुनने वाले बहुत प्रसन्न होते और पादरी साहब भी बहुत आनन्दित होते थे ।

एक दिन पादरी साहब उससे व्याख्यान दिलाने के लिए उसे गिर्जे में ले गये थे, और जिस समय पादरी साहब व्याख्यान दे रहे थे उसी समय कई आदमियों ने आकर जेम्स को पकड़ कर कहा:—"आप कृपा करके हम लोगों की सभा में एक राष्ट्रीय वक्तृता देने को चलिए क्योंकि आज वहाँ के व्याख्यान-दाताओं की चेष्टा निष्फल हो रही है और लोग असन्तुष्ट होकर उठ उठ कर चले जा रहे हैं ।"

बिना कुछ कहे जेम्स उठ खड़ा हुआ और उन लोगों के साथ चल दिया । जब कई सीढ़ी उतर गया तब पादरी साहब ने देखा और कहा:—"जेम्स, मत जाओ, लौट आओ ।" फिर क्या सोच कर उन्होंने श्रोताओं की ओर फिर कर कहा:—"ख़ैर उसको जाने दो । वह लड़का अवश्य ही किसी न किसी दिन 'युनाईटेड स्टेट्स का प्रेसीडेन्ट' * होगा ।"

जेम्स जिस समय चेस्टर के गीग सेमिनेरी में पढ़ता था

* युनाईटेड स्टेट्स के राजा को प्रेसीडेन्ट कहते हैं ।

उस समय एक लड़की वहाँ पढ़ती थी जिसका नाम ल्युक्रिशिया रुडाल्फ़ था। वह बड़ी नेक और बुद्धिमती थी। लिखने-पढ़ने में भी वह बड़ी तेज़ थी। जेम्स उस लड़की की नम्रता, भद्रता और बुद्धिमत्ता की बड़ी प्रशंसा किया करता था। जब जेम्स हिराम के विद्यालय में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का काम करता था उस समय उस लड़की के माता-पिता हिराम में आये थे जिसमें कि उस लड़की को अच्छी शिक्षा दे सकें। ल्युक्रिशिया रुडाल्फ़ ने इसी इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में नाम लिखाया। जेम्स भी एक ऐसे तेज़ विद्यार्थी को पाकर बहुत ख़ुश हुआ। वह उसको लैटिन और ग्रीक पढ़ाया करता था और उसको उसके पाठ में बहुत सहायता करता था। उस समय जेम्स यह न जानता था कि उससे और उस लड़की से गुरु-शिष्य का सम्बन्ध छोड़ कर और भी कोई सांसारिक सम्बन्ध होगा या नहीं। परन्तु जब जेम्स ने स्कूल छोड़ा उस समय उस लड़की ने कहा:—"जब तुम कालिज की पढ़ाई समाप्त करके कोई नौकरी पाओगे तब मैं तुमसे विवाह करूँगी।"

गुणवती मिस ल्युक्रिशिया रुडाल्फ़ के अनुपम सौन्दर्य ने जेम्स के हृदय पर अधिकार जमा लिया। लोग इस अधिकार को असामयिक अधिकार समझ कर यह आशङ्का किया करते थे कि कदाचित् जेम्स के लिखने-पढ़ने की यहीं इतिश्री न हो जाय। उनका ऐसा सोचना अनुचित न था क्योंकि प्रायः देखने में आता है कि यदि छात्रावस्था में कोई विद्यार्थी प्रेम के

बन्धन में बँध जाता है तो उसका लिखना-पढ़ना चौपट हो जाता है; परन्तु जो लोग ऐसा सोचा करते थे उनको जेम्स की चित्त-वृत्ति और संकल्प-सिद्धि का पूरा पूरा हाल मालूम न था। प्रेम-शून्य-हृदय निर्जीव जड़ पदार्थ के तुल्य है। जेम्स के जड़ शरीर में जब मिस रुडाल्फ़ की प्रेमरूपी जीवनी शक्ति पैठ गई तब उसका शून्य हृदय खिल गया और उसने अपनी ज़िम्मेदारी के भार को पूरी तौर से समझ लिया। उस जीवनी शक्ति के उकसने से जेम्स दिन पर दिन उन्नति करता रहा और दो ही वर्ष में कालिज का पाठ समाप्त कर लिया।

एक बार जून के महीने में जब स्कूल में एक महीने की छुट्टी हुई तब सब लड़कों ने मिल कर रुडाल्फ़ जाना चाहा जो कि २५ मील दूर था। जेम्स भी उनके साथ था। वह सब लड़कों को हँसाता खिलाता जाता था, और सभों को तरह तरह के क़िस्से, बड़े लोगों की जीवनी और तरह तरह की कवितायें सुनाता हुआ मार्ग का परिश्रम दूर करता हुआ जाता था। इन सब कारणों से सब लोग उसको प्यार करते थे।

एक वार ऐसा हुआ कि क्लीभलैण्ड का रहने वाला एक वकील हिराम में आकर रहने लगा। वहुत दिनों तक वहाँ रहने से परिवार के लोगों से भेंट नहीं हुई थी। इस कारण घर के लिए उसका मन बहुत घबराया हुआ था। वह लिखता है:—"जब मेरा जी बहुत घबराया हुआ था, उस समय मैं एक दिन इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट देखने के लिए गया। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि

एक जवान आदमी एक दर्जे में बीजगणित पढ़ा रहा था। वह मेरी शोचनीय अवस्था देख कर मेरे पास आया और मेरे कन्धे पर हाथ धर कर मेरा हाल पूछने लगा। मेरे कन्धे पर उसके हाथ रखते ही मेरी व्याकुलता दूर हो गई।"

इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में पढ़ना समाप्त होने के बाद प्रिन्सिपल साहब ने एक दिन जेम्स से पूछा:—"क्या तुम बेथनी कालिज में पढ़ोगे ?"

जेम्स ने कहा:—"पहले हमारा यही विचार था, परन्तु अब मैं सोचता हूँ किसी और कालिज में पढ़ूँ।"

प्रिन्सिपल के कारण पूछने पर जेम्स ने कहा:—"बेथनी कालिज की पढ़ाई बहुत थोड़ी होती है।"

"तो तुम अधिक विद्या पढ़ना चाहते हो ?"

जेम्स ने कहा:—"बेथनी कालिज हमारी ही मण्डली के लोगों ने स्थापित किया है, और मैं चाहता हूँ कि अपनी मण्डली के बाहर क्या है, उसको भी सीखूँ और विद्या भी कुछ अधिक पढ़ूँ और तीसरा कारण यह है कि बेथनी कालिज के लोग दासत्व के बड़े पक्षपाती हैं। इन्हीं तीन कारणों से मैं चाहता हूँ कि न्यू इँगलैण्ड के किसी कालिज में पढ़ूँ।"

"तुमने न्यू इँगलैण्ड के किस कालिज में पढ़ने का विचार किया है ?"

"मैंने अभी ठीक तौर से स्थिर नहीं किया कि किस कालिज में पढ़ूँगा, परन्तु मैं वहां के तीन बड़े बड़े कालिजों को लिखनेवाला

हूँ। वहाँ से जवाव मिलने पर मैं बता सकता हूँ कि मैं किस कालिज में पढ़ूँगा और कितने दिन मुझे पढ़ना पड़ेगा।"

जेम्स ने तीनों कालेजों के प्रिन्सिपलों को चिट्ठी लिख दी।

थोड़े दिनों में सब कालिजों से जवाब आ गया। सब लोग उसे अपने यहाँ लेने को राज़ी थे और सभों की यही राय थी कि दो वर्ष में वह कालिज की पढ़ाई समाप्त कर लेगा। विलियम कालिज के प्रिन्सिपल, डाक्टर हापकिन्स ने जेम्स को लिखा था:—"तुम यहाँ आओ और तब मैं तुम्हारे लिए जो कुछ कर सकता हूँ, करूँगा।"

जेम्स उस चिट्ठी को पढ़ कर बहुत ख़ुश हुआ और उसने विलियम्स कालिज ही जाने का विचार किया।

विलियम्स कालिज जाने के दो तीन हफ़्ते पहले जेम्स के भाई ने उससे पूछा:—"तुमने विलियम्स कालिज में पढ़ने के लिए रुपये का क्या बन्दोबस्त किया है?"

जेम्स ने कहा:—"रुपये का कुछ बन्दोबस्त तो नहीं किया है, परन्तु मैंने सोचा है कि वहाँ भी कोई काम करूँगा और उस काम को करके जो रुपया कमाऊँगा उसीसे अपने पढ़ने का ख़र्च चलाऊँगा।"

उसके भाई ने कहा:—"तुम्हें वहाँ काम करने की फ़ुरसत न मिलेगी।"

जेम्स ने कहा:—"स्कूल में पढ़ाने का काम करके हो चाहे बढ़ई का काम करके हो, जैसे हो, मैं ज़रूर रुपया कमाऊँगा।"

भाई ने कहा:—"तुम मुझसे कुछ रुपया उधार लो, और उनसे अपने पढ़ने का ख़र्चा चलाओ।"

"उधार लेना तो बड़ी बात नहीं है, परन्तु चुकाऊँगा कैसे और कब?"

"जब तुमसे देते बने तभी दे देना।"

जेम्स ने कहा:—"यदि देने के पहले मैं मर जाऊँ तो क्या होगा।"

"वह नुक़सान तो मेरा होगा।"

"नहीं मेरे लिए तुम्हारा नुक़सान क्यों हो। परन्तु यदि तुम मुझे रुपया दिया ही चाहते हो तो मैं एक उपाय कर सकता हूँ। मैं हज़ार रुपये का अपना जीवन-बीमा करा लूँ। अगर मैं मर जाऊँ तो वह रुपया तुम्हें मिल जायगा और यदि जीवित रहा तो मैं स्वयं ही तुम्हारा रुपया अदा कर दूँगा।"

इस बात पर भाई राज़ी हो गया और जेम्स ने अपना जीवन-बीमा १०००) का करा लिया।

बीसवाँ परिच्छेद

विलियम्स कालेज में गर्मी की छुट्टी समाप्त हो चुकी थी और कालिज खुलने पर नये लड़के भरती किये जा रहे थे। जेम्स भी ठीक समय पर वहाँ पहुँचा और डाक्टर हापकिन्स से मिला और अपना नाम-धाम बताया।

यह कहा जा चुका है कि जेम्स गारफ़ील्ड बहुत ही सादी चाल-ढाल से रहता था। पढ़ने-लिखने के सामने उसको अपने खाने-पीने और कपड़े-लत्ते का किसी प्रकार का भी शौक़ न था। जब वह जेम्स हापकिन्स से मिलने गया तब भी वह वही साधारण फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था। उसके बलिष्ठ शरीर, गँवारों का सा चेहरा और फटे-पुराने कपड़ों को देख कर प्रेसीडेंट साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे अपने मन में कहने लगे कि "जिसकी भाषा में इतना माधुर्य, इतना लालित्य है उसकी बाहरी बनावट कुछ भी नहीं।"

जेम्स ने अपनी भरती के लिए जो पत्र प्रेसीडेंट साहब को लिखा वह अत्यन्त सुललित भाषा में लिखा गया था। उसको पढ़ कर प्रेसीडेंट साहब का चित्त आकर्षित हो गया था और

इसी कारण उन्होंने लिखा "कि यदि तुम यहाँ आओ तो जो कुछ मैं तुम्हारे लिए कर सकता हूँ ख़ुशी से करूँगा ।" फिर प्रेसीडेंट साहब ने सोचा कि यह लड़का शौक़ीनी करने में उतना समय नहीं बिताता जितना कि वह अपने लिखने-पढ़ने में बिताता है ।"

उस समय विद्यार्थियों को भरती करने के लिए परीक्षायें हो रही थीं । जेम्स की भी परीक्षा ली गई । उसने उस परीक्षा को बहुत अच्छी तरह पास किया और वह कालिज में भरती कर लिया गया। उसको जूनियर क्लास के विद्यार्थियों के साथ पढ़ना पड़ा । अमरीका के कालेजों में चार वर्ष पढ़ाई होती है। तीसरे वर्ष का नाम जूनियर क्लास और चौथे या अन्तिम वर्ष का नाम सीनियर क्लास था। सीनियर क्लास पास करने से ग्रेजुएट (Graduate) की पदवी मिलती है। जेम्स इसी पदवी को प्राप्त करने के लिए वहाँ गया था।

उस कालेज में एक बहुत पड़ा पुस्तकालय था । डाक्टर हापकिन्स ने एक दिन जेम्स से कहा:—"यदि गर्मियों की छुट्टी में तुम अपने घर या और कहीं न जाओ तो तुम्हारे लिए यह पुस्तकालय खुला रहेगा और जो पुस्तक तुम्हारा जी चाहे पढ़ सकते हो । सिर्फ़ यही नहीं बल्कि कालेज खुले रहने पर भी जो पुस्तक चाहो तुम पढ़ सकते हो ।"

उस समय जेम्स को अपना ख़र्चा चलाने के लिए रुपयों की चिन्ता न करनी पड़ती थी, क्योंकि उसके ख़र्चें के लिए

उसका भाई उसे रुपये दिया करता था। इस कारण गर्मियों की छुट्टियों में उसने ख़ूब जी लगा कर पढ़ा।

बहुत दिन से उसकी इच्छा थी कि वह शेक्सपियर के सारे ग्रन्थ पढ़जाय परन्तु अवसर न मिलने के कारण उसकी इच्छा मन ही मन में रह गई थी। यहाँ कालेज के पुस्तकालय में उसने शेक्सपियर के कुल ग्रन्थों को अच्छी तरह पढ़ लिया। उन ग्रन्थों को उसने कई बार पढ़ा और बड़े ध्यान से पढ़ा। यहाँ तक कि उसकी बहुत सी कवितायें उसने कण्ठ कर ली थीं। जब तब वह उन्हें दोहराता और अपने साथियों को ख़ुश करता था।

यहाँ जेम्स को बढ़ई या खेती का काम न करना पड़ा। इस कारण उसे और किसी प्रकार के व्यायाम की आवश्यकता हुई। सामने ही एक बहुत ऊँचा पहाड़ आकाश की ओर सिर उठाये हुए खड़ा था। पहाड़ के ऊपर जङ्गल और जङ्गलों के बीच में कहीं कहीं झरने भी थे। उन्हीं की शोभा देखने के लिए जेम्स शाम के वक़्त वहाँ जाया करता और पहाड़ की उतराई चढ़ाई पर निर्मल स्वच्छ वायु का सेवन किया करता था।

जेम्स के भरती होने के थोड़े दिन बाद दो विद्यार्थी उसके विषय में आलोचना कर रहे थे। एक ने कहा:—"मैं देखता हूँ कि जेम्स बहुत होशियार लड़का है, वह कभी किसी विषय को बिना समझे छोड़ता नहीं और कभी किसी प्रश्न का उत्तर देने में चूकता नहीं।"

दूसरे ने कहा:—"उसका कारण यह है कि वह प्रत्येक विषय को अच्छा तरह जानता है। एक बार उसने मुझे बताया था कि कैसे वह अपने पाठों को पढ़ा करता है। यदि कभी किसी विषय को वह समझता नहीं तो वह उसमें पिल जाता है और बिना समझे उसे नहीं छोड़ता। उसका नतीजा यह है कि आज वह हमारे कालिज में सबसे ज़्यादा पढ़ा हुआ लड़का है।

"हाँ, तुम ठीक कहते हो। सनीचर के दिन उसकी बहस सुन कर सबको मालूम होगया था कि वह बहुत पढ़ा हुआ लड़का है।"

"वह बहस भी ख़ूब कर सकता है और वक्तृता भी अच्छी दे सकता है। ऐसा मालूम होता है कि वह जन्म हा से वक्ता है। मैं तुमसे उसके विषय में भविष्यवाणी कह सकता हूँ कि थोड़े ही दिनों में वह इस कालेज के सब विद्यार्थियों से बढ़ जायगा और सबका शिरोभूषण बन बैठेगा।"

उन लड़कों का विचार ठीक ही निकला। क्योंकि २५ वर्ष के बाद उसके एक साथी ने लिखा है कि "एक क्लास जिसमें प्राय: ४० विद्यार्थी पढ़ा करते थे उसमें वह तुरन्त सभों से हर विषय में आगे बढ़ गया और विशेषत: लिखने, बोलने और बहस करने में कोई उसकी बराबरी न कर सकता था। उसमें विशेष गुण यह था कि प्रत्येक विषय के गूढ़ तत्त्वों का वह अनुसन्धान किया करता था और उन से एक नया मतलब निकाला करता था जो मतलब साधारण लिखने-पढ़ने वाले नहीं

निकाल सकते । इस कारण उसके लेख सब विचारयुक्त और ज्ञानपूर्ण हुआ करते थे । उसमें एक गुण यह भी था कि यद्यपि वह इतना पढ़ता था परन्तु तो भी वह पुस्तकों का कीड़ा नहीं बना रहता । बल्कि वह बड़ा मिलनसार, प्रफुल्ल-चित्त और आमोदप्रिय लड़का था । उसकी बातों में ऐसी मोहनी शक्ति थी कि जब कभी वह किसी से बातें करता तब उसका मन मोह लेता और वह उसका साथ न छोड़ सकता था ।"

जेम्स ने हिराम में लिखने-पढ़ने में बहुत परिश्रम किया । उसका फल यह हुआ कि उसने ६ वर्ष की पढ़ाई तीन ही वर्ष में समाप्त कर ली । यहाँ कालेज में भी आकर उसने परिश्रम करना शुरू किया । उसने यहाँ जर्मन भाषा सीखी और साल भर में इतनी सीख ली कि वह उस भाषा में अच्छी तरह बात-चीत करने लगा ।

जब कालेज में छुट्टी हुई तब उसके एक साथी ने उससे एक दिन पूछा:—"जेम्स, तुम अब की छुट्टी में क्या करोगे ?"

जेम्स ने कहा:—"मैंने अभी कुछ स्थिर नहीं किया है कि क्या करूँगा, परन्तु मैं सोचता हूँ कि लिखना सिखाने की एक क्लास जारी करूँ । तुम्हारी क्या राय है ? यहाँ यह काम चलेगा ?"

उस मित्र ने कहा:—" अवश्य ही चलेगा । तुम इस बात का चारों ओर प्रचार कर दो । लड़के आप से आप आ जायँगे ।"

जेम्स ने वैसा ही किया और लिखना सिखाने की एक क्लास खोल दी। इस काम के करने से उसकी छुट्टी भी अच्छा तरह बीती और कुछ रुपये भी उसको मिल गये।

कालिज से ६ मील दूर एक गिर्जा था जहाँ के पादरी साहब जेम्स का धर्मानुराग देख कर उससे बहुत प्रसन्न थे। एक बार सैबेथ के दिन उन्होंने जेम्स को अपना आसन ग्रहण करने को दिया और उस दिन जेम्स ही से वक्तृता दिलाने का अनुरोध किया। जेम्स ने स्वीकार कर लिया और अपने उसी मधुर कण्ठ स्वर और सुललित भाषा में उसने व्याख्यान दिया। लोग सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने फिर उससे व्याख्यान देने के लिए प्रार्थना की।

वहाँ के स्कूलों के बहुत से शिक्षकों और प्रतिनिधियों से जेम्स की जान-पहचान हो गई थी। एक बार मिस्टर ब्रुक्स ने, जो कि वहाँ के किसी सर्कारी स्कूल के प्रतिनिधि थे, जेम्स से कहा:—"क्या तुम हमारे स्कूल में नौकरी करोगे? हम तुम्हें चार सौ रुपये देंगे?"

जेम्स ने कहा:—"नौकरी करने से हमें कालिज छोड़ना पड़ेगा।"

उन्होंने कहा:—"कालेज तो तुम्हें ज़रूर ही छोड़ना होगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि यह काम तुम्हारे लिए अच्छा होगा।"

जेम्स ने कहा:—"आपकी नौकरी करने के लिए मुझे लोभ तो अवश्य ही होता है क्योंकि उस नौकरी के करने से मैं अपना सारा ऋण एकदम चुका सकता हूँ परन्तु ऐसा करने से हमारे जीवन का उद्देश सफल न होगा। मैं यहाँ ग्रेजुएट बनने के लिए आया हूँ। वह काम असम्पूर्ण रह जायगा। यह ठीक नहीं; और फिर इसके सिवा एक बात यह है कि मैंने हिराम छोड़ते समय वहाँ के कर्त्ताओं से कहा था कि कालिज का पाठ समाप्त करने के बाद मैं आपही के स्कूल में लौट आऊँगा और यहाँ पढ़ाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मुझे वहाँ इतने रुपये न मिलेंगे जितने कि आप देते हैं तथापि मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। उसका कारण यह है कि एक तो मैंने वहाँ जाने की प्रतिज्ञा की है और दूसरे यह कि वह एक नया स्कूल है। उसकी उन्नति कराना हमारा धर्म है क्योंकि वहाँ से हमने बहुत कुछ सीखा है"।

मिस्टर ब्रुक्स ने कहा:—"ख़ैर, आप इस बात को सोचिएगा और तब मुझे इसका जवाब दीजिएगा। जल्दी की कोई ज़रूरत नहीं है।"

जेम्स ने कहा:—"मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आप मेरी अवस्था पर इतनी सहानुभूति रखते हैं और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपका स्कूल ख़ूब उन्नति करे। परन्तु बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि मैं आपके स्कूल में इस

समय नहीं पढ़ा सकता । मैंने स्थिर कर लिया है । मुझे क्षमा कीजिए ।"

उस समय जेम्स का भाई जिसने उसको रुपया उधार देने की प्रतिज्ञा की थी वह कुछ विपत्ति में पड़ने के कारण रुपया न दे सकता था, और उसके ऊपर ऋण भी बहुत चढ़ गया था इसलिए ऐसी अवस्था में उस नौकरी को स्वीकार न करने में उसने बड़ी वीरता दिखाई क्योंकि नौकरी कर लेने से उसको रुपया तो मिल जाता परन्तु उद्देश सिद्ध न होता ।

हम लोग जानते हैं कि जेम्स के पास कपड़े-लत्ते बहुत थोड़े थे और वे भी सब फटे हुए थे । अब उसको एक कोट और पतलून की बड़ी ज़रूरत हुई । लेकिन उसके पास रुपया न था कि उससे कोट-पतलून बनवाये । इस कारण उसके एक मित्र ने एक दिन एक दर्ज़ी से कहा:—"मिस्टर हेसकेल, हमारे कालेज में एक बहुत ग़रीब लड़का है । वह बड़ा तेज़ लड़का है और बहुत ईमानदार है । लेकिन उसके पास कपड़े-लत्ते कुछ भी नहीं हैं । क्या तुम उसकी कुछ सहायता कर सकते हो ?"

दर्ज़ी ने कहा:—"मैं ज़रूर उसके लिए कपड़े बना दूँगा । आप उसे मेरे पास भेज दीजिएगा ।"

दूसरे दिन जेम्स दर्ज़ी से मिलने गया और अपना सारा हाल कह सुनाया । और कहा:—"आप यदि मेरा कपड़ा बना दें तो मैं आपका दाम जितना जल्दी हो सके चुका दूँगा । परन्तु मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता कि कब दूँगा ।"

दर्ज़ी बड़ा नेक आदमी था। उसने कहा—"इसके लिए आप कुछ चिन्ता न कीजिए। जब आपके पास रुपया हो और जब आपको कोई दूसरा ख़र्चा करने की ज़रूरत न हो उस वक्त मुझे दीजिएगा।"

दर्ज़ी ने कोट-पतलून तैयार कर दिया।

कालेज में छुट्टी हो गई। एक वर्ष बाद वह अपनी माता से मिलने के लिए घर गया। माता-पुत्र का मेल कैसा हुआ, पाठक महाशय स्वयं ही अपने अपने विचारानुसार इसका निर्णय कर लें, क्योंकि भाषा में इतनी शक्ति नहीं है कि उस भेंट का दृश्य वर्णन करे। छुट्टियों के बाद जब जेम्स फिर कालेज लौट आया तब उसने देखा कि ऋण के भार से वह चारों ओर से लदा हुआ है और रुपया मिलने का कोई उपाय नहीं देख पड़ता। ऐसी दशा में उसको उस डाकृर राबिनसन का ख़याल आया जिसने उसको इमतिहान करके बताया था कि तुम ख़ूब पढ़ो और ख़ूब काम करो। याद आने पर उसने उनको एक पत्र लिखा ताकि वे कुछ रुपये दें। उसने यह भी पत्र में लिख दिया था कि उसने १०००) रुपये का जीवनबीमा किया है और कालेज से निकलने पर हिराम में नौकरी मिलने की आशा है क्योंकि उन लोगों ने वादा किया है। इसके लिखने का मतलब यह था कि यदि डाकृर राबिनसन रुपया दें तो उनको मालूम हो जाय कि उनका रुपया मारा न जायगा।

डाक्टर राबिनसन ने चिट्ठी पाते ही जेम्स को कुछ रुपया भेज दिया ।

रुपया पाते ही उसने अपना सब ऋण चुका दिया और बाक़ी रुपया अपने ख़र्चे के लिए रख लिया ।

ठीक उसी समय पारलियामेण्ट महासभा में दासत्व के विरुद्ध बड़े ज़ोर-शोर से तर्क-वितर्क हो रहा था और बड़े बड़े लेख लिखे जाते थे । मिस्टर चार्ल्स समर इस हलचल के नेता थे । वे पारलियामेण्ट और खुले मैदानों में इसी विषय पर व्याख्यान दिया करते थे जिससे दासत्व की प्रथा इस देश से उठ जाय । मिस्टर प्रेस्टनब्रुक इस ख़याल के बड़े विरोधी थे । वे चाहते थे कि दासत्व-प्रथा बनी रहे । इस कारण वे मिस्टर चार्ल्स पर बहुत घृणा रखते थे । जिस समय मिस्टर चार्ल्स समर की वक्तृताओं का जोश देश में चारों ओर फैला हुआ था उस समय मिस्टर ब्रुक्स ने चाहा कि मिस्टर चार्ल्स समर को किसी तरह मार डालें । इस कारण एक दिन जब मिस्टर चार्ल्स समर पारलियामेण्ट में बैठे हुए कुछ लिख रहे थे उसी समय ब्रुक्स ने उन्हें एक ढेला फेंक कर मारा इस ख़याल से कि उन्हें एक दम मार ही डाले । उसका मनोरथ पूरा भी हो जाता, लेकिन ईश्वर ने बचा दिया ।

जब यह ख़बर विलियम्स कालिज में पहुँची तब वहाँ के विद्यार्थी मारे ग़ुस्से के आगबबूला हो गये । विद्यार्थियों ने

मिल कर सभा की जिसमें जेम्स वक्ता नियत किया गया। जेम्स ने मिस्टर ब्रुक्स की नीचता पर ऐसी ज़ोर-शोर और कड़ाके की वक्तृता दी कि उसकी क्लास के विद्यार्थी, अध्यापकगण और श्रोतागण सबके सब दङ्ग हो गये और जब तक यह वक्तृता दे रहा था तब तक सब लोग सन मारे बैठे हुए थे। किसी ने एक बात तक मुँह से नहीं निकाली। अन्त में जब उसकी वक्तृता समाप्त हुई तब लोगों ने चारों ओर से उसके ऊपर फूल-माला फेंकी और हर्ष-ध्वनि से समस्त मैदान, जंगल, पेड़-पौधे कँपा दिये। कितने लोगों ने कितनी भविष्य वाणियाँ कीं। बहुत से लोगों ने उसे आशीर्वाद दिया।

जेम्स ने सन् १८५६ में ग्रेजुएट की पदवी प्राप्त की। उसने उस परीक्षा को बड़ी प्रतिष्ठा के साथ पास किया। कालेज के प्रारम्भ में डाक्टर हापकिन्स ने एक पारितोषिक नियत किया था जिसको उन्होंने सब से अच्छे लड़के को देने का वादा किया था। जेम्स ने उस पारितोषिक को भी प्राप्त किया।

डाक्टर हापकिन्स ने जेम्स के ग्रेजुएट होने के आठ वर्ष बाद उसके विषय में यह लिखा था—"जनरल गारफ़ील्ड की उन्नति ऐसी अनोखी हुई है कि प्रत्येक लड़के को उसकी बराबरी की कोशिश करनी चाहिए। उसकी उन्नति सरकारी और फ़ौजी काम में इतनी तेज़ हुई है कि आज तक हमारे मुल्क में किसी की नहीं हुई। सब विद्यायें उसने अपने ही परिश्रम से

प्राप्त की थीं, किसी से कुछ भी सहायता नहीं ली। उसमें धर्म का पूर्ण अनुराग था और वह अपने काम और ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह समझता था। वह सच्चा, साफ़, बहादुर और मिलनसार प्रकृति का था।"

इक्कीसवाँ परिच्छेद



म्स अपने कालेज की पढ़ाई समाप्त करने के बाद हिराम लौट आये। उसके आने के पहले ही वहाँ के कर्त्ताओं ने उसको "पुरानी भाषाओं और साहित्य" का शिक्षक चुन रक्खा था। उनके आते ही हिराम के अध्यापकों और कार्य-कर्त्ताओं ने बड़ा आनन्द प्रकट किया और बड़े आदर से उनका सत्कार किया। जेम्स महाशय भी अपने पुराने स्कूल में शिक्षक की पदवी पाकर लौट आने से कुछ कम आनन्दित नहीं हुए। उन्होंने एक दिन अपने एक मित्र से कहा:—"मेरी सब आशायें पूरी हो गईं। मैंने न्यू इँगलैंड के कालेज से ग्रेजुएट का डिप्लोमा प्राप्त किया है और अब मैं यहाँ शिक्षक की पदवी पर नियुक्त हूँ। अब मैं चाहता हूँ कि अपनी सारी मुस्तैदी इसी काम में लगा दूँ।

वे नहीं चाहते थे कि इस स्कूल को छोड़ कर वे कहीं भी जायँ, चाहे कहीं उनको कितना ही रुपया क्यों न मिले; परन्तु उनको यहाँ वार्षिक १६००) रुपयों पर ही सन्तोष था।

विलियम्स कालेज के प्रेसीडेंट डाक्टर हापकिन्स इनके गुरु थे। उनकी वे बहुत प्रतिष्ठा और भक्ति किया करते थे, क्योंकि

एक तो यह इनके गुरु थे, दूसरे बहुत बड़े विद्वान् थे। विलियम्स कालिज से लौट आने पर इनकी गुरु-भक्ति कुछ कम नहीं हुई थी। उनके उपदेशों से उन्होंने बहुत लाभ उठाया और उन्हीं के उपदेशों के अनुसार काम करने से इन्होंने भी अपने परिश्रमों का फल बहुत अच्छा पाया।

मिस्टर गारफ़ील्ड ने अपने काम-काज में हिराम-विद्यालय के कार्य-कर्त्ताओं को इतना सन्तुष्ट किया कि एक वर्ष बाद उन लोगों ने मिल कर इन्हें "Chairman of the Board of Instructors" अर्थात् शिक्षक-मण्डली का सभापति नियत किया, और दूसरे साल के अन्त में इनको प्रधान अध्यापक (Principal) बना दिया।

ओहिओ और पेनसिलवेनिया नहर को छोड़े हुए ११ वर्ष बीते थे जब कि वे इतने बड़े इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट के प्रधान अध्यापक बनाये गये। इन्हीं ११ वर्षों में उन्होंने बहुत कष्ट उठाये, बहुत परिश्रम किया और अन्त में इतनी सफलता-लाभ की कि अन्य मनुष्यों के इतिहास में कम देख पड़ती है।

इनमें एक बहुत बड़ा गुण यह था कि यह ज़हीन और तेज़ लड़कों को चुना करते थे और पढ़ाने की कोशिश किया करते थे। कभी कभी ऐसा होता है कि ज़हीन लड़कों के माता-पिता ग़रीब होने के कारण अपने लड़कों का लिखना पढ़ना बन्द करा देते हैं। यह उन लोगों को अपनी युक्ति और कौशल द्वारा समझा देते थे कि लड़कों का लिखना-पढ़ना बन्द न करावें।

यदि मिस्टर गारफ़ील्ड इतना परिश्रम न करते तो आज कल के बहुत से विद्वानों का नाम तक हम लोग न सुन पाते। प्रेसीडेंट हिन्सडेल जो कि वर्तमान समय में इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट के सभापति हैं वे इस उच्च पदवी को प्राप्त न किये होते यदि मिस्टर गारफ़ील्ड ने इनको पढ़ाने का यत्न न किया होता।

मिस्टर गारफ़ील्ड स्वयं लिखते हैं कि "ऐसे लड़कों को पकड़ने में मुझे बड़ा आनन्द मिलता था और यद्यपि उन लड़कों में से किसी किसी को ऐसे पकड़े जाने पर पहले पहल बड़ा दुःख होता, परन्तु अन्त में उनके आनन्द की अवधि न रहती थी। विशेषतः दो लड़कों के पकड़ने का हाल मुझे अच्छी तरह याद है। उन दो लड़कों में से एक लड़का वसन्त ऋतु में स्कूल बन्द होने पर मेरे पास आया और चुप-चाप इधर उधर घूमता रहा। मैंने समझा कि वह कुछ कहा चाहता है, इस कारण मैंने उसको बुला कर पूछा:—"हेनरी, तुम स्कूल खुलने पर यहाँ आओगे न ?"

"उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर बाद जब मैंने अपनी गर्दन उठा कर देखा तब क्या देखता हूँ कि उसकी आँखों से आँसू टपक रहे हैं। यह दृश्य देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने उसे पास बुला कर पूछा:—"हेनरी, तुम रोते क्यों हो ? तुम्हारे रोने का क्या कारण है ? मुझे बताओ।" लड़के ने रोते रोते जवाब दिया कि "मैं स्कूल खुलने पर न आऊँगा

क्योंकि हमारे पिता अब हमसे खेती का काम करावेंगे। वे कहते हैं कि तुम्हारा पढ़ना बहुत हो चुका।"

"वह एक बहुत तेज़ लड़का था। मैंने उससे पूछाः—"तुम्हारे पिता यहीं हैं ?" उसने कहाः—"जी हाँ, यहीं हैं। कल यहाँ से चले जायँगे।" मैंने उससे कहाः—"तुम अपने पिता को मेरा सलाम दो और उनसे कहो कि मिस्टर गारफ़ील्ड आपसे मिलना चाहते हैं। उनसे यह न कहना कि तुम्हारे विषय में मैं उनसे कुछ कहूँगा, बल्कि उनसे ऐसा कहो कि आप से केवल मिलना चाहते हैं।"

लड़के ने अपने बाप से जाकर कहा और आधे घंटे ही में वे मुझसे मिलने को आगये। मैंने समझा कि हेनरी का पढ़ना बन्द करने का कारण यह है कि उनके पास रुपया नहीं है और वे इसकी मदद से रुपया कमाया चाहते हैं। इस कारण मैंने उनसे कहाः—"आप हेनरी का पढ़ना क्यों बन्द कराते हैं ? देखिए, यदि आप उसको यहां से ले जाइए और उससे खेत जोतने बोने का काम लीजिए तो वह कितना कमा सकता है—बहुत कम। इससे अच्छा तो यह होता कि आप उसे यहीं छोड़ जाते और यह जाड़ों में यहाँ स्कूल में पढ़ाता और ख़ुद भी पढ़ता। पढ़ाने से उसको जो रुपया मिलेगा उससे वह अपना भी ख़र्चा चला सकता है और आपको भी कुछ दे सकता है।"

"इस बात को सुन कर हेनरी के पिता बहुत .खुश हुए और उन्होंने कहा:—"अच्छा, मैं इस विषय को सोचूँगा। उस बातचीत का फल यह हुआ कि हेनरी वहाँ भेजा गया और उसने पढ़ना आरम्भ किया। जाड़ों में वह स्कूल में पढ़ाया भी करता था। इस तरह पढ़ते पढ़ाते उसने न्यू इंगलैण्ड कालेज के ग्रेजुएट का डिप्लोमा प्राप्त कर लिया।"

"दूसरे एक लड़के ने इसी तरह अपने घर से हमें पत्र लिखा कि हमारे पिता अब हमारा पढ़ना बन्द कराया चाहते हैं। मैं जानता था कि उस लड़के के पिता बड़े धार्मिक पुरुष थे और धर्म-सम्बन्धी विषयों पर बहुत ध्यान दिया करते थे। इस कारण मैंने उस लड़के को एक पत्र लिख भेजा कि तुम यहाँ के गिर्जे में उपदेशक नियत किये गये हो। उस पत्र के पाते ही उसके बाप ने तुरन्त लड़के को छोड़ दिया। लड़का यहाँ के गिर्जे में उपदेश भी दिया करता और अपना पाठ भी पढ़ा करता था। अन्त में उसने भी न्यू इंगलैण्ड कालेज से ग्रेजुएट की पदवी प्राप्त की और तब पढ़ना समाप्त किया।"

मिस्टर गारफ़ील्ड अपने विद्यार्थियों से कैसा व्यवहार करते थे इसका भी थोड़ा सा वृत्तान्त सुनिए।

एक बार एक विद्यार्थी ने दर्जे में कुछ ग़ल्ती की। मिस्टर गारफ़ील्ड ने उस लड़के को ऐसे एक स्थान में खड़ा कर दिया जहां की ज़मीन पानी गिरने से भीगी हुई थी और बहुत मैली थी। इसको देख कर लड़के हँस पड़े और वे भी मुसकराये।

ऐसा करने से लड़के को बड़ी लज्जा हुई और तब से वह सचेत हो गया।

एक बार उन्होंने दर्जे के एक लड़के को कुछ काम करने के लिए कहा। उस लड़के ने उत्तर दियाः—"यह काम बहुत कठिन है। मैं उसे न कर सकूँगा।"

मिस्टर गारफ़ील्ड ने कहाः—"बड़ी लज्जा की बात है। जो तुम कहते हो कि तुम उस काम को न कर सकोगे। मुझे आज तक कोई काम कठिन मालूम ही नहीं हुआ, और जब कोई काम कठिन मालूम हुआ तभी मैंने उसे बिना किये कभी न छोड़ा।"

सत्य है, यही साहस जेम्स की उन्नति का मूल है।

एक बार मिस्टर गारफ़ील्ड पड़ोस में कहीं एक वक्तृता देकर लौट रहे थे। इस कारण स्कूल पहुँचने में कुछ देर होगई थी। अतएव उनके दर्जे में एक दूसरे शिक्षक पढ़ा रहे थे। जब वे दर्जे के पास पहुँचे तब देखा कि शिक्षक महाशय ने किसी विद्यार्थी से कोई प्रश्न पूछा है। जैसे ही उस लड़के का उत्तर समाप्त हुआ उसी समय तुरन्त मिस्टर गारफ़ील्ड ने उसी प्रश्न के लगाव में एक और प्रश्न उससे पूछा जिससे यह मालूम होता था कि पहला प्रश्न भी मानो उन्हीं ने पूछा था। इस चतुराई को देख कर सब हँस पड़े।

मिस्टर गारफ़ील्ड प्रायः अपने विद्यार्थियों को नये नये

विषयों पर व्याख्यान सुनाया करते थे। एक दिन वे मनुष्य-जीवन के परिवर्तन के विषय में व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा :—"तुम लोग जानते हो कि पोरटेज़ कौन्टी की राजधानी रैवेना में है। उस रैवेना की कचहरी की छत पर की कन्धी ऐसे मौक़े पर है कि बर्सात का पानी जो उस पर गिरता है उसकी जो बूंद कन्धी के दक्खिन ओर गिरती है वह गल्फ आफ़ मेकसिको में जाता है और जो बूँद कन्धी के उत्तर ओर गिरती है वह गल्फ आफ़ सेन्ट लारेन्स में जाता है। देखो, जो बूँद दक्खिन की ओर जारही हो उसमें यदि हवा का एक थपेड़ा लग जाय तो उत्तर की ओर चला जायगा और इस कारण वह गल्फ आफ़ मेकसिको में न गिर कर गल्फ़ आफ़ सेन्ट लारेन्स में गिरेगा। इसी तरह मनुष्य के भाग्य का नियम है। किसी जगह एक थोड़े से उसकाने से उसका भाग्य बहुत अच्छा हो जा सकता है, और न उसकाने से कदाचित् उसका भाग्य ऐसे कठोर नरक की यन्त्रणा भोग करता है जिसका वर्णन करना कठिन है, अतएव तुम लोग सदा उस मौक़े की ओर ध्यान रक्खो जो तुम्हारी उन्नति का सहायक होने वाला मालूम पड़े, क्योंकि कब वह मौक़ा आवेगा—इसका कुछ निश्चय नहीं है, और यदि तुम उस मौक़े पर चूक जाओ तो बस समझ लो कि तुम्हारी उन्नति का मार्ग बन्द हो गया।"

मिस्टर गारफ़ील्ड ने इस अवस्था में अनेक विषयों पर वक्तृतायें दीं। जब कभी वह किसी समिति में वक्तृता देते

तभी अपने विद्यार्थियों से उस व्याख्यान को लिख लाने के लिए कहते थे। दूसरे दिन जब लड़के लिख लाते तब वे उसे क्लास में सब लड़कों के सामने पढ़ते और उनका मतलब सुनाते। प्रायः लोग उन्हें किताब हाथ में ले जाते देखते। एक दिन एक लड़के ने देखा कि पानी बरस रहा था और मिस्टर गारफ़ील्ड दस बारह पुस्तकों को हाथ और बग़ल में दबाये लाइब्रेरी की ओर चले जारहे हैं और एक विद्यार्थी उनके ऊपर छाता लगाये हुए जाता है।

उन्होंने वकालत की परीक्षा भी पास की थी। इस लिए नहीं कि वकालत करें, किन्तु इस लिए कि राजनियमों को जान लें।

उन्होंने मिस ल्युक्रिशिया रुडाल्फ़ से ११ नवम्बर सन् १८५८ ई० को विवाह किया और उसकी सहायता से उन्होंने बहुत बड़े बड़े काम किये।

वे सब लड़कों का नाम लेकर पुकारते थे, चाहे वह कितना ही बड़ा लड़का क्यों न हो। वे लड़कों के साथ खुले मैदान खेलते थे। वे उनसे यथावसर हँसी-मज़ाक़ भी करते थे, परन्तु काम के समय वे बहुत गम्भीरभाव से काम लिया करते थे। काम के समय उनके पास शोर-ग़ुल कुछ भी न होने पाता था।

बड़े बड़े दुष्ट लड़के उनसे बहुत डरते थे। दूसरे शिक्षकों के पास चाहे वे धूर्तता करें भी, पर उनके पास आकर वे बिल्ली की तरह चुपचाप बैठे रहते और कुछ भी धूर्तता न करते थे।

बाईसवाँ परिच्छेद



म्स गारफ़ील्ड सरीखे एक प्रसिद्ध वक्ता के लिए यह कब सम्भव था कि वे राष्ट्रीय पक्ष का साथ न दें और उसके लिए कुछ काम न करें। वह चाहे कितना ही मने करते रहें परन्तु लोग उन्हें कब छोड़ते थे। लोगों ने उन्हें देश-हित के लिए राय देने और समय समय पर व्याख्यान देने के लिए मजबूर किया। शरदऋतु में हिराम लौट आने पर जब उन्हें अपने ही काम से बिलकुल फ़ुरसत न मिलती थी उसी समय प्रायः उन्हें राष्ट्र-सम्बन्धी वक्तृतायें देने के लिए पाँच, सात और कभी दस दस मील दूर जाना पड़ता था। जाते समय वह अपने साथ किसी एक विद्यार्थी को लेजाते और रास्ते भर उसे हितकर उपदेश देते जाते थे।

एलफ़ोन्सो हार्ट नामक एक डेमाक्रेट * ने हिराम में आकर दासत्व के सम्बन्ध में बहुत से झूठे इतिहास इकट्ठा करके एक

---

*"जिस देश का राज्य छोटी बड़ी सब श्रेणी की प्रजा के द्वारा चलाया जाता है उसको "डेमाक्रेटिक राज्य" कहते हैं, और उस सभा के प्रतिनिधिगण जो राज्य का काम करते हैं उन्हें "डेमाक्रेटस" कहते हैं।"

ज़ोर शोर का व्याख्यान दिया, जिसको सुन कर सब लोगों की क्रोधाग्नि धधक उठी।

सबों ने मिल कर मिस्टर गारफ़ील्ड से कहा:—"इस मूर्ख डेमाक्रेट की बातों का जवाब देना चाहिए और इसकी युक्तियों को काट कर इसे अच्छी तरह परास्त करना चाहिए।"

मिस्टर गारफ़ील्ड ने कहा:—"परास्त करना कुछ बहुत कठिन काम नहीं है, परन्तु ऐसा करना क्या बुद्धिमानों का काम होगा?"

"झूठे को दण्ड देना सदा बुद्धिमानों का काम है।"

किसी ने कहा:—"आपही उसकी युक्तियों को काट सकते हैं।"

किसी ने कहा:—"सब लोग यही चाहते हैं कि आपही इस काम को करें।"

कई रईसों ने मिल कर कहा:—"बस आप चलिए और सर्व-साधारण की इच्छा पूर्ण कीजिए, सब लोग आपका मुँह ताक रहे हैं।"

मिस्टर गारफ़ील्ड को अन्त में राज़ी होना पड़ा। तब उन्होंने डेमाक्रेटिक इतिहास को अच्छी तरह पढ़ा और दासत्व के सम्बन्ध में जितनी युक्तियाँ थीं उन सबको अच्छी तरह हृदयङ्गम किया। जब पूरी तौर से लड़ाई का सामान इकट्ठा कर लिया तब उन्होंने एक दिन एक लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया

जिसमें उन्होंने मिस्टर हार्ट को एक भी बुरी बात न कही, केवल उनकी झूठी युक्तियों को प्रमाणसहित काटना शुरू किया। जब सब युक्तियाँ तोड़ दीं तब उन्होंने अपनी वक्तृता समाप्त की। इस तरह मिस्टर गारफ़ील्ड की प्रतिष्ठा और भी बढ़ गई। फिर तो चारों ओर से उनकी चाह बढ़ने लगी।

मिस्टर गारफ़ील्ड की इतनी कीर्ति फैल गई कि एक वर्ष बाद "लेजिसलेटिव कौन्सिल" (Legislative Council) के मेंबरों ने इनको अपने यहाँ बुलाया। कई बार इनको पत्र लिखा कि वे इस काम को करें परन्तु उनका यही जवाब था कि "मेरा काम इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में है। मेरा मन इसी काम में लगा है; और मेरा धर्म भी यही कहता है कि मैं इस काम को करूँ।"

इसके थोड़े ही दिन बाद विलियम्स कालिज के लोगों ने इन्हें प्रथम दिन एक वक्तृता देने का अनुरोध किया। ये वहाँ गये और लोगों ने इनका बड़ा आदर किया। वहाँ का काम समाप्त करने के बाद जब ये लौट आये तब (Senate) सेनेट में मेम्बर चुनने का समय आ गया। लोगों ने इन्हीं को एक मेम्बर चुना। जब लोगों ने उनसे उनके चुने जाने का प्रस्ताव किया तब उन्होंने कहा:—"मैं जानता था कि मिस्टर प्रेस्टन चुने जायँगे।"

लोगों ने कहा:—"मिस्टर प्रेस्टन अभी थोड़े दिन हुए मर गये।"

मिस्टर गारफ़ील्ड ने कहा:—"आप लोगों को मैं धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे स्मरण किया है परन्तु बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि मैं उस काम को स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि मैं अभी एक काम कर रहा हूँ। यदि मैं आपका काम स्वीकार कर लूँ तो मेरा इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट छूट जायगा।"

लोगों ने कहा:—"आप अपने स्कूल वालों से राय लीजिए। यदि वे आपको कुछ दिन के लिए छोड़ सकें तो आप यहाँ का काम कीजिए।"

उस आदमी ने यह बात इसलिए कही कि उसको मालूम था कि स्कूल वाले चाहते हैं कि मिस्टर गारफ़ील्ड सेनेट का काम करें।

मिस्टर गारफ़ील्ड ने इस बात को स्वीकार कर लिया और जब स्कूल वालों से उन्होंने पूछा तब सबों ने एकमत होकर राय दे दी कि आप ज़रूर उस काम को कर लीजिए।

सबकी बात पर मिस्टर गारफ़ील्ड को स्कूल छोड़ कर सेनेट का काम करना पड़ा।

उस समय देश में बड़ी हल-चल मच रही थी। दक्षिण देशवासी राष्ट्रविप्लव पर कमर बाँधे थे और उत्तर प्रान्त के लोग दासत्व-निवारण करने के लिए कटिबद्ध थे। ऐसे समय में मिस्टर गारफ़ील्ड सरीखे मनुष्य की ज़रूरत थी जो इस हल-चल को शान्त करने के लिए सेनेट की कुर्सी अधिकार करें।

सेनेट में इनके ही समान एक और मनुष्य थे जिनका नाम जेकब डी काक्स था। ये दोनों बड़े मित्र थे और सदा मिल-जुल कर काम किया करते थे।

मिस्टर गारफ़ील्ड का नाम तुरन्त सबसे अच्छे वक्ताओं में हो गया। प्रेसीडेंट हिन्सडेल लिखते हैं कि:—"जब कभी कोई पेचीदा काम आ पड़ता था तब युनाइटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट उस काम को ठीक करने के लिए इन्हीं को बुलाया करते थे।"

मिस्टर गारफ़ील्ड को सेनेट का काम आरम्भ किये एक ही वर्ष हुआ था कि वह भयंकर समस्या उपस्थित हुई। लिनकन साहब प्रेसीडेंट चुने गये। दक्षिण की रियासतों ने राष्ट्र का काम छोड़ने की तैयारी की और एक विप्लव की सम्भावना देख पड़ी। मिस्टर गारफ़ील्ड के मन में अनेक चिन्तायें उदय होने लगीं। उन्होंने सोचा:—"क्या ओहिओ के लोग युद्ध करेंगे?" "क्या कोई रियासत भी देश का काम छोड़ सकती है?" "क्या रियासत पर कोई सख़्ती की जा सकती है"? "क्या अपराधियों को दण्ड देना उचित होगा?" ऐसी ऐसी चिन्तायें जेम्स के चित्त को सदा व्याकुल किया करती थीं। इन कठिनाइयों को हल करने के लिए वे दिन दिन भर पढ़ा करते थे और रात को भी ग्यारह बारह और कभी कभी एक एक बजे तक पढ़ा करते थे। उन्होंने उस हल-चल को शान्त करने के लिए कई वक्तृतायें दीं और उन नेताओं की निन्दा की जो रियासतों को राष्ट्र का काम छोड़ने के लिए उसकाते थे और अन्त में

उन्होंने सेनेट के मेम्बरों को स्वदेशानुराग और देशभक्ति के कामों में दीक्षित किया और दासत्व को दूर करने का प्रयत्न किया ।

जब जातीय महासभा ने अपने सम्मेलन में यह प्रस्ताव किया कि "सर्कार दासत्व के सम्बन्ध में और कोई कठोर नियम न जारी करे" तब मिस्टर गारफ़ील्ड ने उत्साहित होकर यह लिखा कि जब तक मेरे हाथ पैर मज़बूत हैं और जब तक मेरी बुद्धि ठीक रहेगी तब तक मैं ऐसा प्रस्ताव न चलने दूँगा क्योंकि ऐसा करने से हमारा देश स्वाधीनतारूपी महारत्न खो बैठेगा और फिर वह एक बार दासत्व की शृङ्खला में सदा के लिए बँध जायगा ।"

इसके बाद और भी बहुत सी घटनायें हुईं जिनसे यह प्रतीत होगया कि लड़ाई नहीं टल सकती । एक रोज़ रात के समय मिस्टर काक्स और मिस्टर गारफ़ील्ड दोनों एक ही कमरे में सो रहे थे कि इतने में गारफ़ील्ड ने कहा:—"मिस्टर काक्स, युद्ध अनिवार्य्य है ।"

काक्स ने कहा :—"यह तो ठीक ही है ।"

मिस्टर गारफ़ील्ड ने कहा :—"हम तुम दोनों युद्ध में जायँगे और अपने देश की रक्षा करने के लिए हम लोग अपना प्राण अर्पण करेंगे ।"

यह कह कर दोनों मित्रों ने एक दूसरे को आलिङ्गन किया और इस बात की प्रतिज्ञा की कि दोनों युद्ध में जायँगे ।

दूसरे दिन प्रेसीडेंट लिनकन ने सेनेट में हुक्म भेजा कि २५०० आदमी साथ लेकर सम्पटर का दुर्ग अधिकार में करना चाहिए।

गवर्नर डेनिसन ने मिस्टर गारफ़ील्ड को ५००० हथियार लाने को मिशौरी भेज दिया। वहाँ से वे हथियार लेकर बहुत जल्द लौट आये।

वहां से लौट आने पर गवर्नर डेनिसन ने उनको सातवीं और आठवीं फ़ौज का बन्दोबस्त करने के लिए उन्हें क्लीभलैण्ड भेजा। उनका वन्दोबस्त कर लेने पर गवर्नर ने उन्हें उन फ़ौजों में से एक का कर्नेल (Colonel) बनाना चाहा, परन्तु उन्होंने उस पदवी को ग्रहण करने से इनकार किया क्योंकि उन्होंने कहा कि फ़ौजी काम में वे बहुत प्रवीण नहीं हैं।" इस कारण गवर्नर ने उन्हें लेफ़टिनेन्ट कर्नेल (Lieutenant-Colonel) बना कर पश्चिम में फ़ौज इकट्ठा करने के लिए भेजा। जब फ़ौज इकट्ठा करके वे लौटे तब तक कोई कर्नेल नहीं ठीक हुआ था, इस कारण सब लोगों की प्रेरणा से मिस्टर गारफ़ील्ड ही उस फ़ौज के सेनापति बनाये गये और बाग़ी जनरल मारशेल से युद्ध करने के लिए क्लीभलैण्ड भेजे गये।

जनरल मारशेल की सेना यद्यपि बहुत अधिक थी परन्तु तोभी गारफ़ील्ड ने बड़ी वीरता से युद्ध किया और जनरल मारशेल की सेना को मैदान से बाहर भगा दिया और उनको पूरी तौर से परास्त किया। इसके बाद और भी कई एक युद्ध

हुए। उन सभों में मिस्टर गारफ़ील्ड ही की विजय हुई। उनकी बहादुरी और सेनापरिचालन-शक्ति को देख कर वाशिङ्गटन के लोगों ने उनको ब्रीगेडियर जनरल (Brigadier-General) की पदवी प्रदान की। यह पदवी उनको १० जनवरी सन् १८६२ ईसवी को मिली। इसके बाद फिर कई एक युद्धों में वे शरीक हुए और थोड़े ही दिन में इनको मेजर जनरल (Major-General) की पदवी मिली। वे डेढ़ ही साल के बीच में लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल से मेजर जनरल हो गये थे।

जैसा कि लिखने-पढ़ने के काम में मिस्टर गारफ़ील्ड ने अपनी प्रतिष्ठा लाभ की थी वैसे ही फ़ौजी काम में भी उनकी सुप्रसिद्धि हुई। उनकी ख्याति दिन दिन चारों ओर फैलने लगी। जिस समय उनकी प्रसिद्धि इस तरह चारों ओर फैल रही थी उसी समय जातीय महासभा (National Congress) के लोगों ने इनको अपनी सभा में लेने की राय प्रगट की। उस समय मिस्टर गारफ़ील्ड की यह इच्छा थी कि अपनी मातृ-भूमि को उद्दण्ड देशद्रोहियों के अत्याचार से रक्षा करें और उन अपराधियों को दण्ड देकर देश में शान्ति का प्रचार करें और अपना जीवन तथा सर्वस्व इस महान् कार्य में लगा दें, उस समय वे नहीं चाहते थे कि ऐसी ज़िम्मेदारी के बड़े काम को छोड़ कर वे कांग्रेस वालों से जा मिलें। उनके कांग्रेस न जाने का एक और कारण यह भी था कि कांग्रेस में इनको जो तनख़्वाह मिलती उससे दुगुनी तनख़्वाह इनको फ़ौज में मिल

रही थी, इस कारण कांग्रेस जाने का ख़याल वे अपने पास न आने देते थे। पाठक, आप समझ सकते हैं कि ऐसे समय में फ़ौज छोड़ कर कांग्रेस में जाना कितना बड़ा स्वार्थ-त्याग का काम है।

प्रेसीडेण्ट लिनकन ने अपनी राय इस भाँति प्रकट की कि कांग्रेस में एक ऐसा आदमी नियत किया जाना चाहिए जिसमें फ़ौजी काम का भी तजरिबा अच्छी तरह वर्तमान रहे। इस कारण मिस्टर गारफ़ील्ड को यह काम स्वीकार करना ही पड़ा। दो वर्ष और तीन महीने फ़ौज में काम करने के बाद इन्होंने सन् १८६३ ईसवी में दिसम्बर के महीने में कांग्रेस का काम आरम्भ किया।

मिस्टर गारफ़ील्ड ने बहुत से ओहदों पर काम किया था और जहाँ जहाँ वे थे सर्वत्र उनका काम इतना हृदयग्राही और स्वार्थशून्य रीति से होता था कि लोग आप से आप हर घड़ी उनको घेरे रहा करते थे। जिधर देखो उधर ही मिस्टर गारफ़ील्ड की माँग है। लोग मनुष्यों के सुन्दर मुख को अथवा सुन्दर शरीर को नहीं प्यार करते बल्कि उनके सुन्दर काम और रीति-नीति को प्यार करते थे। मिस्टर गारफ़ील्ड के काम ही ऐसे थे कि लोग उन्हें बिना प्यार किये न रह सकते थे।

कोलम्बस में सर्कारी क़ानून बनाने वाले की सभा में प्रधान मन्त्री की ज़रूरत थी। लोगों ने मिस्टर गारफ़ील्ड ही को चुनना चाहा। इस कारण उनके दो एक मित्रों ने उनसे कहाः—"आप

कोलम्बस जाइए क्योंकि वहाँ लोग आपही को "स्टेट लेजिस-लेचर" (State Legislature) में चुनने वाले हैं ।"

उन्होंने उत्तर दिया:—"मैं अपनी नौकरी ढूँढ़ने के लिए स्वयं कहीं न जाऊँगा । मैंने समस्त जीवन भर में सिवा इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट के दरबान की नौकरी ढूँढ़ने के स्वयं और कोई नौकरी नहीं ढूँढ़ी और न भविष्य में ऐसी कोशिश करने की मैं इच्छा रखता हूँ । यदि हमारे मित्र हमें चाहेंगे तो वे ख़ुद ही मुझे बुलावेंगे ।"

उन मित्रों ने कहा:—"आप जो कहते हैं वह सच है । हम लोग आपको वहाँ इस वास्ते नहीं भेजा चाहते कि आप वहाँ जाकर हाथ फैला कर नौकरी की प्रार्थना करें वरन् इस वास्ते भेजते हैं जिससे हम लोग सर्वदा आपको वहाँ देख पावें और आपसे बातचीत कर सकें । जो कुछ करना धरना होगा वह हमीं लोग करेंगे । आप केवल वहाँ उपस्थित रहेंगे ।"

उन्होंने कहा:—"मैंने आप लोगों का मतलब समझ लिया । परन्तु वहाँ उपस्थित रहना ही मुझे बुरा मालूम होता है ।"

कोलम्बस में जब सभा बैठी तब सभों की राय से मिस्टर गारफ़ील्ड ही उस सभा के प्रधान मन्त्री चुने गये । सन् अट्ठारह सौ अस्सी ईसवी के जनवरी महीने में मिस्टर गारफ़ील्ड उस उच्च पदवी पर नियुक्त किये गये ।

मिस्टर गारफ़ील्ड केवल अपने ही परिश्रम, बुद्धिमत्ता और साहस के कारण इस उच्च पदवी पर पहुँच गये थे । उनको

उन्नति की सीढ़ी की चोटी पर पहुँचने के लिए केवल एक ही पद बाक़ी रह गया था। यदि वह एक सीढ़ी भी किसी तरह पहुँच जा सकें तो यह कहना बहुत ठीक होगा कि मिस्टर गारफ़ाल्ड ने अत्यन्त दरिद्रावस्था से अत्यन्त उच्चतर बल्कि सब से ऊँचे पद को प्राप्त किया। गारफ़ील्ड की भाग्यलक्ष्मी ऐसी सुप्रसन्ना थी कि उनके उस पद के भी प्राप्त करने में अधिक दिन न लगे।

इनके मन्त्री होने के पाँच ही महीने बाद "रिपबलिकेन पारटी *(Republican Party) ने अपना एक प्रेसीडेण्ट चुनने का प्रबन्ध किया। मिस्टर गारफ़ाल्ड भी उस पारटी के एक मेम्बर थे। उनकी उपस्थिति से लोगों के हृदय में बड़ा आनन्द और उत्साह उत्पन्न हुआ। यद्यपि अभी वें उस पदवी के लिए चुने जाने के अधिकारी न हुए थे परन्तु तो भी जब कभी वे उस सभा में किसी विषय पर व्याख्यान देते तो लोग उनका बड़ा आदर और सम्मान करते थे। लोगों की दृष्टि में वे पड़ चुके थे और सब की निगाह उन्हीं की ओर लगी हुई थी।

---

*जिस राज्य का काम ऐसी एक सभा के द्वारा होता है जिस सभा का मुख्य उद्देश यह होता है कि हर विषय में प्रजा को फायदा पहुँचावे और उनको सुख और शान्ति दे उस राज्य को "रिपबलिकेन राज्य" कहते हैं और जो लोग मिल कर ऐसी सभा स्थापित करते हैं उन लोगों को "रिपबलिकेन पारटी" कहते हैं।"

दूसरे आदमी के प्रेसीडेण्ट चुने जाने के लिए ३४ वार सम्मतियाँ ली जाने की निष्फल चेष्टा के बाद ३५ वीं बार जब ५० मनुष्यों ने जेम्स ए० गारफ़ील्ड के नाम सम्मतियाँ दीं तब तुरन्त वहाँ का दृश्य परिवर्तन हो गया। जिस स्थान में सभा होती थी वह एक बहुत बड़ा कमरा था। उस कमरे में डेमाक्रेटिक और रिपबलिक के पार्टी के प्रायः ७०० मनुष्य उपस्थित थे। सभों ने गारफ़ील्ड का नाम सुनते ही अपने अपने झण्डे खड़े किये और एक तान में सुर मिला कर सबने यही कहा:—"आज से हमारे दो दलों का विच्छेद और विरोध दूर होगया। आज से हम दोनों दलों के लोग मित्र भाव से परस्पर व्यवहार करेंगे क्योंकि जनरल गारफ़ील्ड के राज्य में शत्रुभाव का रहना असम्भव है।" इन सात सौ प्रतिनिधियों को जेम्स गारफ़ील्ड के नाम उत्साह मनाते देख कर १५००० दर्शक जो उस कमरे में उपस्थित थे उन सबों ने उन्हीं ७०० मनुष्यों के स्वर में अपना स्वर मिलाया और गारफ़ील्ड पर पुष्पवृष्टि आरम्भ की। इन १५७०० मनुष्यों की आवाज़ कमरे की दीवारों से टकरा कर प्रतिध्वनित हुई और कमरा हर्षध्वनि और जयध्वनि से गूँज उठा। उस कमरे के बाहर एक फ़ौज खड़ी थी। फ़ौजी सिपाइयों ने भी उस आनन्द-कोलाहल के साथ अपना कण्ठस्वर मिलाया और सब मिलकर जयध्वनि करने लगे। वह दृश्य बड़ा ही मधुर, बड़ा ही गम्भीर और बड़ा ही मनोहर था। ऐसा मनोहर दृश्य

कभी किसी ने प्रेसीडेन्ट चुने जाते समय न देखा था और कदाचित् भविष्य में कभी देखेंगे—ऐसी सम्भावना भी न थी। यह सब उसी चेतनस्वरूप लीलामय भगवान् की कीर्ति है जो अमीर को ग़रीब और ग़रीब को अमीर बनाता है और जो हर एक देशवासियों को दुष्टों के अत्याचार से बचाने के लिए समय समय पर ऐसे मनुष्य उत्पन्न करता है जो सच्चे जी से देश की सेवा करते हैं और प्रजा का पालन करते करते अपना काम पूरा करते हैं! धन्य है प्रभु, तुम्हारी लीला तुम ही समझ सकते हो। मूढ़ मनुष्य भला क्या समझेगा।

इस धूम-धाम और आनन्द-कोलाहल के बीच में २ नवम्बर सन् १८८० ईसवी को जेम्स ए० गारफ़ील्ड युनाइटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट चुने गये। वे उक्त तारीख़ को उन्नति की सीढ़ा की सब से ऊँची चोटी पर पहुँच गये।

तेईसवाँ परिच्छेद



न् १८८१ ईसवी की ४ मार्च को जनरल गारफ़ील्ड को युनाईटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट की पदवी देने का महोत्सव हुआ। प्रातःकाल से दस बजे तक ख़ूब हवा चली और बदली भी थी। दस बजे के समय हवा बन्द हो गई। आज शहर में बड़ा कोलाहल था। दूर दूर से भी बहुत से मनुष्य इस महोत्सव को देखने के लिए उपस्थित हुए थे। गारफ़ील्ड के सहपाठियों की संख्या भी २० से कम न थी। गलियों में दस लाख मनुष्य जुटे थे। कैपिटोल नामक स्थान में महोत्सव होने वाला था। लोग ह्वाइट हाउस से साढ़े दस बजे बड़ी धूम-धाम के साथ प्रेसीडेंट हेईज़ और भावी प्रेसीडेंट गारफ़ील्ड समेत निकले। मार्ग के लोगों ने बहुत जयध्वनि की। सब समाज के लोग उपस्थित थे। गारफ़ील्ड की विधवा माता और गारफ़ील्ड की स्त्री भी उपस्थित थीं। मिस्टर गारफ़ील्ड ने बहुत मधुर और मन-भावन शब्दों में वक्तृता देकर लोगों के चित्त को मोहित कर लिया। व्याख्यान की समाप्ति पर बेट साहब जज ने शपथ करने के लिए उसे बाइबिल थमाई। गारफ़ील्ड ने बाइबिल को चूम कर बेट का हाथ फेर दिया। गारफ़ील्ड

की माता और स्त्री के आनन्द की सीमा न रही। महोत्सव समाप्त हुआ। गारफ़ील्ड ने प्रेसीडेण्ट का कार्य-भार अपने ऊपर ले लिया।

कार्य के आरम्भ में एक बखेड़ा देख पड़ा। किसी स्थान पर एक अफ्सर नियुक्त करने में नवीन प्रेसीडेण्ट ने प्रचलित रीति की उपेक्षा करके अपने मन से मनुष्य नियुक्त किया। इस कार्य से सेनेटर कंकलिङ्ग अप्रसन्न होकर गारफ़ील्ड का द्रोही हो गया। कुछ सम्भव नहीं कि इसी मनुष्य के बहकाने से चार्ल्स जे गिटो नामक मनुष्य ने अचानक प्रेसीडेंट पर गोली चला कर दूसरी जुलाई को उसे घायल किया हो। प्रेसीडेंट के सांघातिक चोट लगी। डाकृरों की सावधानता और चतुराई से १९ सितम्बर तक गारफ़ील्ड किसी तरह जीते रहे। इसी दिन रात में दस बज कर पैंतीस मिनट पर डाक्टर बिल्स को विदित हुआ कि युनाइटेड स्टेट्स का प्रेसीडेंट, अपनी विधवा माता का प्रिय पुत्र, प्रसिद्ध विद्यार्थी और राजकर्मचारी इस असार संसार से कूँच कर गया।

देश भर में हाहाकार मच गया।

॥ इति ॥



ted gastric cancer cases, have been detected, operated and
d more than 90% of five-year survival rate at this moment.
than 80% of them were correctly diagnosed radiologically

It is well known that the prognosis of stomach cancer is
enced not necessarily by the size of the lesion but by the
of cancerous invasion into the gastric wall at the time of
al operation. So that, the definition of "Early Gastric
" used in Japan is tumors limited to the mucosa and/or
osa regardless of extent.

Since 1962 in the National Cancer Center Hospital, Japan,
han 250 cases of "Early Gastric Cancer", about 20% of all
ed gastric cancer cases, have been detected, operated and
more than 90% of five-year survival rate at this moment.
han 80% of them were correctly diagnosed radiologically